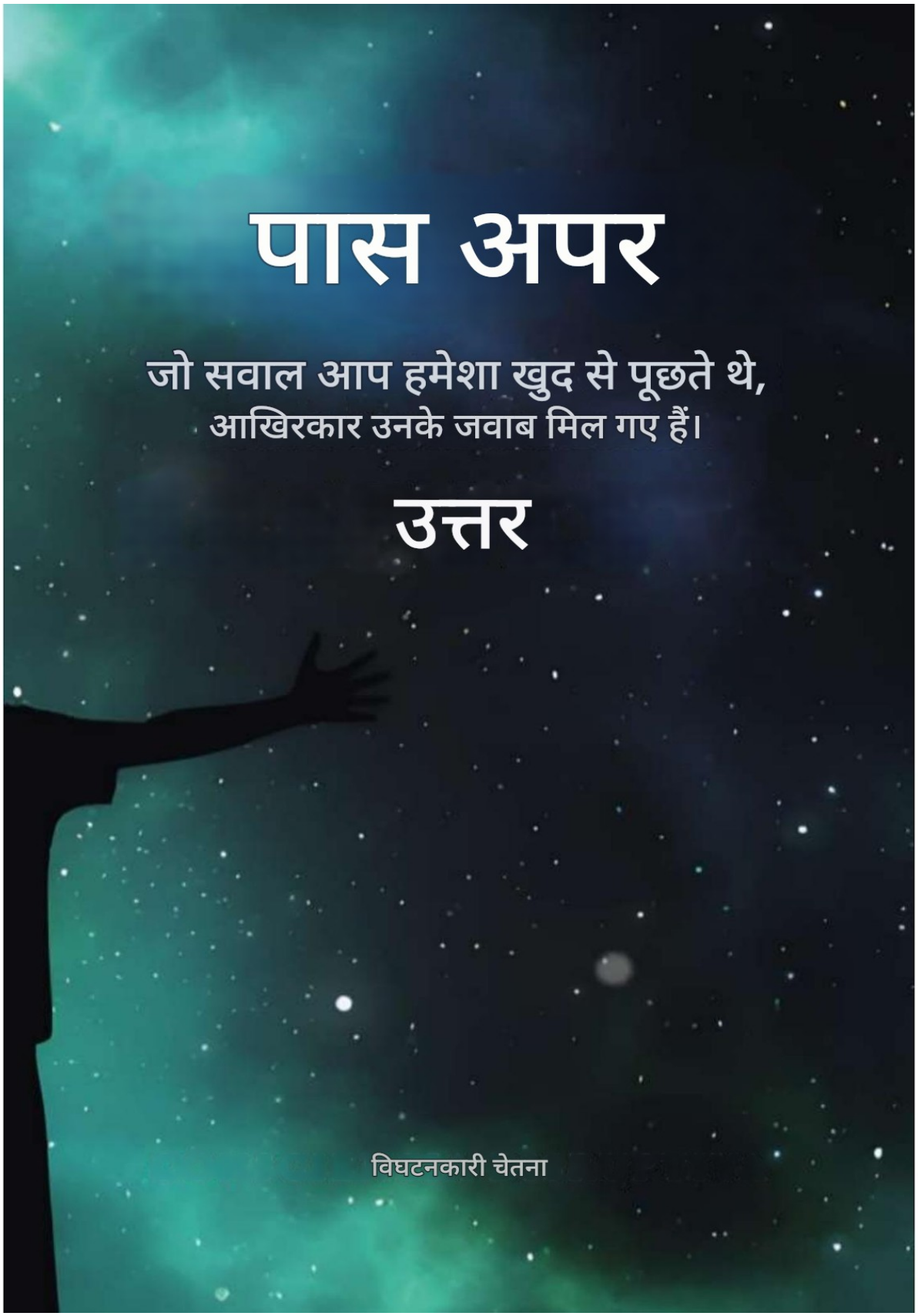
पास अपर
जो सवाल आप हमेशा खुद से पूछते थे,
आखिरकार उनके जवाब मिल गए हैं।
उत्तर
विघटनकारी चेतना

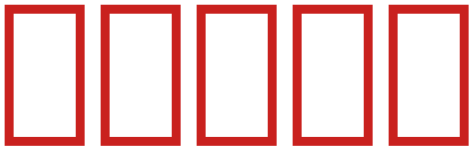

सेबेस्टियन सैंटिस्टेबन

2

सर्वाधिकार सुरक्षित।
प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना, और कानून द्वारा निर्धारित दंडों के तहत, इस कृति का किसी भी माध्यम या प्रक्रिया द्वारा, जिसमें फोटोकॉपी और कंप्यूटर प्रोसेसिंग शामिल है, आंशिक या पूर्ण रूप से पुनरुत्पादन करना, और किराये या सार्वजनिक उधार के माध्यम से इसकी प्रतियां वितरित करना सख्त वर्जित है।

3

□□□□□□□□□□□□
□□□□
□□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□?
□□□□□
ATNUGERP 1
□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□? □□ □□□□ □□?
□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□?
ATNUGERP 2
□□ "□ □□□" □□□□□ □□□?
□□□□□□”?
ATNUGERP 3
□□□□ □□□□□ □□□□ □□
estrella?

4

ATNUGERP 4
□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□
□□□□□□□?
ATNUGERP 5
□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□?
□□□?
ATNUGERP 6
□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□?
□□□□□?
ATNUGERP 7
□□ □□□□□□□ □□ □□□
□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□□□□□□□? □□□□□?
□□?
ATNUGERP 8

क्या पृथ्वी पर बुद्धिमान जीवन मौजूद है? अन्य ग्रह?
5

ATNUGERP 9
समय क्या है? क्या वे
क्या समय यात्रा संभव है?
ATNUGERP 10
इसके बजाय कुछ और क्यों है? कुछ नहीं?
ATNUGERP 11
एक कहानी पर मेरी राय
ऐतिहासिक: बाइबिल
ATNUGERP 12
क्या कोई एक सर्वोच्च सत्ता है? ATNUGERP 13
सब कुछ इस तरह से किया जाता है कि...
उत्तम: नियति या
मौका?

6

एटीएनयूजीईआरपी 14
आयाम क्या होते हैं?
इन्हें किसने बनाया और इनकी संख्या कितनी है? क्या वे मौजूद हैं?
ATNUGERP 15
हमारा एक हिस्सा क्यों है?
मस्तिष्क को इस नाम से जाना जाता है “सरीसृप”? क्या हम सरीसृप हैं?

ATNUGERP 16
□□□□ □□ □□□□ □□□□□?
□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□□?
ATNUGERP 17
□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□?
□□□□□□?
Fuentes

आभार
इस किताब को संभव बनाने में कई लोगों का योगदान रहा, लेकिन मैं अपनी माँ का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ। वो हमेशा मेरे साथ थीं, मेरी हर बात सुनती थीं, ज़रूरत पड़ने पर इसे बार-बार पढ़ती थीं, मेरी गलतियों को सुधारती थीं और मुझे प्रोत्साहित करती थीं। मैं झूठ नहीं बोलना चाहती और ये नहीं कहूँगी कि उनके बिना मैं इसे लिख नहीं पाती, लेकिन उनके बिना ये किताब वैसी नहीं होती जैसी आज है।
मैं अपने पिता को धन्यवाद देना चाहता हूँ, भले ही उन्हें यहाँ लिखे गए अधिकांश प्रश्नों और उत्तरों के बारे में बिल्कुल भी जानकारी न हो। जब मुझे सबसे कम ज़रूरत होती है, लेकिन मुझे सबसे ज़्यादा अच्छा लगता है, तब भी वे हमेशा मुझे गले लगाने के लिए मौजूद रहते हैं और मेरे हर काम में मेरा साथ देते हैं।
मैं अपने भाई को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिनसे मेरी सबसे बड़ी लड़ाइयाँ होती हैं और सबसे बड़ी सुलह भी। वही हैं जो जानते हैं कि कब चुप रहना है और सुनना है, जब मुझे बस उसी की ज़रूरत होती है। जब मैंने उन्हें इस किताब को लिखने के विचार के बारे में बताया, तब से ही उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया।
8

मेरे पास कृतज्ञता और प्रेम के अलावा और कोई शब्द नहीं हैं; ये तीनों लोग ही अब तक मेरे जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करने वाले रहे हैं।
मैं अपनी दादी को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिनके साथ मैंने पुस्तक में उठाए गए सवालों पर चर्चा करते हुए कई घंटे बिताए, और उन्हीं से मुझे उन लंबी बातचीत को कागज पर उतारने की प्रेरणा मिली। धन्यवाद।
जीवन में जिन लोगों से भी मेरा सामना हुआ है, उन सभी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ, क्योंकि चाहे अच्छे के लिए हो या बुरे के लिए, उन्होंने मुझ पर प्रभाव डाला है और मैं आज जो हूँ, वह उन्हीं की देन है। मैं अतीत नहीं हूँ, क्योंकि मैं वहाँ नहीं रहता, लेकिन मैं वर्तमान की उन घटनाओं का निरंतर

सिलसिला हूँ जो अब मेरे पीछे छूट चुकी हैं, जो अब यहाँ नहीं हैं, लेकिन मेरी चेतना का हिस्सा थीं और रहेंगी। मेरे शिक्षक, प्रोफेसर, पुराने दोस्त, पूर्व प्रेमिकाएँ और आज भी मेरे करीबी दोस्त, सभी ने मुझे आज का इंसान बनाया है।
ब्रह्मांड ने मुझे जो कुछ भी भेजा है, मेरे जीवन में जो कुछ भी प्रकट हुआ है, चाहे वह किसी भी रूप में हो, उसके लिए धन्यवाद।

9

लेखक के बारे में
यह सब तब शुरू हुआ जब मैं लगभग 4 साल का था।
मैं पाँच साल का था। मुझे उन सालों में मैंने क्या किया या क्या हुआ, इसकी ज़्यादा याद नहीं है (जैसा कि यकीनन कई लोगों के साथ होता है), लेकिन एक बात मैं कभी नहीं भूला। मुझे दिन याद नहीं, लेकिन इतना ज़रूर याद है कि रात का समय था। मैं अपने माता-पिता के साथ एक छोटे से घर में रहता था, इसलिए सब कुछ एक-दूसरे से जुड़ा हुआ था: रसोई, शयनकक्ष, बैठक - सब कुछ बहुत पास-पास था, और इन सबको जोड़ने वाला एक गलियारा था, जो ज़्यादातर समय अँधेरा रहता था। उस रात, मेरी माँ खाना बना रही थीं, मेरे पिताजी चूल्हा जला रहे थे, और मैं बैठक में खेल रहा था, जहाँ एक बड़ी अलमारी थी, वैसी अलमारी जिसमें गिलास, सजावटी सामान, पौधे वगैरह रखे जाते थे। इस अलमारी के बीच में काफ़ी जगह थी, एक छोटे से टीवी के लिए काफ़ी। अलमारी का मुँह घर के प्रवेश द्वार से दूर था; बस इतना कह लें कि जगह ठीक नहीं थी, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, वहाँ ज़्यादा जगह नहीं थी। अगर हम रसोई में होते, तो अलमारी में बने छेद से प्रवेश द्वार दिखाई देता, और दाईं ओर अंधेरा गलियारा दिखाई देता। मुझे बहुत अच्छा लग रहा था।

मैं अलमारी के सामने खड़ा था, छेद के पास खेल रहा था। मुझे नहीं पता क्यों, कैसे, या वजह भी क्या थी, लेकिन अचानक मैंने अपना सिर घुमाकर गलियारे की ओर देखा, जो पूरी तरह से अंधेरा था, तभी अचानक मुझे एक "परछाई" दिखाई दी, जैसे कोई आकृति मेरी ओर आ रही हो। यह बस एक पल के लिए था; मेरा मतलब है, सबसे समझदारी वाली बात तो शायद भागना ही होती, लेकिन मैं आपको बता नहीं सकता कि मैं क्यों नहीं भागा। परछाई अलमारी के छेद के पास आई और उसने अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दिया।
मुझे याद है कि उसने उसे सिर्फ एक सेकंड के लिए पकड़ा था। कुछ ही देर बाद मैं शांति से अपनी माँ की तरफ चल पड़ा (वह 2 साल की थी)। जब से मैं रसोई में थी, तब से वह मेरे आस-पास कुछ मीटर की दूरी पर थी।

मेरी माँ के अपने बयान और उनकी याददाश्त के अनुसार, जब मैंने उन्हें घटना के बारे में बताया, तो वे न तो डरीं और न ही परेशान हुईं; उन्हें बस समझ नहीं आया कि क्या हुआ था। मेरी माँ कहती हैं कि मैंने कुछ ऐसा कहा था, "माँ, गलियारे में कोई है।" शोर के बाद, मेरे पिताजी ने भी सुना और वे तुरंत देखने गए कि वहाँ कुछ है या नहीं। वहाँ कुछ नहीं था। उन्होंने कमरे भी जाँचे क्योंकि मैंने बिना किसी संदेह के बताया था कि मेरे साथ क्या हुआ था। कुछ नहीं मिला। शायद इस घटना में मेरी बेगुनाही और डर के मारे प्रतिक्रिया न देने का कारण बस इतना था कि उस उम्र में, 11

हम पूरी तरह निर्दोष हैं और हमें वही पता है जो हमें बताया गया है, और किसी ने भी मुझसे कभी अलौकिक चीजों के बारे में बात नहीं की थी।
उस घटना के बाद, मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ, लेकिन इस बार मैंने कुछ नहीं देखा। मैं अपने कमरे में (जो मैं अपने माता-पिता के साथ साझा करता था) एक खिलौना ढूंढने गया। अपने बिस्तर के नीचे देखते समय, मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरा हाथ फिर से पकड़ लिया हो। इस मामले में, मुझे कुछ दिखाई नहीं देता, मैं सिर्फ महसूस करती हूँ। यहाँ, मैं भागकर अपनी माँ के पास चली जाती हूँ।
उसके बाद मेरे साथ ऐसा कुछ दोबारा कभी नहीं हुआ। आजकल मैं स्पष्टीकरण नहीं ढूंढता क्योंकि मुझे नहीं लगता कि मुझे उनकी जरूरत है।
हालांकि मैं उन्हें पाना चाहती थी, लेकिन यह ऐसी चीज नहीं है जिसके साथ मैं जी नहीं सकती। मैंने इसे स्वीकार करने का फैसला किया है, और अगर वास्तव में यही हुआ है, तो मुझे खुशी है कि ऐसा हुआ और मैं इसके बारे में बात कर सकती हूं।
अलौकिक घटनाओं को एक तरफ रखते हुए, मैं आपको कुछ ऐसा बताना चाहता हूं जिसने दूसरे ग्रह के प्राणियों में मेरे विश्वास को मजबूत किया, या कम से कम, हमारे ग्रह से परे जीवन के प्रति मेरे आकर्षण की शुरुआत की।
मैं एक बहुत छोटे कस्बे में रहता हूँ जहाँ हर सप्ताहांत 12 वीं स्ट्रीट पर टहलने जाना एक आम बात है।

शहर। जब मैं लगभग 9 या 10 साल का था, तब यह घटना घटी। हमेशा की तरह, मैं और मेरे माता-पिता सैर पर निकले और गलियों को देखा (इस बार हम कार से गए थे)। एक रविवार दोपहर, ऐसी ही एक सैर के दौरान, मेरी माँ या मैंने (मुझे ठीक से याद नहीं है) आकाश में कुछ अजीब सा देखा। वह वस्तु चल रही थी, और हालाँकि उसकी गति बहुत तेज़ नहीं थी, फिर भी वह तेज़ी से चल रही थी। मेरे पिता, जो गाड़ी चला रहे थे, तुरंत उत्सुक हो गए, और हालाँकि वे उसे ठीक से नहीं देख पा रहे थे क्योंकि वह सड़क के दाहिनी ओर से दिखाई दे रही थी, उन्होंने उसका पीछा करने का फैसला किया। सौभाग्य से, शहर की मुख्य सड़क पर सीधे गाड़ी चलाने से वह वस्तु हमारी नज़र में बनी रही। जिस क्षण हमने उसे देखा, हम लगभग सात ब्लॉक या उससे अधिक (लगभग 700 मीटर) तक उसका पीछा करते रहे जब तक कि वह एक बिंदु पर रुक नहीं गई।
इस बिंदु पर, हम सभी को पूरा यकीन हो गया था कि यह न तो हवाई जहाज था और न ही उपग्रह; यह बस एक यूएफओ था, जैसा कि इसके संक्षिप्त नाम से ही स्पष्ट है।
हम भी रुक गए। वह वस्तु कुछ मिनटों तक स्थिर रही, फिर अचानक उसने एक मोड़ लिया (मैं उसके मुड़ने का ठीक-ठीक वर्णन नहीं कर सकता) और पूरी तरह से गायब हो गई। मानो वह 13

यह उसे न जाने कहाँ और न जाने कैसे की ओर धकेल देता।
यह एक चौंकाने वाली घटना थी जिसने मुझे यूएफओ की घटना में पहले से कहीं अधिक रुचि पैदा कर दी, और मुझे लगता है कि बचपन में मेरे साथ घटी दोनों घटनाओं ने किसी भी संबंधित विषय के बारे में मेरी जिज्ञासा को बहुत प्रभावित किया।
मैंने अपने जीवन के बाद के वर्षों में कई यूएफओ दर्शन देखे हैं, जिनमें से प्रत्येक पिछले वाले से अधिक आश्चर्यजनक था।
मैं शायद पहली दो कहानियों को अधिक महत्व देता हूं क्योंकि, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, उन्होंने प्रत्येक घटना के

संबंध में मेरे विचारों में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया है, क्योंकि बहुत कम उम्र से इसे देखने के कारण, मुझे लगता है कि इसने मेरे दिमाग को पूरी तरह से खोल दिया है।

14

मैंने यह क्यों लिखा?
किताब?
मैं हमेशा से ही हर बात के बारे में जानने की उत्सुकता रखने वाला व्यक्ति रहा हूँ। यह एक ज़रूरत जैसा लगता है, लेकिन असल में यह सिर्फ़ जिज्ञासा है, और अधिक जानने की इच्छा है, सब कुछ जानने की नहीं। बस सीखने की इच्छा।
चूंकि मैं जानता हूं कि इस पुस्तक में रुचि रखने वाले लोग जिज्ञासु भी हैं, इसलिए मैं एक ऐसी पुस्तक लिखना चाहता था जिसे मैं बहुत पहले पढ़ना चाहता था। एक ठोस पुस्तक, लेकिन ऐसी पुस्तक जो संदेह की गुंजाइश भी छोड़ती है, जो मुझे सोचने पर मजबूर करती है और (इसमें दी गई जानकारी के आधार पर) मुझे अपने "उत्तर" तक पहुंचने में सक्षम बनाती है।
मैं आपको कोई एक कारण नहीं बता सकता कि मैंने यह किताब क्यों लिखी। कई घटनाएं (मेरी और दूसरों की), वृत्तचित्र, वीडियो, ब्लॉग, फिल्में, मेरे जीवन के और उससे बाहर के लोग, किताबें और कुछ अन्य चीजें मुझ पर प्रभाव डालती हैं और इसे लिखने की मेरी प्रेरणा का हिस्सा हैं।

15

परिचय
अपनी डेस्क पर बैठे हुए, कॉफी की चुस्की लेते हुए, मेरी उंगलियां मेरे विचारों के साथ ताल मिलाती हुई चल रही थीं, तभी मैं एक पल के लिए रुका और मेरे दिमाग में चल रही तमाम बातों में से, मुझे एक बात समझ में आई: मैं क्या कर रहा हूँ? मैं कौन हूँ? मुझे एहसास है कि मैं इन दोनों सवालों के जवाब दे सकता हूँ; पहली नज़र में ये इतने मुश्किल नहीं लगते: मैं अपनी डेस्क पर बैठकर, कंप्यूटर को घूरते हुए, खाली पन्ने पर अक्षरों को उभरते हुए देखकर, PDF फॉर्मेट में एक किताब लिख रहा हूँ; हाँ, मैं यही करता हूँ। और मैं कौन हूँ? मैं 21 साल का लड़का हूँ, काले बालों वाला, औसत कद-काठी और वज़न का, एक उद्यमी, और भी बहुत कुछ। लेकिन अंत में इनके जवाब देना इतना मुश्किल नहीं था।
या फिर ऐसा हो सकता है कि वे जवाब सही न हों?
मुझे वास्तव में कैसे पता चलेगा कि मैं क्या कर रहा हूँ? मेरा मतलब है, मैंने आपको पहले जो बताया वह ठीक है, लेकिन वह बहुत ही सामान्य है। व्यक्तिगत और भौतिक स्तर पर, मैं शायद बस वही कर रहा हूँ, लेकिन अगर हम लाखों परमाणुओं और अणुओं से बने हैं, जिनका अपना जीवन है, और वे मेरे ही हिस्से हैं, तो उन 16 का क्या?

क्या मुझे उन्हें अपने काम में शामिल करना चाहिए? क्या मुझे उन्हें तब भी शामिल करना चाहिए जब लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं कौन हूँ?
मैं विषयांतर नहीं करना चाहता, हालांकि इस किताब में आप जो आखिरी चीज हासिल करेंगे वह एक ही जगह पर टिके रहना होगा।
मैं आपको अपने शोध के साथ-साथ अग्रणी शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के शोध से प्राप्त उत्तर देना चाहता हूँ, लेकिन आपको यहाँ पूर्ण सत्य नहीं मिलेगा। यह ऐसी पुस्तक नहीं है जो आपको सब कुछ स्पष्ट रूप से समझा देगी, लेकिन इसे पढ़ने के बाद आपको कुछ भी समझ नहीं आएगा, फिर भी आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपके पास ऐसी जानकारी है जो किसी और के पास नहीं है, कि आप ऐसी बातें जानते हैं जो हर कोई नहीं जानता।

मैं पाठक से यह अपेक्षा नहीं करता कि वह समझ जाए; वास्तव में, उन्हें समझने की कोशिश ही नहीं करनी चाहिए। मैं चाहता हूँ कि पाठक प्रश्न पूछने, खोज करने और शब्दों, विश्वासों, जिज्ञासाओं, शोध, छवियों और वाक्यांशों के परस्पर मेलजोल के माध्यम से हमारे चारों ओर मौजूद हर चीज़ से परे की चीज़ों को खोजने का आनंद लें; या यह महसूस करें कि वास्तव में क्या अस्तित्व है।

17

ATNUGERP 1
हम यहाँ क्या कर रहे हैं? जीवित रहने का उद्देश्य क्या है?

मैंने इन दोनों सवालों को एक साथ रखने का फैसला किया।
क्योंकि मेरा मानना है कि वे मूल रूप से एक ही विषय से संबंधित हैं: हम इस दुनिया में क्यों आए और जीवित रहने का क्या कारण है। मेरा मानना है कि खुद से यह पूछना कि हम इस दुनिया में क्या कर रहे हैं, और चूंकि हम यहां हैं, तो हमारा उद्देश्य क्या है, ये कुछ सबसे शक्तिशाली प्रश्न हैं जो हम खुद से पूछ सकते हैं। अगर हम सचमुच, गहराई से, खुद से यह पूछें कि हमारा उद्देश्य क्या है, तो निश्चित रूप से हम अपने शरीर में इसका स्पंदन महसूस करेंगे। चूंकि मेरा मानना है कि "हम यहां क्या कर रहे हैं?" प्रश्न का उत्तर इस अध्याय में अधिक शीघ्रता से दिया जा सकता है (जैसे- जैसे आप इस पुस्तक में दिए गए प्रश्नों में गहराई से उतरेंगे, आपको एहसास होगा कि आप अपना स्वयं का उत्तर दे सकते हैं), इसलिए मैं इसी से शुरुआत करूंगा।
हम इसे तीन भागों में विभाजित करेंगे: पहला, हम इस बात पर विचार करेंगे कि हम यहाँ किसी कारण से हैं (मानवीय स्तर पर), दूसरा, हम इस 18 वें बिंदु पर चर्चा करेंगे।

सवाल व्यक्तिगत स्तर पर है, यानी यहाँ हर व्यक्ति क्या कर रहा है? तीसरा, हम यह प्रस्ताव रखेंगे कि यहाँ रहने का कोई कारण नहीं है और हम इसका जवाब भी देंगे (समुदाय के रूप में और व्यक्तिगत रूप से भी)।
(जब मैं "यहाँ" शब्द का प्रयोग करता हूँ, तो मेरा तात्पर्य किसी स्थान से नहीं है, यह केवल शब्दों को इस तरह से व्यवस्थित करने का एक तरीका है ताकि बाद के अनुच्छेदों को समझा जा सके।)
1) हम यहाँ किसी कारण से हैं (मानवता के स्तर पर)
क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है कि ब्रह्मांड में वैश्विक स्तर पर हम सभी की क्या भूमिका है? या, कहें तो, हम पृथ्वी पर क्या कर रहे हैं?
यहां अरबों परमाणु क्या कर रहे हैं?

क्या वे चीजें खरीदते हैं? प्रजनन करते हैं? खाते हैं? वे क्या करते हैं?
इससे पहले कि मैं इन सभी सवालों के जवाब दूं और आप किताब पढ़ना जारी रखें, मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि हम किसी भी सवाल का जवाब विशुद्ध रूप से सांसारिक दृष्टिकोण से नहीं देंगे; यह तो उबाऊ होगा। ज़रा सोचिए: अगर हम चाहें तो इन सवालों का जवाब सीधे "हां" में दे सकते हैं, क्योंकि यही तो हम करते हैं (हम चीजें खरीदते हैं, प्रजनन करते हैं, खाते हैं, आदि)।

(आदि) लेकिन हम जानते हैं कि इन सबसे परे भी कुछ है, या कम से कम हम यही मानना चाहते हैं।
हमारा एक हिस्सा (हमारा अहंकार) यही मानना चाहता है; हम अपने होने का, अपने अस्तित्व का कोई कारण जानना चाहते हैं; हम यहाँ किसी उद्देश्य के लिए मौजूद होना चाहते हैं (और अगर वह उद्देश्य वीरतापूर्ण हो, तो और भी अच्छा)। हम यह जानना नहीं चाहेंगे कि इस विशाल ब्रह्मांड में हमारा कोई महत्व नहीं है, कि "हमारी पृथ्वी" पर हमारी कोई भूमिका नहीं है। आखिर हम ही तो मानव जाति हैं, हम महत्वहीन कैसे हो सकते हैं? इसके अलावा, हमारे पास एक ग्रह है (जिससे हम प्रेम करते हैं, उसकी देखभाल करते हैं और उसकी रक्षा करते हैं)।
अगर हम सब मिलकर काम करें तो हम महान कार्य कर सकते हैं। मैं इस बात से सहमत हूँ, लेकिन क्या मानवता ने कभी सचमुच मिलकर कुछ हासिल किया है?
मेरा मानना है कि अगर हम एक समुदाय के रूप में यहाँ मौजूद हैं, तो उसका उद्देश्य एक ही स्तर की चेतना प्राप्त करना है। यह एक जैसी सोच या एक समान होने की बात नहीं है; यह एक ही स्तर की जागरूकता रखने की बात है।
चेतना से मेरा तात्पर्य उस क्षमता से है जिसे हममें से प्रत्येक शांति, वर्तमान में रहने और एक निश्चित स्तर की "बुद्धिमत्ता" प्राप्त करने के लिए हासिल कर सकता है।
20

इससे हमें यह एहसास होता है कि ऐसी कोई सीमा, कोई भाषा, कोई धर्म, कोई राजनीतिक सिद्धांत नहीं है जो हमें अलग कर सके।
अगर यहां आने का कोई कारण है, तो वह एकता के एक नए स्तर को प्राप्त करना है।
इसका उपयोग किस लिए किया जाएगा?
मैं आपको इन सवालों के जवाब देता हूँ: युद्ध क्यों होते हैं? दुनिया भर में दूसरे पक्ष को स्वीकार क्यों नहीं किया जाता?
2) हम यहाँ किसी कारण से हैं (व्यक्तिगत स्तर पर)
पहले मामले की तरह ही, हमारा अहंकार इसके लिए एक कारण ढूंढने का जिम्मा खुद पर ले लेता है। क्या हम यहाँ हजारों-हजारों लोगों की मदद करने आए हैं? क्या हम दुनिया को बदलने आए हैं? यह जवाब देगा हाँ, क्योंकि अगर मैं इतना बड़ा काम नहीं करूँगा, तो मैं कौन कहलाऊँगा?
हमारा अहंकार भुलाया जाना नहीं चाहता; वह इसके बिल्कुल विपरीत चाहता है: कि उसे उसके द्वारा किए गए कार्यों और कहे गए शब्दों के लिए, उस विरासत के लिए याद किया जाए जिसे वह पीछे छोड़ने में सक्षम था।
क्या यह गलत है?
21

मेरी मान्यता के अनुसार, अच्छाई और बुराई पर सवाल प्रत्येक व्यक्ति के विवेक के आधार पर उठाया जाना चाहिए।
इसलिए व्यक्तिगत स्तर पर, प्रत्येक व्यक्ति के पास अस्तित्व का एक कारण हो सकता है, एक ऐसा कारण जो उन्हें हर सुबह अपने सपनों, लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

22

3) यहाँ रहने का कोई कारण नहीं है। मुझे लगता है कि कुछ लोगों के लिए यह निराशाजनक होगा, मतलब, इतने सारे लोगों की मदद करना व्यर्थ ही?
तो फिर दुनिया को बदलने का क्या फायदा?
अगर कोई ऐसा कारण नहीं है जिसकी वजह से हम सभी इस ग्रह पृथ्वी पर मौजूद हैं,
इसमें गलत क्या होगा?
अगर कोई एक चीज है जो हम सभी को करनी आती है (हालांकि बहुत अच्छी तरह से नहीं), तो वह है जीना (सोना, खाना, प्रजनन करना), हमारे पास बुनियादी चीजें तो हैं ही।
क्या इसके अलावा बाकी सब कुछ जरूरी है?
यदि हम बुनियादी जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करें, तो किसी को भी मेरे द्वारा उल्लिखित चीजों से अधिक की आवश्यकता नहीं होगी। इसलिए, शायद इस ग्रह पर हमारे होने का कोई कारण नहीं है, न ही ब्रह्मांड का हिस्सा होने का। अंततः, अनंत आयामों वाले इस ब्रह्मांड में मानव रूप में लाखों परमाणु क्या कर सकते हैं?

23

ATNUGERP 2
हम "मानव जाति" क्यों हैं?

हमारी प्रजाति को वर्तमान में होमो सेपियन्स कहा जाता है, जिसका अर्थ हम जानते हैं
“बुद्धिमान पुरुष।” यह शब्द अपने आप में अर्थहीन और लैंगिक भेदभाव से भरा हुआ है, क्योंकि पृथ्वी के सभी निवासी पुरुष नहीं हैं, लेकिन यह एक अलग विषय होगा।
जीव विज्ञान में, "नस्ल" का उपयोग समान आनुवंशिक विशेषताओं वाले समूहों को परिभाषित करने के लिए किया जाता है, इसलिए जैविक दृष्टिकोण से यह शब्द अच्छी तरह से परिभाषित है, हालांकि कुछ मानवविज्ञानी तर्क देते हैं कि मानव प्रजाति केवल एक ही नस्ल से बनी है, जो कई जातीयताओं (समान सांस्कृतिक प्रथाओं और सामाजिक व्यवहार वाले लोग) में विभाजित है और ये बदले में लोगों में विभाजित हैं।
मेरे दृष्टिकोण से, यह सब केवल "बेहतर संवाद" करने में हमारी मदद करने के लिए की गई बातें हैं।
लेकिन अगर हम इस सवाल का जवाब जानना चाहते हैं कि हम मानव जाति क्यों हैं, तो हमें... 24

सरल शब्दों और परिभाषाओं से परे जाना, भले ही ये हमें किसी परिणाम की ओर मार्गदर्शन करते हों।
हमें खुद को ऐसा क्यों कहना पड़ता है? हमें खुद को किससे या किस चीज से अलग दिखाना है?
भौतिक स्तर पर, नस्ल के बजाय जातीयता शब्द का प्रयोग मनुष्यों को विभिन्न विशेषताओं (चाहे सांस्कृतिक हों या जैविक) के आधार पर वर्गीकृत करने के लिए किया जा रहा है ताकि नस्लवाद को समाप्त किया जा सके। लेकिन सार्वभौमिक स्तर पर? हमें खुद को किससे अलग करने की आवश्यकता है?
जब मैं कहता हूं कि ये सिर्फ "बेहतर संवाद" करने में हमारी मदद करने वाले शब्द हैं, तो मेरा यही मतलब होता है। ये ऐसे शब्द हैं

जिन्हें इंसानों ने बनाया है, उन लोगों ने जिनमें तर्क करने की क्षमता है, बिल्कुल आप और मेरे जैसे।
हमें इस पर विश्वास क्यों करना चाहिए?
यदि हमें खुद को "बुद्धिमान पुरुषों की मानव जाति" कहना पड़ता है, तो क्या इसका कारण यह है कि ब्रह्मांड में अन्य प्रकार के बुद्धिमान प्राणी भी मौजूद हैं?
जिस तरह से यह मामला सामने रखा गया है, इस सरल प्रश्न के साथ हमारे पास हाँ कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा, और हाँ कहकर, केवल "मनुष्यों" द्वारा गढ़े गए एक शब्द से ही निष्कर्ष निकालकर, हम विभिन्न प्रकार की नस्लों के अस्तित्व की पुष्टि करेंगे।

बाह्य अंतरिक्ष के प्राणी, क्योंकि अन्यथा हमें इस शब्द का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं होती।
"मानव जाति"।
तो हम मानव जाति क्यों हैं?
मेरे विचार से, और पाठकों को अपना निर्णय स्वयं लेने की छूट देते हुए, हम मानव जाति इसलिए हैं क्योंकि (अज्ञात कारणों से) वैश्विक स्तर पर खुद को एक नाम देना आवश्यक था। उन्होंने "नस्ल" शब्द चुना, और चूंकि इस पर कभी किसी ने सवाल नहीं उठाया (आखिर क्यों उठाएगा?), इसलिए आज भी इसी शब्द का प्रयोग होता है।
जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की नस्लें या जातीयताएँ मौजूद हैं (शब्द बदलें और परिभाषा बदलें, लेकिन हम में से प्रत्येक जानता है कि कोई भी व्यक्ति दूसरे के समान नहीं है, चाहे उसकी "नस्ल" या "जातीयता" कुछ भी हो)।
आगे बढ़ने से पहले, इस अध्याय के माध्यम से मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि किसी भी बात को समझने के लिए, आपको हर चीज़ पर सवाल उठाना होगा, आपको हर चीज़ को यथासंभव अनेक दृष्टिकोणों से देखना होगा, यहाँ तक कि सबसे स्पष्ट और अस्पष्ट बातों पर भी सवाल उठाना होगा। हममें से प्रत्येक के पास यह क्षमता है।

ATNUGERP 3
क्या सूर्य महज़ एक तारा है?
मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझसे यह सवाल पूछा जाएगा। कुछ समय पहले तक, मैं पूरे यकीन से कहता था कि सूरज सिर्फ एक तारा है, उसमें कुछ भी असामान्य नहीं है। नासा ने हमेशा हमें वही दिखाया है जो हम देखना चाहते हैं, और सूरज भी इसका अपवाद नहीं है।
क्या सूर्य केवल आग का वह विशाल गोला है जो हर दिन चमकता है और हमारे जीवित रहने के लिए आवश्यक है?
इस समय सबसे सही यही होगा कि आप हां न कहें।
वेबसाइट www.helioviewer.org की बदौलत हम वर्तमान और अतीत में सूर्य का अवलोकन कर सकते हैं।
यह वेबसाइट (जिसे देखने के लिए मैं आपको आमंत्रित करता हूं) सोलर डायनेमिक्स ऑब्जर्वेटरी के इमेज रिकॉर्ड के आधार पर सूर्य का अवलोकन करने का एक ऑनलाइन उपकरण है।
इससे हमें सूर्य की स्थिति को मिनट-दर-मिनट तक मॉनिटर करने की सुविधा मिलती है।
27

यह छवि जो आप अभी देख रहे हैं, वह यूट्यूब चैनल वेरदाद ओकुल्टा के नाचो रोजो द्वारा 23 तारीख को उक्त उपकरण में पाई गई एक वस्तु है।
जून 2019 में सुबह 10:10 बजे, "हमारे सौर मंडल में विशाल विसंगति" शीर्षक वाले वीडियो में, वह सूर्य में देखी गई इस अजीब वस्तु के बारे में विस्तार से सिखाते और समझाते हैं।
वह वस्तु लगभग 8 मिनट तक वहां रही और फिर गायब हो गई।
वस्तु के बगल में दिए गए चार्ट पर ध्यान दें; यह पृथ्वी का एक स्केल डायग्राम है…
इस तरह के और भी मामले हैं:
28

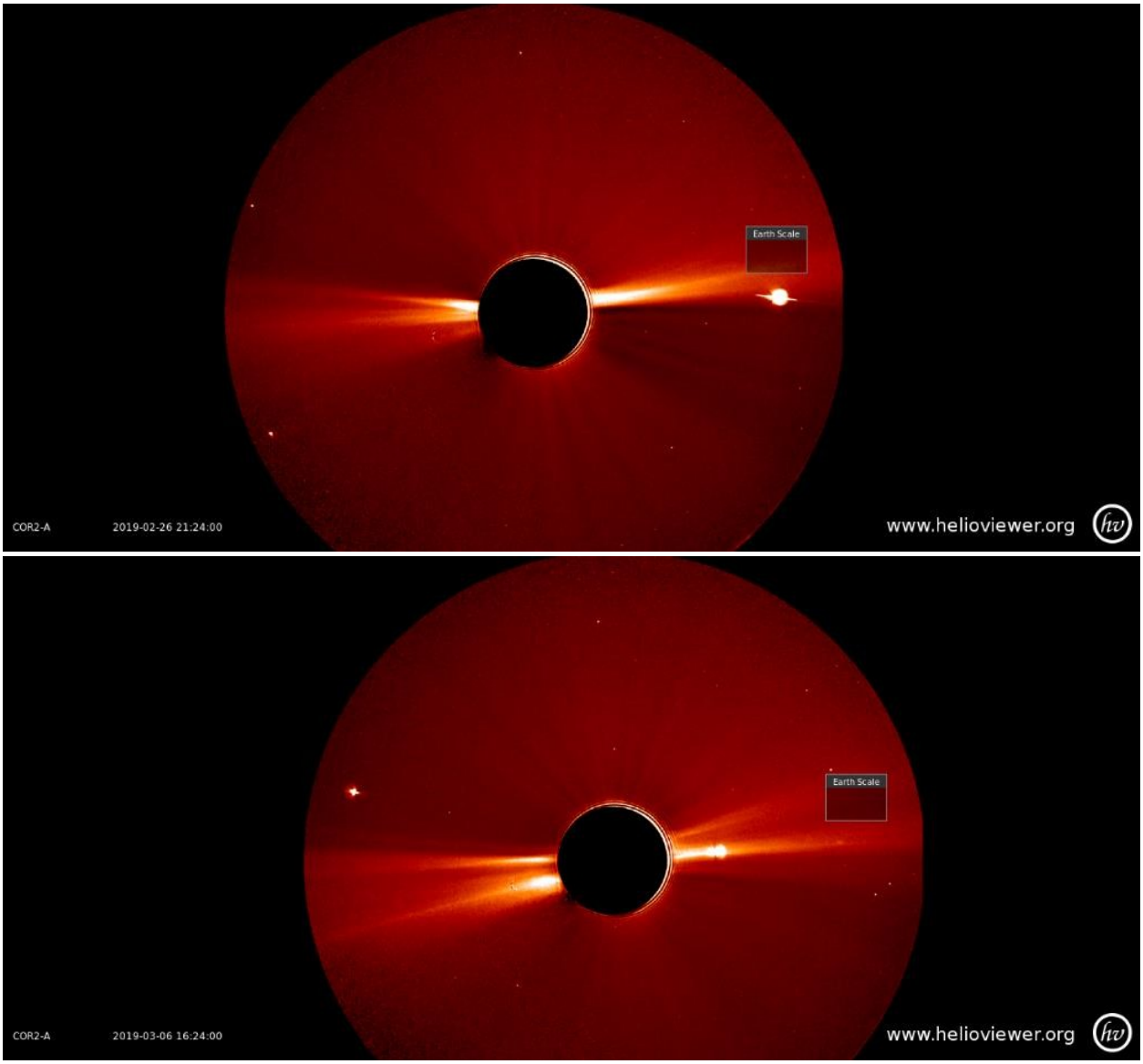
Earth Scale
COR2-A
2019-02-26 21:24:00
www.helioviewer.org
Earth Scale
COR2-A
2019-03-06 16:24:00
www.helioviewer.org

□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ (□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□) □□□□□ □□□□ □□□

29

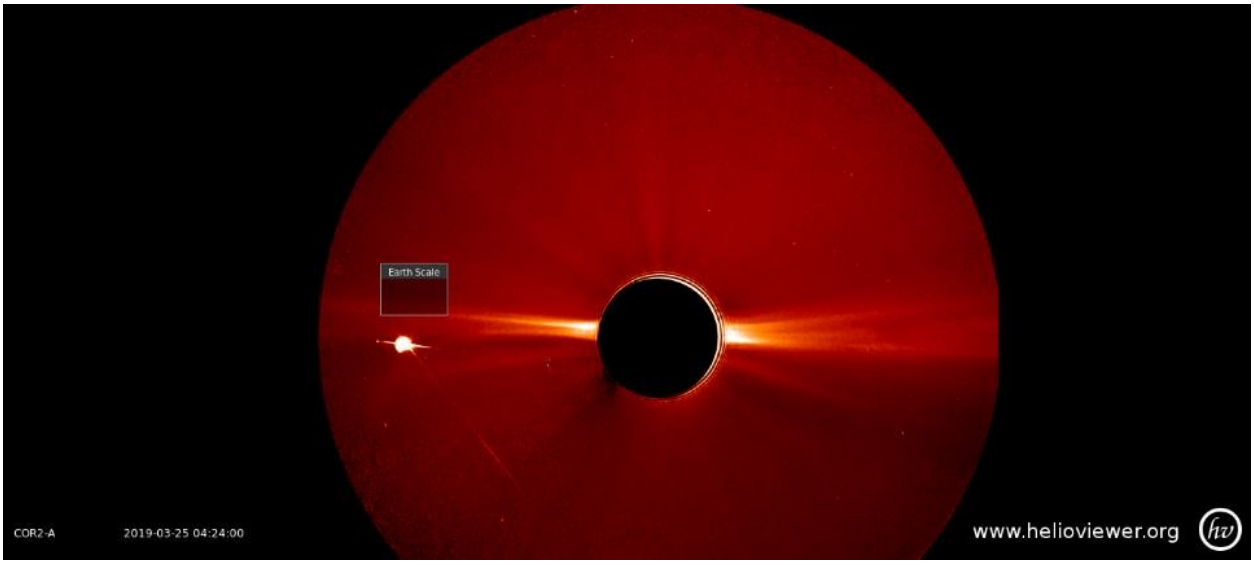

[illegible]

[illegible]

[illegible]
2019 [illegible]
[illegible]
30

[illegible]:
[illegible]

[illegible]

यह किसी भी बात को नकारने या उसकी पुष्टि करने के बारे में नहीं है; यह हममें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह देखने के बारे में है कि वास्तव में क्या मौजूद है।
विशेष रूप से, चित्र 1 में दिखाई देने वाली वस्तु का आकार 1980 के दशक की उड़न तश्तरी से बहुत मिलता-जुलता है। क्या यह बहुत ही विचित्र नहीं है?
हम इसके आकार पर प्रकाश डाल सकते हैं, जो कि, जैसा कि आपने इसके बगल में पृथ्वी ग्रह के पैमाने को देखकर भी देखा होगा, कई गुना बड़ा है।
क्या होगा अगर वह वस्तु वास्तव में एक विशालकाय अंतरिक्ष यान हो?
क्या यह लाखों अंतर-आकाशगंगा प्राणियों द्वारा संचालित है जिनकी बुद्धि हमारे सूर्य जैसे विशाल तारों की ऊर्जा पर निर्भर रहने वाले चलने-फिरने वाले ग्रहों का निर्माण करने में सक्षम है?
वास्तविकता या विज्ञान कथा?
31

विज्ञान कथा फिल्में दिन-ब-दिन अधिक वास्तविक होती जा रही हैं, जैसा कि कहावत है: "वास्तविकता कल्पना से कहीं आगे निकल जाती है"।
इसलिए, आज सबसे अच्छा यही होगा कि कोई बयानबाजी न की जाए और इसके बजाय नई खोजों का आनंद लिया जाए। केवल वही लोग पीड़ित होंगे जो सो रहे थे, जिन्होंने अपनी मान्यताओं के प्रति उदासीन रहकर सच्चाई से आंखें मूंद लीं।
इस सवाल का सबसे सटीक जवाब बॉब लाजर (एक व्यक्ति जो दावा करता है कि उसने 1988 से 1989 तक नेवादा में ग्रूम लेक के पास स्थित एस-4 (सेक्टर फोर) नामक एक सैन्य क्षेत्र में भौतिक विज्ञानी के रूप में काम किया था) से मिलता है, जो हमें अलौकिक अंतरिक्ष यान और विशेष रूप से तत्व 115 के साथ अपने काम के बारे में बताता है। बॉब का कहना है कि जहाजों के केंद्र में एक गुरुत्वाकर्षण तरंग जनरेटर था, जिसने उन्हें रिएक्टरों की एक श्रृंखला को शक्ति

प्रदान करने की अनुमति दी, जो एक या दूसरी दिशा में निर्देशित थे और अत्यधिक शक्ति के साथ गुरुत्वाकर्षण तरंगें उत्सर्जित करते थे, जिससे यान को अत्यधिक गति से चलने में मदद मिली।
32

इसमें दिलचस्प बात यह है कि तत्व 115
(जिसे बॉब अननपेंटियम कहते हैं) की खोज 2004 में हुई थी, जिसे शुरू में मोस्कोवियम कहा जाता था, लेकिन अब इस तत्व को अस्थिर माना जाता है।
बॉब लाजर के अनुसार, अलौकिक प्राणियों ने कहा कि इस तत्व को सीधे तारों के केंद्र से निकाला गया था, जो इसे स्थिर रूप में प्राप्त करने का एकमात्र तरीका था।
तो क्या तस्वीरों में जो दिख रहा है, वह सचमुच ब्रह्मांड के किसी दूरस्थ कोने में रहने वाले बुद्धिमान प्राणियों द्वारा निर्मित अलौकिक अंतरिक्ष यान (मानवयुक्त या मानवरहित) हो सकता है? और क्या ये अंतरिक्ष यान सूर्य से ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं?
तस्वीरें मौजूद हैं, एरिया 51 में काम करने वाला एक गवाह है, इस बात का सबूत है कि एलिमेंट 115 मौजूद है...
इस बिंदु पर प्रश्न का उत्तर मिल चुका है, चलिए अगले प्रश्न पर चलते हैं।

33

ATNUGERP 4
चंद्रमा प्राकृतिक उपग्रह है या क्रत्रिम?

मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के भूभौतिक विज्ञानी नाफी टोक्सोज़ यह स्वीकार करते हैं कि "चंद्रमा के अस्तित्व को समझाने की तुलना में यह समझाना कहीं अधिक आसान है कि चंद्रमा का अस्तित्व क्यों नहीं होना चाहिए" - यह बात उन्होंने अपनी पुस्तक "द अर्ली अर्थ" में कही है।
जैसा कि हमें बताया गया है, चंद्रमा का निर्माण मंगल ग्रह के आकार के एक ग्रह और पृथ्वी के टकराव के कारण पूरी तरह से प्राकृतिक तरीके से हुआ प्रतीत होता है, लेकिन यह अभी भी पूरी तरह से निश्चित सिद्धांत नहीं है।
विज्ञान काफी हद तक अध्ययनों और अवलोकनों पर निर्भर करता है, जो सत्य के सबसे करीब प्रतीत होता है, लेकिन फिर भी, इनमें से कई जांचें 100% ठोस उत्तर के बिना सिद्धांतों में परिणत होती हैं।
सच तो यह है कि हम किसी चीज के बारे में जितना अधिक जानते हैं, उतना ही कम हम उस चीज के बारे में जानते हैं।
34

मेरे विचार से, मानवता ने वास्तव में मौजूद हर चीज का 1% भी अभी तक खोजा नहीं है।
और अब भी आप किसी बात पर विश्वास करना चाहते हैं?
आज किसी बात पर विश्वास करने का अर्थ है कि अगले दिन उस विश्वास को बदलने के लिए तैयार रहना। ऐसी दुनिया में जहाँ सब कुछ इतनी तेज़ी से बदलता है, कोई भी अपने विश्वासों की सच्चाई को लेकर सुरक्षित नहीं है, खासकर अगर वे विज्ञान द्वारा समर्थित हों। चंद्रमा की आयु कितनी है?
चंद्रमा की सटीक आयु वास्तव में ज्ञात नहीं है, हालांकि चट्टानों के नमूनों से इसका अनुमान 4.53 अरब वर्ष लगाया गया है। तिब्बती इतिहासों के साथ-साथ स्लाविक किंवदंतियों में भी यह लिखा है कि प्रलय से पहले के समय में आकाश में चंद्रमा नहीं था।

बाइबल में (भजन संहिता 72): “सूर्य के दिनों से और चंद्रमा के दिनों से पहले भी तुमसे भय किया जाता था।”
क्या चंद्रमा खोखला है?
महान वैज्ञानिक कार्ल सागन ने कहा था कि "एक प्राकृतिक उपग्रह खोखली वस्तु नहीं हो सकता।" तो इसका क्या मतलब है? अगर यह वास्तव में खोखला होता, तो यह 35 नहीं होता।

यह एक प्राकृतिक उपग्रह है... और इसलिए यह कृत्रिम है।"
खोखले चंद्रमा का सिद्धांत पृथ्वी (5.5) के घनत्व (3.3) की तुलना में इसके घनत्व के कारण उत्पन्न होता है, जो यह दर्शाता है कि चंद्रमा के आंतरिक क्षेत्र बाहरी क्षेत्रों की तुलना में कम घने हैं, जिससे अपरिहार्य अटकलें लगती हैं कि यह खोखला हो सकता है।
इसके अलावा, चंद्रमा पर सैकड़ों गड्ढे हैं, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि उन सभी का व्यास और गहराई एक समान है, और जब अंतरिक्ष यात्रियों ने उनमें छेद करने की कोशिश की तो वे मुश्किल से ही सतह को भेद पाए।
अंतरिक्ष यात्री वहां से ऐसे पत्थर वापस लाने में कामयाब रहे जिनमें कांस्य, अभ्रक, टाइटेनियम और यूरेनियम 236 और नेप्च्यूनियम 237 तत्व मौजूद थे, जो कि प्रकृति के तत्व नहीं हैं, यानी उन्हें कृत्रिम रूप से बनाया गया था।
वैज्ञानिक स्तर पर, यह सवाल कि यह प्राकृतिक उपग्रह है या कृत्रिम उपग्रह, पहले ही हल हो चुका होगा, लेकिन हम इससे आगे बढ़ने वाले हैं।

36

क्या चंद्रमा को कृत्रिम रूप से पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया था?

ऐसा प्रतीत होता है कि न तो इसका आकार और न ही इसकी कक्षा उस स्थिति से मेल खाती है जो वास्तव में प्राकृतिक होने पर होनी चाहिए; इसलिए, इस समय, चंद्रमा के निर्माण के लिए पृथ्वी और किसी अन्य ग्रह के बीच कथित टक्कर की संभावना बहुत ही संदिग्ध है। क्या यह 1969 का एक बड़ा धोखा था या चंद्रमा पर बुद्धिमान अलौकिक जीवन के अस्तित्व का पुख्ता सबूत?
उन वर्षों में हुए अभियानों के पीछे कई षड्यंत्र सिद्धांत हैं जो इस बात की जांच करते हैं कि क्या चंद्रमा पर उतरना वास्तव में हुआ था।
हम खुद से जो सबसे बड़ा सवाल पूछते हैं, वह यह है कि वे 50 वर्षों में चंद्रमा पर वापस क्यों नहीं गए हैं?
इसका जवाब देना उनके लिए आसान लगता है क्योंकि उनका दावा है कि यह पैसे और सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों के कारण है; संक्षेप में, अब चंद्रमा पर जाने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं है।
इसके बाद, साजिश के सिद्धांत महज़ एक सिद्धांत ही प्रतीत होते हैं, क्योंकि 1968 और 1972 के बीच 9 मिशन चलाए गए थे, यानी कुल 37 मिशन।

अगर कोई इसका विश्लेषण और इस पर सवाल उठाना चाहता है, तो उसे बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। अगर यह धोखाधड़ी थी, तो यह अब तक की सबसे बड़ी धोखाधड़ी थी, लेकिन हम अभी ऐसा कहने से बहुत दूर हैं। सबसे स्पष्ट प्रमाण क्या है?
उड़ान के दौरान, दो मिनट तक वीडियो और रेडियो पर सन्नाटा छाया रहा क्योंकि कैमरे और रिकॉर्डिंग उपकरण "एक साथ खराब हो गए थे", लेकिन संयोगवश इसी वजह से बाकी मिशन के लिए एकदम सही चित्र और ध्वनि प्रभाव मिले। वर्षों बाद, करीबी दोस्तों और रिश्तेदारों ने खुलासा किया कि आर्मस्ट्रांग ने उन मिनटों के दौरान वास्तव में क्या हुआ था, इसके बारे में क्या कहा था।
आर्मस्ट्रांग ने अपनी लाइन बंद करते हुए कहा, "सर, यहाँ गड्ढे के दूसरी तरफ़ अन्य अंतरिक्ष यान कतार में खड़े हैं। वे बहुत बड़े हैं, विशाल हैं, वे हमें देख रहे हैं।"

कई दर्शकों ने मीडिया को पत्र लिखकर बताया कि उन्होंने अंतरिक्ष यात्रियों में से एक को कांच की बोतल जैसी कोई चीज उठाते हुए देखा, लेकिन उसके तुरंत बाद टेलीविजन स्क्रीन खाली हो गई। अन्य दर्शकों ने यह भी देखा कि अंतरिक्ष यात्रियों को 38 फीट की ऊंचाई पर अत्यधिक कठिनाई हो रही थी।

उसने चंद्रमा में कुछ मीटर तक ड्रिल किया, और जब ड्रिल बिट को बाहर निकाला गया, तो धातु के टुकड़े दिखाई दिए।
इस गोपनीय जानकारी का कोई संपूर्ण प्रकाशन तो नहीं है, लेकिन यह जानकारी मौजूद है।
उन अभियानों में घटी संदिग्ध घटनाओं और उसके बाद जो कुछ नहीं हुआ, उसके कारण हम शांतिपूर्वक निर्णय ले सकते हैं और संदेह कर सकते हैं।
लेकिन सवाल उठाना तब मुश्किल हो जाता है जब मानवीय व्यवहार इतना स्पष्ट हो कि सच्चाई अपने आप झलकने लगे। जब अंतरिक्ष यात्री लौटे और उनका साक्षात्कार लिया गया, तो उनका व्यवहार उम्मीद से बिल्कुल अलग था। सभी को लगा था कि उनकी आँखों में भावनाएँ दिखाई देंगी, लेकिन इसके बजाय, उन्होंने केवल भय और संदेह व्यक्त किया, मानो उन्होंने कुछ ऐसा देख लिया हो जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी, और इतना ही नहीं, वे इसके बारे में किसी को बता भी नहीं सकते थे।
हम चंद्रमा के अंधेरे हिस्से को कभी क्यों नहीं देख पाते?
हम पहले ही बता चुके हैं कि चंद्रमा के प्राकृतिक होने को सुनिश्चित करने का कोई तार्किक वैज्ञानिक तरीका नहीं है, और इसी आधार पर सवाल बढ़ते जा रहे हैं।
39

चंद्रमा एक साथ अपनी धुरी पर घूमता है और पृथ्वी की परिक्रमा करता है। ये दोनों गतियाँ समकालिक हैं और इन्हें पूरा होने में लगभग 28 दिन लगते हैं। इसलिए, चंद्रमा हमेशा हमें अपना एक ही

रूप दिखाता है। लेकिन यह घटना ज्ञात ब्रह्मांड में पूरी तरह से अनोखी है। अजीब है ना?
हैंडलिंग
डॉ. डोना हेयर नासा के अंदर सूचनाओं के हेरफेर की प्रत्यक्षदर्शी रही हैं।
इस महिला ने अंतरिक्ष एजेंसी के लिए 15 वर्षों तक तकनीकी चित्रकार के रूप में काम किया। एक साक्षात्कार में, उन्होंने अपोलो अंतरिक्ष यात्रियों में से एक के साथ अपने संपर्क के बारे में कहा: "जब अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा पर उतरे, तो उन्होंने चंद्रमा के ऊपर जहाज देखे, और वह यह कहने से भी डर रहे थे कि अंतरिक्ष यात्रियों को चुप रहने के लिए कहा गया था।" डोना के अलावा, फोटो में हेरफेर के एक अन्य गवाह सार्जेंट कार्ल वोल्फ हैं, जो दावा करते हैं कि उन्होंने चंद्रमा के अंधेरे हिस्से पर स्थित ठिकानों की तस्वीरें देखी हैं।
40

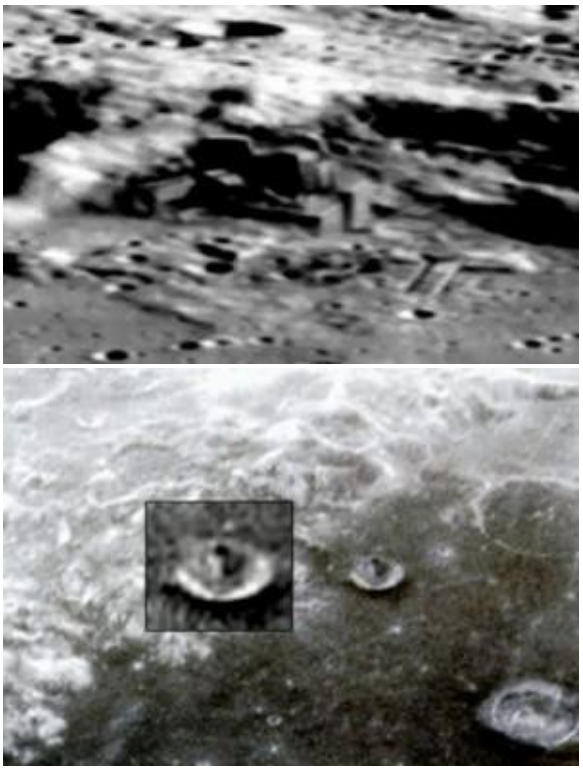

चंद्रमा के अंधेरे हिस्से पर ऐसे ठिकाने, जैसे कि कार्ल वोल्फ ने देखने का दावा किया है।

चंद्रमा के अंधेरे हिस्से पर निर्माण कार्य।
41

यह एक सच्चाई है कि पूरे इतिहास में और वर्तमान समय में भी, नासा हमें वही दिखाता है जो वह दिखाना चाहता है, न कि वह जो वास्तव में मौजूद है।
और यह बात तब और भी स्पष्ट हो गई जब नासा ने एक बयान में कहा कि अलौकिक जीवन के बारे में सार्वजनिक जानकारी समाज के पतन का कारण बन सकती है, और इसलिए इसे गुप्त रखा जाना चाहिए।
हमारे दृष्टिकोण से, और एक अत्यंत आलोचनात्मक राय के साथ, यह हमारे लिए स्पष्ट से भी अधिक है कि हमने जो कुछ भी देखा है उस पर संदेह करना ही हमारे पास सबसे सुरक्षित विकल्प है, और यदि हम किसी चीज में सच्चाई खोजना चाहते हैं, तो यह गवाहों और झूठ की अधिकता और छिपी हुई जानकारी की अधिकता के कारण उत्पन्न होने वाली विसंगतियों के माध्यम से ही संभव है।
जैसा कि मैंने पिछले अध्यायों में कहा है, जैसे-जैसे हम अन्य प्रश्नों को सुलझाते जाएंगे, आपको एहसास होगा कि सब कुछ व्यावहारिक रूप से एक ही बात की ओर इशारा करता है।
42

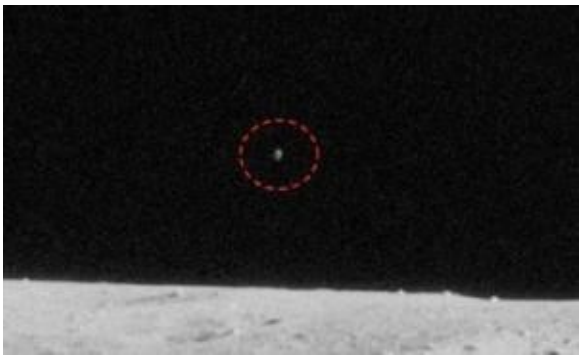

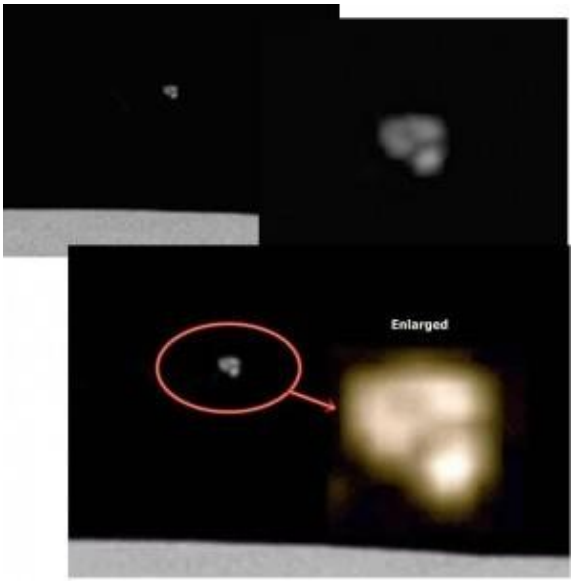

अपोलो 12 द्वारा रिकॉर्ड की गई यूएफओ

ज़ूम यूएफओ अपोलो 15
43

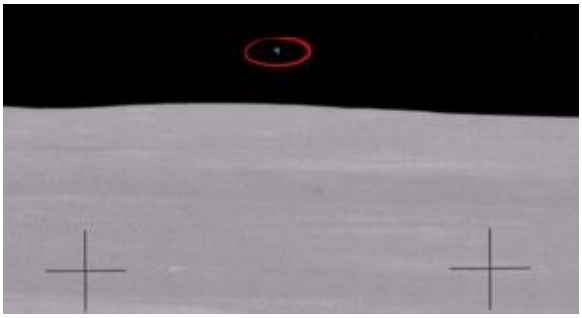

यूएफओ अपोलो 15
इन सभी बातों को सामने रखने के बाद, सिक्के के सभी पहलुओं को देखने के बाद, ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश आबादी जिस स्थिति

में है वह निचले स्तर पर है, जो बाहर जो कुछ हो रहा है उसकी पूर्ण सच्चाई जानने में असमर्थ है।
बहुत निकट भविष्य में, मानवता अंतर-आकाशगंगा स्तर तक पहुंच जाएगी, और आज जो प्रश्न हमें संदेह से भर देते हैं, वे सबसे वास्तविक चीजें होंगी जिनके बारे में हमने कभी सोचा होगा।
एक के बिना दो नहीं हो सकते, ठीक वैसे ही जैसे नासा को छवियों को छिपाने और विकृत करने की आवश्यकता नहीं होती अगर उनके पीछे कुछ भी नहीं होता (जिसकी पुष्टि वह पहले ही कर चुका है)।
44

इस अध्याय को समाप्त करते हुए, मैं यह कहना चाहता हूं कि चंद्रमा पर उतरना मनुष्य के लिए एक बहुत बड़ी छलांग थी, लेकिन मानवता के लिए एक बहुत बड़ा झूठ था।

45

ATNUGERP 5
क्या मृत्यु के बाद जीवन है?

क्या यह सोचना पागलपन नहीं होगा कि जीवन का कोई अंत है? जन्म से ही हमें यह स्पष्ट हो जाता है कि हम मरने वाले हैं, कि जीवन बस एक ऐसी राह है जिसका अंत निश्चित है...
लेकिन क्या यह उतना ही स्पष्ट है जितना दिखता है?
मृत्यु के बाद का जीवन सबसे रहस्यमय और अक्सर वर्जित प्रश्नों में से एक है जिनका हम सामना कर सकते हैं।
प्राचीन संस्कृतियाँ हमें क्या बताती हैं?
बाइबल हमें बताती है कि मरने के बाद हमारे लिए स्वर्ग या नरक होता है।
हिंदू धर्म में यह मान्यता है कि मरने के बाद हमारा पुनर्जन्म होता है।
विज्ञान हमें क्या बताता है?
इस घटना का अध्ययन करने के लिए, वैज्ञानिक एनडीई (मृत्यु के निकट के अनुभव) के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
इस विषय पर शोध करने वाले एक बहुत प्रसिद्ध वैज्ञानिक, डॉ. रेमंड मूडी ने 46 नामक एक पुस्तक लिखी।

"जीवन के बाद जीवन" नामक अपने भाषण में उन्होंने कहा कि सभी लोग, चाहे उनकी संस्कृति या धार्मिक मान्यता कुछ भी हो, चिकित्सकीय रूप से मृत होने और फिर से जीवित होने के बाद लगभग समान अनुभव करते हैं।
सबसे अधिक वर्णित अनुभूति शांति की अनुभूति और एक चमकदार सुरंग को देखने की थी।
कई लोगों के लिए यह इस बात का निर्णायक प्रमाण था कि मृत्यु के बाद जीवन होता है, लेकिन दूसरों के लिए यह ऑक्सीजन की कमी के कारण हो सकता है, जिससे इस तरह के मतिभ्रम उत्पन्न होते हैं। अपनी पुस्तक में, स्टीफन हॉकिंग ने मृत्यु के बाद जीवन के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा: "जिस प्रकार कोई ईश्वर नहीं है,

उसी प्रकार मृत्यु के बाद रहने के लिए कोई स्वर्ग या परलोक नहीं है।"
मुझे लगता है कि मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास करना एक भ्रम है।
क्या होगा यदि मृत्यु केवल हमारी चेतना की एक रचना हो?
यह प्रश्न उतना बेतुका नहीं है जितना लगता है, क्योंकि क्वांटम भौतिकी के माध्यम से, और विशेष रूप से जीवकेंद्रवाद के नए सिद्धांत में इसका उत्तर मिलता प्रतीत होता है, जो यह मानता है कि मृत्यु 47

जैसा कि हम हमेशा से मानते आए हैं, यह एक निर्णायक घटना हो सकती है। मृत्यु की अवधारणा केवल हमारी चेतना की उपज है क्योंकि हम इसे अपने शरीर से जोड़ते हैं और जानते हैं कि भौतिक शरीर मरते हैं (क्या आपको पहला अध्याय याद है जहाँ मैंने अहंकार के बारे में बात की थी?)। यदि हम इसमें क्वांटम भौतिकी को शामिल करें, तो यह हमें बताता है कि मृत्यु के बाद जीवन नहीं है, बल्कि मृत्यु का अस्तित्व ही नहीं है (क्वांटम अमरता)।
क्वांटम भौतिकी समानांतर ब्रह्मांडों के सिद्धांत पर आधारित है, जो यह सुझाव देता है कि किसी भी क्षण जब एक ब्रह्मांड को क्वांटम स्तर पर पथों का चुनाव करना होता है, तो वह वास्तव में सभी संभावनाओं का अनुसरण करता है, जिससे वह कई ब्रह्मांडों में विभाजित हो जाता है।
इसका अर्थ यह है कि किसी भी चीज के समाप्त होने की कोई संभावना नहीं है, जो इस तथ्य की और पुष्टि करता है कि मृत्यु हम सभी में गहराई से निहित एक प्राचीन विश्वास का परिणाम है।
तो फिर मृत्यु का क्या होगा?
अभी तक हम किसी एक बात पर विश्वास करने से खुद को रोक नहीं सकते, क्योंकि अभी भी कुछ अधूरी जानकारियां बाकी हैं। 48

जो मैं आपको दिखाना चाहता हूं, लेकिन हम हर बार उसके करीब पहुंच रहे हैं।
पुनर्जन्म
जैसा कि मैंने इस अध्याय की शुरुआत में उल्लेख किया था, कई संस्कृतियाँ मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास करती हैं, लेकिन अन्य मानती हैं कि यद्यपि यदि हम मर जाते हैं, तो जो मरता है (कार्य करना बंद कर देता है) वह हमारा भौतिक शरीर है, इसलिए हमारा अवचेतन मन या "आत्मा" "जीवित" बनी रहती है।
पुनर्जन्म का सिद्धांत इतना भी निराधार नहीं है, इसका सीधा सा कारण यह है कि विज्ञान ने हमें जो कुछ बताया है, उससे यह काफी हद तक समर्थित है।
लावोइसियर के प्रसिद्ध नियम के अनुसार, ऊर्जा न तो उत्पन्न होती है और न ही नष्ट होती है, यह केवल रूपांतरित होती है, और मैं चाहता हूं कि हम इसे याद रखें।
मानव शरीर लाखों कणों से बना है, जिनमें से सभी में ऊर्जा होती है।
निष्कर्षतः: हम ऊर्जा हैं, और ऊर्जा केवल रूपांतरित होती है, नष्ट नहीं होती, जिसका अर्थ यह होगा कि… यह कभी मरती नहीं है? इसमें हमें विभिन्न आयु वर्ग के उन सैकड़ों मामलों को भी शामिल करना होगा जिनमें लोग अपने पिछले जन्मों के बारे में बताते हैं।
49

यहां एक उदाहरण दिया गया है:
पैट्रिक क्रिस्टेंसन का जन्म मार्च 1991 में मिशिगन में सीज़ेरियन सेक्शन द्वारा हुआ था। उनके बड़े भाई केविन की बारह साल पहले दो साल की उम्र में कैंसर से मृत्यु हो गई थी। केविन के कैंसर के शुरुआती लक्षण उनकी मृत्यु से छह महीने पहले दिखाई दिए जब उन्होंने चलना शुरू किया और उनके चलने में एक स्पष्ट लंगड़ापन दिखाई दिया।
एक दिन वह गिर गया और उसका पैर टूट गया। जांच की गई और उसके दाहिने कान के ठीक ऊपर, सिर की त्वचा पर एक छोटी सी गांठ की

बायोप्सी के बाद पता चला कि नन्हे केविन को मेटास्टैटिक कैंसर था। जल्द ही उसके शरीर के अन्य हिस्सों में भी ट्यूमर बढ़ने लगे। इनमें से एक ट्यूमर के कारण उसकी एक आंख की रोशनी चली गई। केविन की कीमोथेरेपी हुई, जिससे उसकी गर्दन के दाहिनी ओर निशान पड़ गए। दूसरे जन्मदिन के तीन सप्ताह बाद उसकी मृत्यु हो गई। जन्म के समय, पैट्रिक की गर्दन के दाहिनी ओर एक छोटा सा कट जैसा जन्मचिह्न था, ठीक उसी जगह पर जहाँ केविन के कीमोथेरेपी का निशान था। उसकी त्वचा पर एक गांठ भी थी।

उसके दाहिने कान के ठीक ऊपर बाल झड़ने शुरू हो गए थे और बाईं आंख के आसपास धुंधलापन था। जब उसने चलना शुरू किया तो वह थोड़ा लंगड़ा रहा था।
जब वह लगभग साढ़े चार साल का था, तो उसने अपनी माँ से कहा कि वह अपने पुराने नारंगी और भूरे रंग के घर में वापस जाना चाहता है। यह उस घर का रंग था जिसमें परिवार 1979 में रहता था जब केविन जीवित था। फिर उसने अपनी माँ से पूछा कि क्या उन्हें याद है कि उसकी सर्जरी हुई थी। माँ ने जवाब दिया कि उन्हें याद नहीं है क्योंकि ऐसा उसके साथ कभी नहीं हुआ था।
इसके बाद पैट्रिक ने अपने दाहिने कान के ठीक ऊपर एक जगह की ओर इशारा किया।
उसने आगे कहा कि उसे ऑपरेशन की असल घटना याद नहीं है क्योंकि वह सो रहा था। लड़के का पूरा बयान केविन के बीते जीवन के विवरण से मेल खाता था।
इस तरह के सैकड़ों और मामले इंटरनेट पर मिल सकते हैं, लेकिन अगर आप शोध पर आधारित कुछ मामले पढ़ना चाहते हैं, तो मैं आपको इयान स्टीवेन्सन की किताब "ट्वेंटी केसेस दैट मेक यू थिंक अबाउट रीइन्कार्नेशन" पढ़ने की सलाह देता हूं।
लैवॉइसियर का नियम पुस्तक में आगे बताए जाने वाले अन्य मामलों में भी हमारे साथ रहेगा, और इस अध्याय से यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि 51

हमारे आस-पास हर कोई और हर चीज ऊर्जा (सूक्ष्म स्तर पर कण) से बनी है।
हम कभी भी 100% जैसी कोई बात नहीं निकाल पाएंगे।
यह सच है, लेकिन हम वही कर सकते हैं जो आपने इस अध्याय में देखा है: एक ही विषय से संबंधित सभी संभावित क्षेत्रों से सभी जानकारी एकत्र करें, चाहे वे विरोधाभासी हों या नहीं, यह देखने के लिए कि कौन सी जानकारी अधिक महत्वपूर्ण है, और एक बार यह तय हो जाने के बाद, निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए उन्हें संयोजित करें।
इस मामले में, कोई भी मृत्यु के बाद जीवन को साबित नहीं कर सकता, लेकिन इसे साबित करना आवश्यक भी नहीं है।
मुझे एक बार बताया गया था कि किसी समस्या या मुद्दे को हल करने के लिए, आपको समस्या पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए; समस्या तो समस्या ही है, बस।
यदि हम किसी समस्या का समाधान करना चाहते हैं, तो हमें समाधान पर ध्यान केंद्रित करना होगा और उससे बाहरी रूप से निपटना होगा; यानी, उस पर ध्यान केंद्रित किए बिना उसका समाधान खोजने का प्रयास करना होगा, जैसा कि हमने इस प्रश्न के साथ किया है।
मैं आपके इस सवाल का सीधा जवाब देने की कोशिश नहीं कर रहा हूं कि मृत्यु के बाद जीवन है या नहीं, क्योंकि मैं आपको अपनी राय, अपने विश्वास बता दूंगा, और किसी विश्वास को साझा करना बहुत आसान है। 52

मैं चाहता हूं कि आप इससे यह सीखें कि हमें सभी जानकारी को समझना होगा, और जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, आप धीरे-धीरे यह महसूस करेंगे कि सब कुछ एक साथ मिलकर एक ही बात की ओर इशारा करता है।

ATNUGERP 6
प्राचीन मिस्र में क्या हुआ था?

मिस्र में कई रहस्यमयी घटनाएं घटीं, लेकिन उनमें से कोई भी उन महान पिरामिडों की तुलना में नहीं है जिन्हें हम सभी जानते हैं।
कई वर्षों से इन पर सवाल उठाए जाते रहे हैं और इनके इर्द-गिर्द कई सिद्धांत गढ़े गए हैं।
क्या वास्तव में मिस्रवासियों ने पिरामिडों का निर्माण किया था?
“सबसे विशाल पिरामिडों का निर्माण इसलिए हुआ क्योंकि हम एक ही सत्ता की शक्तियों का उपयोग करने में सक्षम थे। पत्थर सजीव हैं। आपकी संस्कृति में मौजूद मन/शरीर/आत्मा संबंधी विकृतियों के कारण इस बात को पूरी तरह से समझा नहीं जा सका है।”
– पुस्तक 'द लॉ ऑफ वन' से उद्धृत अंश।
इनके निर्माण के पीछे एक बड़ा विवाद छिपा है कि उन्होंने 2 टन से अधिक वजनी विशाल चट्टानों को कैसे स्थानांतरित किया और इतनी सटीकता के साथ ऐसा करके 54 का निर्माण कैसे किया।

ये आज अविश्वसनीय स्मारक हैं, जिन्हें फिलहाल कोई भी दोबारा नहीं बना सकता।
ये चट्टानें ग्रेनाइट, बेसाल्ट, क्वार्टजाइट और डायोराइट जैसी सबसे प्रतिरोधी सामग्रियों से बनी हैं, जिन्हें बेहतरीन औजारों से भी तराशना मुश्किल है।
पत्थरों को रैंप की मदद से ले जाया गया...
सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत व्याख्या यह है कि पिरामिडों का निर्माण विशाल रैंप की मदद से किया गया था, जिसके माध्यम से गुलामों ने पत्थर के ब्लॉकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाया था।
लेकिन यहाँ एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके लिए रैंप पिरामिड से भी बड़े होने चाहिए थे।

रोचक तथ्य यह है कि तीनों पिरामिड ओरियन तारामंडल के साथ संरेखित हैं, और हालांकि हम इस बारे में बाद में बात करेंगे, लेकिन यह कैसे संभव है कि हजारों साल पहले वास्तुकला में उनमें यह पूर्णता थी?
इन सब बातों के अलावा, लक्ष्य क्या था?
इतिहासकारों और मानवशास्त्रियों ने वर्षों से हमें वही बताया है जो सबसे तार्किक रूप से सत्य होना चाहिए। 55

ऐसा हुआ, हालांकि इनमें से कई विवरण अभी भी संदेह पैदा करते हैं।
पिरामिडों की आगे की जांच और उनके निर्माण के कारणों से केवल यही निष्कर्ष निकला है कि वे अलौकिक मूल के हैं।
पिरामिडों का निर्माण एक ऐसी बुद्धि द्वारा किया गया था जो इस पृथ्वी की नहीं है, और न ही उस समय की है जिसमें उनका निर्माण हुआ था।
मैं इन सभी सवालों के पहलुओं को पहले शोध और ठोस आधार पर आधारित दृष्टिकोण से दिखाना पसंद करता हूं, इसका सीधा सा कारण यह है कि हर नई खोज के बाद एक नया सवाल उठता है, जो हमें सच्चाई के करीब ले जाता है, एक ऐसी सच्चाई के करीब जिसे मानना और स्वीकार करना हमारे लिए मुश्किल हो सकता है।
पुस्तक "द लॉ ऑफ वन" का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है और यह प्रमाणित भी नहीं है, फिर भी यह हमें वही बात बताती है जो कई शोधकर्ताओं ने खोजी है।
किसी को धोखा देने का एकमात्र तरीका यह है कि उसे कुछ ऐसा "तार्किक" बताया जाए जिसमें सवाल उठाने की कोई गुंजाइश न हो; समस्या यह है कि जब कोई बात तार्किक तो होती है लेकिन इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं होता कि कही गई बात सच है, तो अंततः वह धोखा ही साबित होती है।
56

महत्वपूर्ण बात यह है कि आप मेरे द्वारा दिखाए गए तथ्यों के आधार पर स्वयं से प्रश्न करें; आपके स्वयं के सत्य को जानने में आपके अलावा कोई और सक्षम नहीं है।
यह मानने से इनकार करना कि पिरामिडों का निर्माण अलौकिक प्राणियों द्वारा किया गया था, एक ही समय में यह मानना है कि प्राचीन मिस्र के निवासी आज की आबादी की तुलना में कहीं अधिक बुद्धिमान थे और उनके पास कहीं अधिक उन्नत सामग्रियां और उपकरण थे। यह संपूर्ण इतिहास को चुनौती देता है।
बदले में, हम यह मानकर इतिहास को चुनौती भी दे सकते हैं कि वास्तव में उन्हें अलौकिक प्राणियों द्वारा बनाया गया था, क्योंकि किसी ने भी हमें यह नहीं बताया है, और हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह किसी भी इतिहास की किताब में नहीं मिलता है। जरूरी नहीं कि इन्हें किसी और जगह के बुद्धिमान प्राणियों ने ही बनाया हो, लेकिन...
क्या अन्य ग्रहों के प्राणी प्राचीन मिस्र की सभ्यता में आए होंगे और उन्हें नई बुद्धिमत्ता प्रदान की होगी?
प्राचीन मिस्र के निवासियों के कई देवता थे, और वर्षों से इस बारे में कई कहानियां सुनाई जाती रही हैं कि पिरामिड कैसे बनाए गए थे, न केवल मिस्र में, बल्कि पूरी दुनिया में।
57

सबसे दिलचस्प बात यह है कि जहां भी पिरामिड हैं, वहां के निवासी एक ही कहानी सुनाते हैं, चाहे वह दुनिया का कोई भी हिस्सा हो: दूसरे ग्रह से प्राणी आए और उन्होंने पिरामिड बनाए।
और मिस्र के बारे में सबसे खूबसूरत बात यह है कि वहां सब कुछ या तो लेखन (चित्रलिपि) के रूप में या महान निर्माणों (गीज़ा के 3 पिरामिड, मंदिर, विशाल मकबरे, स्फिंक्स) के रूप में दर्ज है।

जिस प्रकार यह साबित करना कि चंद्रमा एक प्राकृतिक उपग्रह है, यह साबित करने से कहीं अधिक कठिन है कि वह नहीं है, उसी प्रकार

यह साबित करना कि प्राचीन मिस्र के स्मारक उस समय के मनुष्यों द्वारा बनाए गए थे, यह साबित करने से कहीं अधिक कठिन है कि उनका निर्माण उन पर आने वाली अलौकिक सभ्यताओं द्वारा किया गया था।

58

ATNUGERP 7
दुनिया भर में कई पिरामिड ओरियन तारामंडल की ओर इशारा करते हैं। क्यों?

इतिहास में कई संस्कृतियों ने पिरामिड के रूप में महान वास्तुशिल्प कृतियों का निर्माण किया है। इनमें सबसे प्रसिद्ध मिस्र के पिरामिड हैं, लेकिन ये मेक्सिको, चीन, इंडोनेशिया और अन्य देशों में भी पाए जाते हैं।
प्राचीन सभ्यताओं के लिए ओरियन इतना महत्वपूर्ण क्यों था? मिस्र की पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवता वहीं से अवतरित हुए थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि सीरियस और ओरियन से मानव-समान प्राणी अवतरित हुए थे, जिन्हें ओसिरिस और आइसिस नामक देवता कहा जाता था। इन देवताओं ने मानव जाति के साथ संपर्क स्थापित किया और मिस्र में एक बुद्धिमान सभ्यता का निर्माण किया। इस घटना को संपूर्ण मानव जाति की उत्पत्ति से भी जोड़ा जाता है।
59

यह हमें वापस उसी बात पर ले जाता है जो हमने पिछले अध्याय में देखी थी कि ये पिरामिड कैसे बनाए गए थे (संतुलन अलौकिक पक्ष की ओर झुका हुआ था)।
पृथ्वी के प्राचीन निवासियों ने इन पिरामिडों का निर्माण क्यों किया?
ऐसा कहा जाता है कि पिरामिडों का निर्माण मंदिरों के रूप में किया गया था जहां देवताओं के नाम पर बलिदान किए जाते थे, या यह भी कहा जाता है कि कई अन्य मकबरे थे।
एक बात स्पष्ट होनी चाहिए: अमेरिका के निवासियों का इंडोनेशिया में रहने वाले लोगों से कोई संपर्क नहीं था, इसलिए यह असंभव है कि वे एक जैसी मूर्तियां बनाने के लिए सहमत हुए हों। इसके पीछे कोई ऐसा उद्देश्य अवश्य रहा होगा जो सांसारिक दायरे और तार्किक निष्कर्ष से परे हो।
ऐसी कई चीजें होंगी जो हमारी समझ से परे होंगी, इसलिए कभी-कभी हमें तर्क का उपयोग एक तरफ रखकर खुद को वास्तव में उन चीजों में

डुबो देना होगा जिनके बारे में वे हमें नहीं बताते हैं लेकिन जो घटित हुई थीं।
पाठक को यह समझने की आवश्यकता है कि बहुत सारा ऐतिहासिक डेटा प्रस्तुत नहीं किया गया है, इसका सीधा सा कारण यह है कि इसे चर्चा के लिए प्रासंगिक नहीं माना जाता है।

सवाल यह है कि, जैसा कि शुरुआत में बताया गया है, लक्ष्य आलोचनात्मक सोच विकसित करना है, क्योंकि यदि कोई पिरामिड और मिस्र के बारे में लिखना चाहता है, तो उसे विशेष रूप से इसके बारे में लिखना चाहिए, क्योंकि यह एक पूरी किताब के लिए पर्याप्त होगा।
सबसे अच्छा तरीका यह है कि सूचनाओं के अतिरेक से बचा जाए और प्रत्येक स्थान की बारीकियों को समझा जाए। जो कुछ हुआ उसका व्यापक अवलोकन प्राप्त करें और तथ्यों को जोड़कर प्रश्न का ठोस और सटीक उत्तर प्रदान करें।
पाठक चाहें तो यहां प्रस्तुत प्रत्येक विषय के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन कई बार चित्र स्वयं ही सब कुछ बयां कर देते हैं।

61

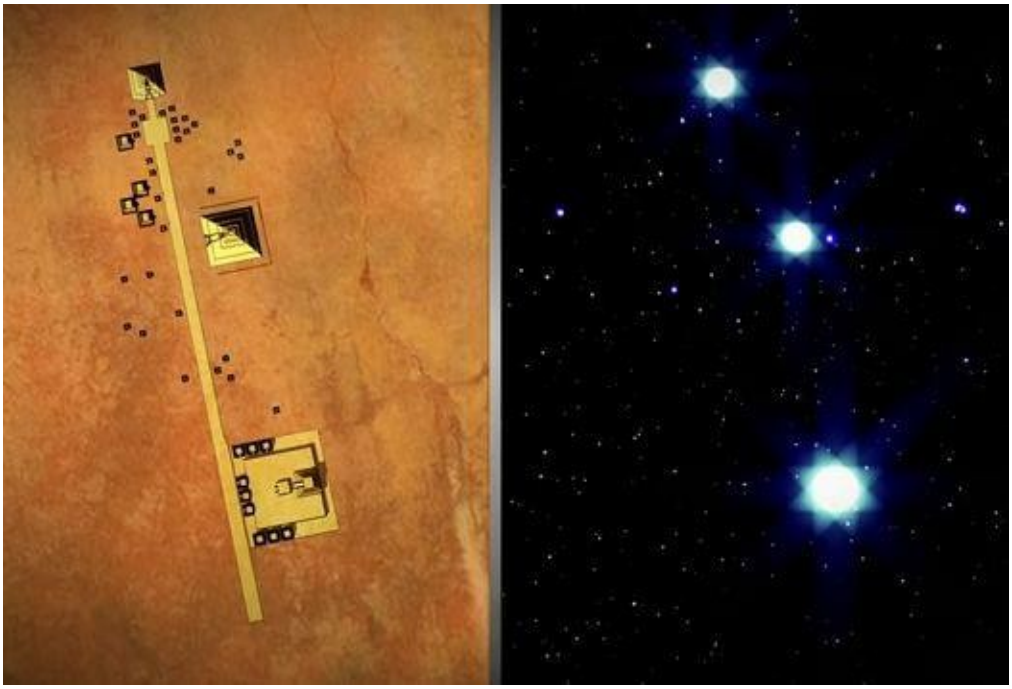

□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□:
□□□□□□□□ □□□□

THE HUMAN ODYSSEY
PYRAMID STRUCTURES OF THE WORLD V2.0
DESIGNED BY SIMON E. DAVIES
ZIGGURAT OF TEPE SIALK
Kashan, Iran: 3000 BCE
PYRAMID OF DJOSER
Memphis, Egypt: 2610 BCE
PYRAMID OF KHUFU
El Giza, Egypt: 2560 BCE
ZIGGURAT OF UR
City of Ur, Iraq: 2100 BCE
CHOGHA ZANBIL (Ziggurat)
Khuzestan, Iran: 1250 BCE
TOMB OF KING KASHTA
Shendi, Sudan: 500 BCE
JEBEL BARKAL PYRAMID
Karima town, Sudan: 300 BCE
QIN SHI MAUSOLEUM
Xi'an, China: 210 BCE
PYRAMID OF CESTIUS
Rome, Italy: 12 BCE
PYRAMID OF THE SUN
Teotihuacan, Mexico: 100 CE
TOMB OF THE GENERAL
City of Ji'an, China: 300 CE
BOROBUDUR TEMPLE
Java, Indonesia: 800 CE
PRANG TEMPLE
Kol Ker, Cambodia: 940 CE
EL CASTILLO
Chichen Itza, Mexico: 1000 CE
XIA TOMBS
Ningxia Hui, China: 1048 CE
MORONGO UTA PYRAMID
Rapa Iti, Polynesia: 1450 CE

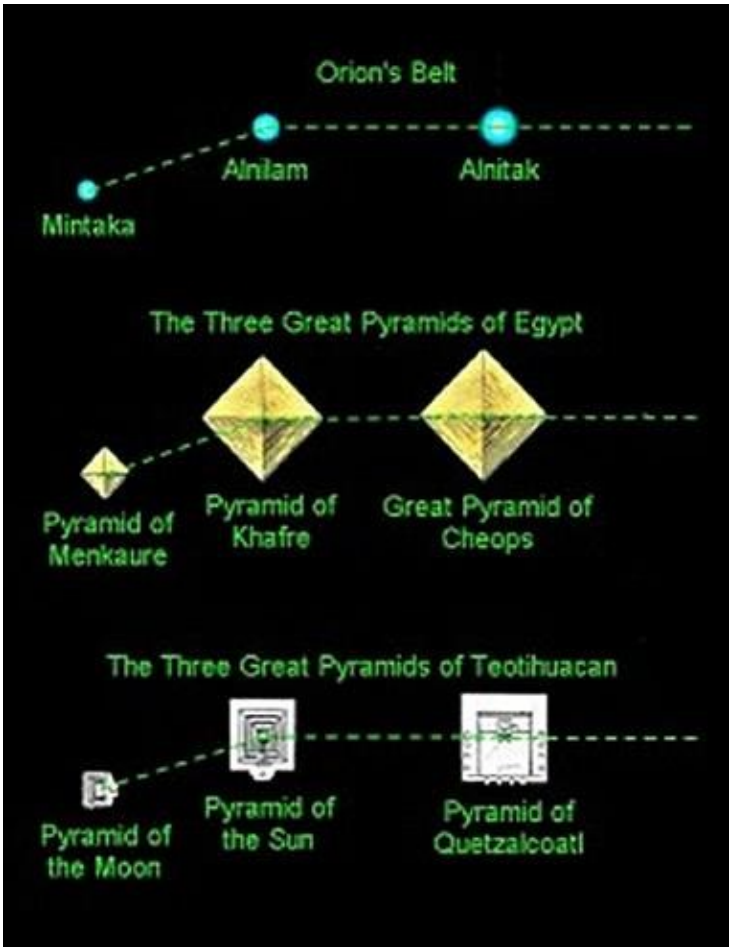
Orion's Belt
Alnilam
Alnitak
Mintaka
The Three Great Pyramids of Egypt
Pyramid of Menkaure
Pyramid of Khafre
Great Pyramid of Cheops
The Three Great Pyramids of Teotihuacan
Pyramid of the Moon
Pyramid of the Sun
Pyramid of Quetzalcoatl

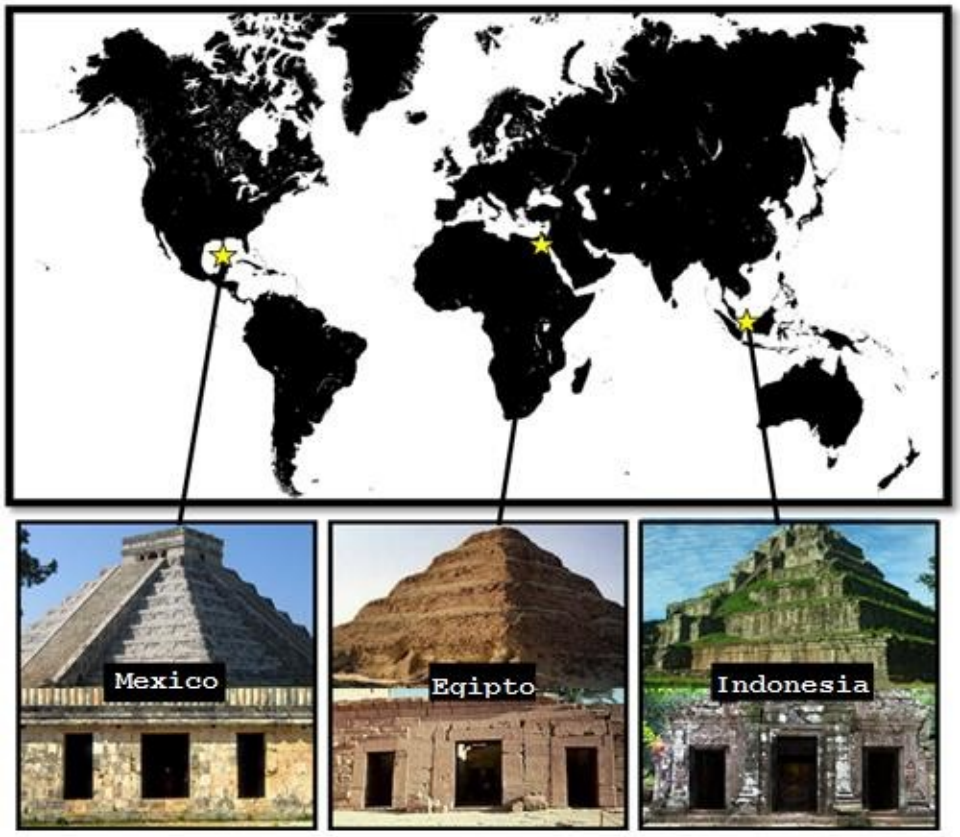
Mexico
Egipto
Indonesia

ATNUGERP 8
क्या अन्य ग्रहों पर बुद्धिमान जीवन मौजूद है?

ऐसा प्रतीत होता है कि पिछले अध्यायों में हमने जिन बातों पर चर्चा की है, उसके बाद इस प्रश्न का उत्तर पहले ही पूरी तरह से मिल जाना चाहिए था, फिर भी, हम इस विषय पर कुछ और सटीक जानकारी के साथ इसका विशेष रूप से उत्तर देने का प्रयास करेंगे।
भौतिक दृष्टि से, सांख्यिकी और संभावनाओं के आधार पर, अन्य ग्रहों पर जीवन का न होना लगभग असंभव है, क्योंकि आकाशगंगा में लाखों तारे और ग्रह प्रणालियाँ मौजूद हैं (खगोलविदों का अनुमान है कि आकाशगंगा में 40 अरब पृथ्वी जैसे ग्रह हो सकते हैं)। समस्या यह है कि जैविक दृष्टिकोण से, हमारे ग्रह पर जीवन का अस्तित्व, अन्य ब्रह्मांडीय क्षेत्रों की तो बात ही छोड़िए, संभावना से भी कहीं अधिक असंभावित प्रतीत होता है।
जीवन के अस्तित्व के लिए क्या आवश्यक है?
जीवन के प्रकट होने के लिए, सबसे पहली चीज जो आवश्यक है वह है एक अच्छी जगह की खोज करना।
66

आकाशगंगा के बाहरी किनारे पर होना बेहतर है। आकाशगंगा के केंद्र में तारों का घनत्व अधिक होता है और सुपरनोवा के निकट होने की संभावना भी अधिक होती है। सूर्य न केवल सही स्थान पर है, बल्कि सौभाग्य से यह एक स्वच्छ वातावरण में स्थित है, जिससे गामा-किरण उत्सर्जन का खतरा कम हो जाता है।
इसके बाद, एक उपयुक्त तारे की आवश्यकता होती है—ऐसा तारा जो अपना ईंधन बहुत जल्दी खर्च न करे, क्योंकि जीवन को प्रकट होने और विकसित होने में लंबा समय लगता है। इसके अलावा, यह बहुत युवा तारा नहीं होना चाहिए, क्योंकि युवा तारे आमतौर पर हाइड्रोजन और हीलियम से बने होते हैं और उनमें जीवन के लिए आवश्यक अन्य तत्वों की कमी होती है। बहुत छोटा तारा भी अनुपयुक्त होता है, क्योंकि तब रहने योग्य क्षेत्र तारे के बहुत करीब होता है, जिससे ग्रह उसके गुरुत्वाकर्षण द्वारा बंधे रहते हैं और अपनी

धुरी पर घूमने में असमर्थ हो जाते हैं, जैसा कि चंद्रमा और पृथ्वी के साथ होता है। इस प्रकार, ग्रह के एक तरफ का तापमान कई सौ डिग्री होता है, क्योंकि वह हमेशा सूर्य के प्रकाश के संपर्क में रहता है, जबकि दूसरी तरफ, जिसे तारे का प्रकाश कभी नहीं मिलता, वह बेहद ठंडा होता है।
67

जिस प्रकार आकाशगंगा में तारे का सही स्थान होना महत्वपूर्ण है, उसी प्रकार ग्रह का तारे के सापेक्ष सही स्थान होना भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि वह बहुत पास होता है तो पानी वाष्पीकृत हो जाता है, लेकिन दूसरी ओर, यदि वह बहुत दूर होता है तो वह जम जाता है।
ग्रह चट्टानी होना चाहिए; गैस का विशाल ग्रह नहीं चलेगा। साथ ही, इसमें पिघला हुआ कोर होना चाहिए जो एक चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करे और इसे ब्रह्मांडीय विकिरण और सौर पवन से बचाए। इसके लिए एक निश्चित द्रव्यमान की आवश्यकता होती है।
ऐसा अनुमान है कि मंगल ग्रह पर अपने पहले एक अरब वर्षों तक तरल जल और मध्यम तापमान मौजूद था। हालांकि, छोटा होने के कारण (लगभग पृथ्वी के आधे आकार का), ऊष्मा तेजी से नष्ट हो गई, कोर ठोस हो गया और इसने चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करना बंद कर दिया।
उस सुरक्षा के अभाव में, सौर पवन ने ग्रह के अधिकांश वायुमंडल को नष्ट कर दिया। बहुत बड़ा ग्रह भी अनुपयुक्त है, क्योंकि वायुमंडलीय दबाव बहुत अधिक होगा। कुछ खगोलविदों का अनुमान है कि आदर्श द्रव्यमान पृथ्वी के द्रव्यमान का 0.2 से 10 गुना होना चाहिए।
68

क्या होगा यदि ऐसे कई ग्रह हों जो इनमें से कुछ विशेषताओं को पूरा करते हों?
उदाहरण के तौर पर, 2010 में ग्लिसे 581 जी की खोज हुई थी।

खगोलविदों के अनुसार, ग्रह ग्लिसे 581 जी अपने तारे से इतनी दूरी पर स्थित है कि इसकी सतह पर या कम से कम उथली गहराई पर तरल पानी के अस्तित्व के लिए इष्टतम तापमान मौजूद है।
इसकी विशेषताओं में से एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इसका तापमान -31º से -12º के बीच रहता है।
सेल्सियस तापमान पर, इसमें गुरुत्वाकर्षण है, इसकी कक्षीय अवधि 36 दिनों से थोड़ी अधिक है, और इसका द्रव्यमान 3.1 से 4.3 के बीच है।
पृथ्वी का द्रव्यमान और ग्लिसे 581 तारे का गुरुत्वाकर्षण बल, पृथ्वी के एक हिस्से को हमेशा प्रकाशित और दूसरे हिस्से को अंधकारमय और ठंडा रखते हैं। इसलिए, उनका मानना है कि जीवन की संभावना वाला क्षेत्र दिन और रात की सीमा के सबसे निकट स्थित होगा।
ग्लिसे 581 जी वह सुराग था जिसने खगोलविदों, खगोल भौतिकविदों और शोधकर्ताओं को इस विचार पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित किया कि वास्तव में पृथ्वी जैसी विशेषताओं वाले ग्रहों की संख्या पहले की तुलना में कहीं अधिक है।

मुझे विश्वास था कि ब्रह्मांड में हमारी समझने की क्षमता से कहीं अधिक जीवन मौजूद हो सकता है।
लेकिन बुद्धिमान जीवन के बारे में क्या?
पृथ्वी जैसे ग्रहों पर जीवन का निर्माण हो सकता है, लेकिन बुद्धिमान जीवन का निर्माण होना बिल्कुल अलग बात है। सूक्ष्मजीवों की खोज करना अच्छी बात हो सकती है, लेकिन हम वास्तव में यह जानना चाहते हैं कि क्या हमारे जैसे या हमसे भी अधिक बुद्धिमान अन्य प्राणी मौजूद हैं (या हो सकता है कि वे कम विकसित हों)।
क्या सबसे बुद्धिमान प्राणी शनि ग्रह से हो सकते हैं?
शोध करते समय मुझे इस विषय पर चर्चा करना ज़रूरी नहीं लगा, लेकिन फिर मुझे "द लॉ ऑफ़ वन" नामक पुस्तक में पढ़ी हुई एक बात याद आई, जिसका ज़िक्र पहले किया गया था। उसमें रा (एक अलौकिक प्राणी जो प्रश्नों के उत्तर देता है) ने टिप्पणी की थी कि

आठवें आयाम के प्राणी शनि ग्रह पर, वलय क्षेत्र में स्थित हैं, जो हमारे लिए तीसरी घनत्व (घनत्व किसी प्राणी या प्राणियों की चेतना, शक्तियों या बुद्धि के स्तर को दर्शाता है) है। यह बात आपको बहुत अजीब लगेगी, हालाँकि पुस्तक में जो कुछ भी बताया गया है वह तर्कसंगत नहीं होगा। 70

लेकिन अगर आप खुद को थोड़ा अधिक व्यावहारिक मानते हैं, तो जर्मन दार्शनिक इमैनुअल कांट ने बताया कि बाह्य ग्रहों के प्राणियों की बुद्धि सूर्य से उनकी दूरी के समानुपाती होती है। इसी कारण, विभिन्न ग्रहों के निवासियों में भारी विविधता होगी, जैसे "बुध के अनाड़ी निवासियों" से लेकर "शनि के प्रतिभाशाली प्राणियों" तक।
क्या यह संयोग था या सच?
जैसा कि आप शायद पहले ही समझ चुके होंगे, अन्य ग्रहों पर बुद्धिमान जीवन के बारे में सोचना मुश्किल है, इसका सीधा सा कारण यह है कि जैविक स्तर पर हमारे पास केवल वही जानकारी है जो पृथ्वी पर हुई थी, यानी यहां बुद्धिमान जीवन कैसे विकसित हुआ और विशेष रूप से हम कैसे विकसित हुए।
असल बात तो यह है कि हमें यह भी नहीं पता कि हमारा विकास कैसे हुआ।
इतिहास आज भी हमें बताता है कि बंदर का क्या हुआ, और यह बात कुछ हद तक सच हो सकती है, लेकिन केवल एक निश्चित सीमा तक ही, क्योंकि अंतिम होमो निएंडरथलेंसिस से होमो सेपियंस तक बहुत कम समय में एक जबरदस्त विकासवादी छलांग लगी थी।
71

यदि हम उन बुद्धिमान अलौकिक सभ्यताओं के साक्ष्यों को नजरअंदाज कर दें जिन्हें वर्तमान में मान्यता नहीं दी गई है लेकिन अतीत की मानव सभ्यताओं द्वारा मान्यता दी गई थी, तो ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें दैवीय हस्तक्षेप था, या कम से कम हमसे

अधिक उन्नत प्राणियों ने पृथ्वी के इतिहास में हस्तक्षेप किया था।
इस अध्याय को समाप्त करने से पहले, आइए इस अंतिम और सबसे आम प्रश्न का समाधान कर लें:
नासा में अपने अनुभव साझा करने वाले हमेशा सेवानिवृत्त लोग ही क्यों होते हैं?
खुले अंतरिक्ष में सबसे लंबे समय तक काम करने का रिकॉर्ड रखने वाले नासा के पूर्व अंतरिक्ष यात्री एडगर मिशेल ने एक साक्षात्कार में कहा कि नासा के पेशेवरों, वायु सेना के पायलटों और अंतरिक्ष एवं सैन्य क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति के लिए यूएफओ की रिपोर्ट करना बहुत मुश्किल है, क्योंकि यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे अपनी विश्वसनीयता और अपनी नौकरी खोने का जोखिम उठाते हैं।
इसीलिए बहुत से लोग सेवानिवृत्ति तक अपनी बात रखने का इंतजार करते हैं।
सितंबर 2006 में, मिशन एसटीएस-115 के दौरान स्पेस शटल अटलांटिस में 24 दिनों की देरी हुई थी।
पृथ्वी पर लौटने के कुछ घंटों बाद, एक यूएफओ ने अंतरिक्ष यान और वायुमंडल के बीच हस्तक्षेप किया। 72

पृथ्वी पर। मिशन के दौरान, चालक दल ने पास में उड़ते हुए अन्य यूएफओ भी देखे: 5 गोले और एक नलीनुमा वस्तु।

एसटीएस-115 मिशन पर उन्होंने जिन पांच गोलों को देखा, उनमें से दो।

एसटीएस 115 मिशन द्वारा एक अज्ञात नलीनुमा वस्तु और एक अन्य वस्तु को रिकॉर्ड किया गया।
73

जब वे आखिरकार धरती पर उतरे, तो अंतरिक्ष यात्री हाइडेमेरी स्टेफनीशिन-पाइपर फॉक्स, सीएनएन और एनबीसी पर लाइव प्रसारित होने वाली एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में जनता को अपने अनुभव के बारे में बताना चाहती थीं। लेकिन कुछ अजीब हुआ: अपनी बात बताते ही वह बेहोश हो गईं। वह उठीं, फिर कुछ और हुआ और वह एक बार फिर बेहोश हो गईं। उस मिशन के दौरान शटल क्रू के साथ हुए इस यूएफओ अनुभव के बारे में फिर कभी बात नहीं हुई।
क्या ये बेहोशी के दौरे स्वाभाविक थे, भावनाओं के कारण? या शायद ये नासा द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली किसी प्रकार की न्यूरोलॉजिकल तकनीक है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उसके

□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □ □□□□?

74

ATNUGERP 9
समय क्या है? क्या समय यात्रा संभव है?

यही वह चीज है जो हमारे जीवन को नियंत्रित करती है और हमें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं है कि इसे किसने बनाया या यह वास्तव में कुछ है भी या नहीं।
लेकिन हम वास्तव में क्या माप रहे हैं? क्या समय भौतिक रूप से मौजूद है या यह केवल हमारे दिमाग में ही है? पहली नज़र में, इसका जवाब काफी स्पष्ट लगता है—बेशक समय मौजूद है—यह हमारे चारों ओर लगातार घटित होता रहता है और इसके बिना ब्रह्मांड की कल्पना करना बहुत मुश्किल है।
यदि हम स्वयं से यह प्रश्न पूछें कि समय क्या है, तो हम पहले से ही यह मान रहे हैं कि समय कुछ है, और इस अध्याय में आप जो कुछ पढ़ने वाले हैं उसका उल्लेख किए बिना, मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि समय कुछ नहीं है, समय का अस्तित्व ही नहीं है और यह हम में से प्रत्येक की मानवीय चेतना की एक साधारण रचना है।
समय का दिव्य भ्रम, जो हमें एक फिल्म की तरह दिखाई देता है, जिसमें 75 छवियां होती हैं

गति, परिवर्तन, जब केवल एक ही फ्रेम होता है: अनंतता।” – अज्ञात। हमें शत-प्रतिशत ईमानदार होना चाहिए: अतीत यादें हैं, और भविष्य उन अपेक्षाओं का समूह है जो हम चाहते हैं कि घटित हों या जो कोई कह सकता है कि घटित होंगे। एकमात्र निश्चितता जो हमारे पास है, वह है वर्तमान क्षण। यह समझना कठिन है कि वर्तमान क्षण अनंत है, क्योंकि हर पल जब हम इस बात से अवगत होते हैं कि क्या हो रहा है, हम वर्तमान में जी रहे होते हैं। इसीलिए समय का कोई अस्तित्व नहीं है; जो अस्तित्व में है वह छवियों का अनंत सिलसिला है जो वर्तमान में कभी रुके बिना गुजरता रहता है।
लेकिन यादों का क्या? जब मैं किसी चीज को याद करता हूं, तो वह कुछ ऐसा होता है जो पहले ही घटित हो चुका होता है, यानी अतीत में।

जब हम अतीत में घटी किसी घटना को याद करते हैं, तो हम उसे अभी याद कर रहे होते हैं; इसलिए, वे अतीत की यादें मौजूद होती हैं क्योंकि आपका चेतन मन इस समय उन्हें याद करने में सक्षम होता है।
दूसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए, चीजें थोड़ी और जटिल हो जाती हैं, क्योंकि खुद से 76 के बारे में पूछना

समय यात्रा में या तो अतीत का समय शामिल होता है या भविष्य का समय।
इसलिए, पिछले पैराग्राफ में आपने जो पढ़ा है उस पर सवाल उठाया जाना चाहिए।
क्या समय केवल वर्तमान क्षण ही है?
हालांकि इसका उत्तर हां ही है, लेकिन मानव मन में उन घटनाओं को याद रखने की क्षमता भी होती है जो इस समय हो रही घटना से पहले घटित हुई थीं, और इसमें कल्पना और दृश्य-कल्पना के माध्यम से ऐसी स्थितियों को बनाने की क्षमता भी होती है जो अभी तक घटित नहीं हुई हैं।
तो…समय यात्रा वास्तव में संभव है।
अल्बर्ट आइंस्टीन (जिनके बारे में हम आगे चर्चा करेंगे) इस विषय पर ध्यान केंद्रित करने वाले अग्रणी और प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक थे, जिन्होंने कुछ बहुत ही रोचक सिद्धांत प्रस्तुत किए। वर्षों से, कई अन्य वैज्ञानिकों ने उनके शोध को आगे बढ़ाया, और हाल ही में समय विस्तार (जिसका वर्णन आइंस्टीन ने किया था) को एक पूर्णतः वास्तविक घटना के रूप में सिद्ध किया गया है।
77

समय विस्तार का मूल अर्थ यह है कि गतिमान घड़ी के लिए समय स्थिर घड़ी की तुलना में अधिक धीरे-धीरे बीतता है। गुरुत्वाकर्षण बल भी समय के बीतने में अंतर को प्रभावित करता है। क्योंकि

गुरुत्वाकर्षण और गति आपस में संबंधित हैं, इसलिए गुरुत्वाकर्षण जितना अधिक होगा और गति जितनी अधिक होगी, समय में अंतर उतना ही अधिक होगा। उदाहरण: ब्लैक होल।
लेकिन अगर हम समय में यात्रा करना चाहते हैं और रास्ते में मरना नहीं चाहते हैं, तो बेहतर होगा कि हम गति बढ़ाने के विकल्प पर ही टिके रहें।
एक संभावना वर्महोल की है, जिसे आइंस्टीन-रोसेन ब्रिज के नाम से भी जाना जाता है। भौतिक विज्ञानी नाथन रोसेन के साथ, आइंस्टीन ने 1935 में वर्महोल के अस्तित्व का सुझाव दिया था, और हालांकि अभी तक किसी की खोज नहीं हुई है, कई वैज्ञानिकों ने उनके काम करने के तरीके के बारे में अपने-अपने सिद्धांत दिए हैं। अंतरिक्ष कार्यक्रमों की बदौलत यह बात सिद्ध हो चुकी है कि अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर लगी घड़ियों की टिक-टिक की आवाज़ पृथ्वी पर लगी घड़ियों की तुलना में थोड़ी धीमी है। 78 को ध्यान में रखते हुए

क्योंकि स्टेशन की गति तेज़ है और उस पर गुरुत्वाकर्षण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इसलिए समय भी तेज़ गति से बीतता है। यही कारण है कि पृथ्वी पर घड़ियाँ सटीक नहीं होतीं, क्योंकि समय के फैलाव के प्रभाव से पृथ्वी की सतह के जितना करीब होते हैं, समय उतना ही धीमा होता जाता है।
सैटेलाइट जीपीएस इसका एक बेहतर उदाहरण होगा।
आपके मोबाइल फोन में मौजूद जीपीएस चिप इसलिए काम करती है क्योंकि पृथ्वी के चारों ओर 24 उपग्रह हैं जो डिवाइस से जानकारी आने-जाने में लगने वाले समय के आधार पर आपके स्थान का त्रिकोणीकरण करते हैं।
हालांकि, सिस्टम बनाते समय वैज्ञानिकों को पता चला कि उपग्रहों पर लगी परमाणु घड़ियाँ कक्षा में 14,484 किमी/घंटे की गति से घूमने के कारण थोड़ी तेज़ चलती हैं। विशेष रूप से, वे प्रतिदिन 8 माइक्रोसेकंड धीमी हो जाती हैं। यह देखने में मामूली लग सकता है, लेकिन स्थान निर्धारण में त्रुटियाँ पैदा करने के लिए

पर्याप्त है। इसी कारण से, जीपीएस तकनीक समय विस्तार के प्रभावों की भरपाई के लिए घड़ियों में समायोजन करती है। इससे कई सवाल उठते हैं, और हालांकि पहली नजर में वे काफी अजीब लगते हैं, सच्चाई यह है कि वे बिल्कुल भी अजीब नहीं हैं।
79

अगर हमारे पास कोई ऐसा अंतरिक्ष यान होता जो बहुत तेज़ गति से उड़ता, तो पृथ्वी पर लोगों के लिए समय बहुत तेज़ी से बीतता। आप आकाशगंगा की यात्रा कर सकते थे और भविष्य में पृथ्वी पर लौट सकते थे।
आइंस्टीन के समय यात्रा के सिद्धांतों के अनुसार अतीत में जाना असंभव है, लेकिन ये अभी भी केवल सिद्धांत ही हैं। भविष्य में होने वाली कोई खोज इन्हें सही या गलत साबित कर सकती है।
"ऊपरी तौर पर देखने पर, वर्तमान क्षण कई क्षणों में से एक लगता है। आपके जीवन का हर दिन हजारों क्षणों से बना हुआ प्रतीत होता है जिनमें अलग-अलग चीजें घटित होती हैं। लेकिन, अगर आप गहराई से देखें, तो क्या वास्तव में हमेशा एक ही क्षण नहीं होता?"
क्या जीवन हमेशा "यही क्षण" नहीं होता?
– एखार्ट टोल, द पावर ऑफ नाउ 80

ATNUGERP 10
क्यों नहीं बल्कि कुछ नहीं से कुछ तो है?

क्यों पूछकर हम यह जता रहे हैं कि इसका कोई कारण जरूर होगा, और शायद ब्रह्मांड का भी कोई उद्देश्य नहीं है, इसलिए आइए "क्यों" को "कैसे" में बदल दें; शून्य की जगह कुछ कैसे है? शून्य से कुछ कैसे उत्पन्न होता है?
सबसे पहले, हमें अब तक के सबसे लोकप्रिय सिद्धांत यानी बिग बैंग सिद्धांत को ध्यान में रखना होगा, हालांकि इस पर काफी सवाल उठाए जा सकते हैं।
बिग बैंग के अस्तित्व का भी कोई कारण नहीं था, और यहां तक कि इसकी उत्पत्ति का तरीका भी सभी तार्किक व्याख्याओं के विपरीत है, क्योंकि यह विस्फोट कथित तौर पर इसलिए हुआ क्योंकि पदार्थ की मात्रा प्रतिपदार्थ से अधिक हो गई थी।
मानसिक स्तर पर, हमें यह ध्यान रखना होगा कि यदि हमारा अस्तित्व ही न होता या हम सचेत और सोचने में सक्षम न होते, तो हम स्वयं से यह प्रश्न न पूछते।
81

जहां तक हम कह सकते हैं, जैविक स्तर पर हम ही एकमात्र ऐसे जीवित प्राणी हैं जिनमें तर्क करने की क्षमता है, यानी "हम बुद्धिमान हैं"।
अगर हमारा अस्तित्व न होता, तो हमारी दुनिया में कुछ भी अस्तित्व में न होता, लेकिन सब कुछ अस्तित्व में बना रह सकता था क्योंकि हम यहाँ अकेले जीवित प्राणी नहीं हैं; कहने का तात्पर्य यह है कि अन्य प्राणी (जहाँ तक हमें पता है) इस तरह के प्रश्न स्वयं से नहीं पूछते।
इसलिए, अगर हम खुद से यह सवाल पूछ पाते हैं, तो इसका कारण यह है कि कुछ तो है, न कि कुछ भी नहीं, लेकिन फिर भी हम यह कल्पना नहीं कर सकते, और न ही साबित कर सकते हैं कि कुछ भी नहीं मौजूद है। चेतना के एक स्तर पर हम अब भी यह नहीं समझ पाते हैं कि कुछ भी नहीं से कुछ उत्पन्न किया जा सकता है, क्योंकि यह भौतिकी के

नियमों के विरुद्ध होने के साथ-साथ हमारी सोचने की क्षमता के भी विरुद्ध है।
इस मामले में मुख्य बात यह है कि, चाहे यह साबित हो सके या न हो, चाहे यह विश्वसनीय हो या न हो, एकमात्र वास्तविकता यही है कि सब कुछ शून्य से उत्पन्न हुआ है।
क्या आपको लैवोइसियर का नियम याद है? ऊर्जा न तो उत्पन्न होती है और न ही नष्ट होती है, यह केवल रूपांतरित होती है।
82

ब्रह्मांड ऊर्जा है, जो क्वांटम स्तर पर अरबों कणों से मिलकर बना है।
इसलिए?
यह नियम हमें बताता है कि ब्रह्मांड हमेशा से अस्तित्व में रहा है, क्योंकि शून्य से ऊर्जा का निर्माण नहीं किया जा सकता। ताओवादी ब्रह्मांड विज्ञान के अनुसार, प्रकट ब्रह्मांड की रचना से पहले, पूर्ण शून्यता की अवस्था थी। उस आदिम अवस्था में, कुछ भी गतिमान नहीं था। समय की सापेक्षिक अवधारणा उस आदिम अवस्था में लागू नहीं होती थी, क्योंकि उसकी तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं था। सब कुछ शून्यता था।
लेकिन सबसे पहले हम यह पुष्टि करना चाहते हैं कि इसका सृजन हुआ था, कि ब्रह्मांड का अस्तित्व है और हम नहीं जानते कि यह कैसे हुआ।
इस मुकाम पर पहुँचकर, जहाँ हमें कोई ठोस प्रगति नहीं दिख रही है, ऐसा लगता है कि इस सवाल पर ज्यादा विचार न करना ही सबसे समझदारी भरा कदम होगा। हम सचमुच यह नहीं जान सकते कि यह क्यों बना, और यह तो बिल्कुल भी नहीं कि यह कैसे बना।
सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं द्वारा प्रतिपादित बहुत अच्छे सिद्धांत हैं, यहाँ तक कि नियम भी हैं, लेकिन 83 के बाद से

हालांकि मेरा दृष्टिकोण सत्य के काफी करीब प्रतीत होता है, लेकिन यह पूर्ण सत्य से बहुत दूर है।

84

ATNUGERP 11
एक ऐतिहासिक वृत्तांत पर मेरी राय: बाइबिल

बाइबल विश्वासियों के लिए ईश्वर का वचन है, क्योंकि इसकी दिव्य प्रेरणा उनके लिए निर्विवाद है।
यह एक अत्यंत आध्यात्मिक ग्रंथ है जो मानवता के इतिहास, उसकी उत्पत्ति, पाप में उसके पतन और उसके उद्धार का वर्णन करता है, और यह बताता है कि सृष्टिकर्ता ईश्वर ने मानवजाति के साथ कैसा संबंध रखा है, रख रहा है और भविष्य में रखेगा। इसी प्रकार, बाइबल ईश्वर के गुणों और चरित्र को प्रकट करती है।
लेकिन बाइबिल ही एकमात्र धर्म नहीं है।
रब्बीनिक समुदाय तालमुद को सिद्धांत का स्रोत मानता है, जबकि कराटे समुदाय 8 वीं शताब्दी से ही तनाख को आस्था का एकमात्र स्रोत मानता आया है।
पिछले अध्यायों में हमने उन प्रश्नों के उत्तर दिए हैं जिनका उपयोग ईश्वर के अस्तित्व या गैर-अस्तित्व पर व्यापक रूप से प्रश्न उठाने के लिए किया जा सकता है, लेकिन मैं उस पर ध्यान केंद्रित नहीं करूंगा क्योंकि, मेरी राय में, 85 वें अध्याय की सामग्री इस विषय पर पर्याप्त जानकारी प्रदान करती है।

पिछले प्रश्नों में, प्रत्येक व्यक्ति किसी चीज के अस्तित्व या गैर-अस्तित्व के संबंध में अपना स्वयं का उत्तर तैयार कर सकता है।
मेरी राय विशेष रूप से बाइबिल नामक पुस्तक के बारे में है, न कि उसमें कही गई बातों के बारे में।
मुझे आपके साथ ईमानदार रहना होगा, मैंने कभी बाइबिल नहीं पढ़ी है, मैंने केवल इसके उद्गम और तर्कों को समझने के लिए पर्याप्त सुना, देखा और पढ़ा है।
मुझे लगता है कि, डिवाइन कॉमेडी की तरह, बाइबिल एक साहित्यिक वृत्तांत है जिसमें वैज्ञानिक आधार का अभाव है, लेकिन अगर इसमें किसी चीज की कमी नहीं है, तो वह है इसमें कही गई बातों पर विश्वास करने वालों में आस्था।

तो क्या यह सच हो सकता है?
एक मुहावरा है जिसका मैं पहले बहुत इस्तेमाल करता था, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह पूरी तरह सही नहीं है: "अगर बहुत सारे लोग कुछ सोचते/करते हैं, तो वे सभी गलत नहीं हो सकते।"
और सच तो यह है कि हां, वे ऐसा कर सकते हैं।
मुझे ऐसा क्यों लगता है? क्योंकि मुंह से कही गई बातों या झूठ के मामले में भी यही होता है।
जब हम कुछ पढ़ते हैं और फिर दूसरों को बताते हैं, तो जानकारी को विकृत करने का बहुत अधिक जोखिम होता है क्योंकि दो कारक इसे प्रभावित करते हैं: 86

1. हम इसे कितनी अच्छी तरह से बता पाते हैं और 2.
दूसरा व्यक्ति हमें कितनी अच्छी तरह समझ पाता है?
बाइबल एक बहुत प्राचीन ग्रंथ है जो पीढ़ी दर पीढ़ी लाखों लोगों के मुंह और कानों से होकर गुजरता रहा है।
इसे 2,303 अलग-अलग भाषाओं में लिखा गया है। इसकी क्या गारंटी है कि हर किताब में बिना किसी हस्तक्षेप के यह बिल्कुल एक ही बात कहेगा? इसकी क्या गारंटी है कि इसे पढ़ने वाला हर व्यक्ति बिल्कुल एक ही बात समझेगा? और इसे लिखने वाले हर व्यक्ति के बारे में क्या?
मैं खुद को आस्तिक या नास्तिक नहीं मानता, मैं बस अस्तित्व में मौजूद चीजों पर सवाल उठाता हूं और अपने खुद के विचार बनाता हूं। यह विश्वसनीयता की बात नहीं है, बल्कि यह इस बात की बात है कि प्रत्येक व्यक्ति क्या मानता है।
मैं बाइबल के बिल्कुल भी खिलाफ नहीं हूं क्योंकि मेरा मानना है कि इसने हजारों वर्षों से दुनिया की आबादी को शांत और आज्ञाकारी बनाए रखने में मदद की है, जो कुछ हद तक अच्छी बात है (मैं दस आज्ञाओं की बात कर रहा हूं)।
लेकिन इसके अलावा, हम इस पर उसी तरह सवाल उठा सकते हैं जैसे हम वैज्ञानिक नियमों और सिद्धांतों पर सवाल उठाते हैं।
87

सबसे बड़ी गलती किसी एक ही सत्य को मानकर चलना है, जो आपको अस्तित्व में मौजूद अन्य सभी दुनियाओं को देखने से रोकता है। हमें अनिश्चितताओं को स्वीकार करना और उनकी जांच करना सीखना चाहिए, न कि बिना किसी सबूत या समर्थन के दिलासा देने वाले झूठ गढ़ना और उनका बचाव करना।
“मान लीजिए कि आप एक पल के लिए सही हैं, और बाइबल वास्तव में एकमात्र सच्चे ईश्वर का अचूक वचन है। तो हम कुरान, तालमुद, मॉर्मन की पुस्तक, वेद, अवेस्ता और मिस्र की मृतकों की पुस्तक के बारे में क्या कहेंगे? क्या आपको यह कहने का मन नहीं करता कि ये ग्रंथ हाड़-मांस के मनुष्यों (या शायद राक्षसों) द्वारा रचित जटिल काल्पनिक रचनाएँ हैं? और पाठक ऑगस्टस और क्लॉडियस जैसे रोमन सम्राटों की दिव्यता को कैसे देखते हैं? रोमन सीनेट ने मनुष्यों को देवता बनाने की शक्ति होने का दावा किया और फिर साम्राज्य की प्रजा से इन देवताओं की पूजा करने की अपेक्षा की। क्या यह काल्पनिक नहीं था?” - पुस्तक “21” से उद्धरण
21 वीं सदी के लिए सबक।"

88

ATNUGERP 12
क्या कोई एक सर्वोच्च सत्ता है?

यह प्रश्न जटिल प्रतीत होता है, लेकिन इसमें एक छोटी सी बात है, इसमें "अद्वितीय" शब्द का प्रयोग किया गया है, इसलिए इसका उत्तर देने का प्रयास करने के लिए हमें यह देखना होगा कि क्या कई सर्वोच्च सत्ताएं हैं, और इसका खंडन या पुष्टि करके हम शांतिपूर्वक इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं।
इतिहास और यहां तक कि जिस युग में हम रहते हैं, वह भी विभिन्न संस्कृतियों में कई सर्वोच्च सत्ताओं (जिन्हें हम ईश्वर कह सकते हैं) के अस्तित्व को निर्विवाद रूप से इंगित करता प्रतीत होता है, इसलिए संक्षिप्त उत्तर होगा नहीं, कोई एक सर्वोच्च सत्ता नहीं है।
सवाल यह है कि इसका अस्तित्व है या नहीं। हम दो अध्यायों में अस्तित्व पर चर्चा कर चुके हैं, इसलिए अब बस शब्दों के साथ खेलकर इसका जवाब खोजने की कोशिश करनी बाकी है, हालांकि मेरे दृष्टिकोण से इस प्रश्न का कोई तार्किक, वस्तुनिष्ठ या सत्य उत्तर नहीं है।
किसी श्रेष्ठ वस्तु के अस्तित्व या गैर-अस्तित्व पर विचार करना पहले से ही अनावश्यक है, क्योंकि 89

इसका उत्तर हमारी तार्किक और कल्पनाशील समझ से परे है, और अब खुद से यह पूछना कि क्या कोई एक सर्वोच्च सत्ता है, और भी अधिक अतार्किक और कल्पनाहीन है।
हम प्राचीन सभ्यताओं की कहानियों पर टिके रह सकते हैं, उनमें से किसी एक पर विश्वास करके उत्तर प्राप्त कर सकते हैं, या हम उनमें से किसी पर भी विश्वास न करके भी उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।
अगर कोई एक बात निर्विवाद रूप से सिद्ध है, तो वह यह है कि सब कुछ ऊर्जा है।

मुश्किल बात यह है कि अगर हम किसी सर्वोच्च, सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान सत्ता के अस्तित्व का सहारा लेते हैं, तो हम उस सत्ता के अस्तित्व की व्याख्या कैसे करेंगे?
शायद, यदि सब कुछ ऊर्जा है, तो वह सत्ता भी ऊर्जा होगी, और ऊर्जा को न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है, केवल रूपांतरित किया जा सकता है। और यहीं से हम समय के अध्याय पर आते हैं, जहाँ केवल शाश्वत वर्तमान ही विद्यमान है।
क्या सर्वोच्च सत्ता या ईश्वर अनंत ऊर्जा है जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत?
संभवतः इस पृथ्वी पर अब तक जितने भी जैविक प्राणी रहे हैं, वे सभी किसी एक आदिम रूप से उत्पन्न हुए हैं, 90

जिसमें सर्वप्रथम जीवन का संचार हुआ... जीवन की उत्पत्ति के बारे में इस मत की अपनी महानता है... क्योंकि जब से यह ग्रह गुरुत्वाकर्षण के स्थिर नियम के अनुसार घूम रहा है, तब से इस सरल शुरुआत से अनगिनत रूप विकसित हुए हैं और विकसित होते जा रहे हैं, जो सबसे सुंदर और सबसे अद्भुत हैं।
चार्ल्स डार्विन - द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज, 1859

91

ATNUGERP 13
सब कुछ एकदम सही तरीके से हुआ है: नियति या संयोग?

मैंने "सब कुछ" शब्द का प्रयोग शाब्दिक रूप से उन सभी चीजों के लिए करने का निर्णय लिया जिन्हें हम जानते हैं; मूल रूप से ब्रह्मांड और हमारे शरीर दोनों का जिक्र करते हुए।

हमने पहले भी कहा था कि पृथ्वी पर जीवन के लिए परिस्थितियाँ बहुत ही दुर्लभ हैं, और यही एक कारण है कि जीवविज्ञानी अन्यत्र जीवन के अस्तित्व पर संदेह करते हैं।
यह सच है, हमने यह भी कहा था कि संभाव्यता के आधार पर ऐसा होने के लाखों अवसर हैं, और ज्योतिषीय दृष्टि से भी हमारे ग्रह के समान ग्रह पहले ही खोजे जा चुके हैं। फिर भी, चाहे वह हमारा ग्रह हो या उससे मिलता-जुलता कोई अन्य ग्रह, ऐसा लगता है कि सब कुछ इतनी कुशलता से व्यवस्थित है कि परिणामस्वरूप अन्य समान रूप से परिपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।
92

यह विरोधाभासी रूप से ऐसा प्रतीत होता है मानो अराजकता की विशालता में पूर्णता का राज हो।
इन्हीं मुद्दों के कारण धार्मिक आस्था रखने वाले लोग हमेशा अपने सृष्टिकर्ता देवताओं से जुड़े रहते हैं, क्योंकि यह सब एक परी कथा जैसा लगता है जिसमें जादू मौजूद होता है, क्योंकि इन मुद्दों को समझने के लिए ज्ञात स्पष्टीकरण के अलावा कोई अन्य स्पष्टीकरण नहीं है।
हमारे पास शुरुआत करने के लिए कोई जगह नहीं है, इसलिए बिना किसी शुरुआती बिंदु के किसी उत्तर तक पहुंचना सबसे जटिल काम है जिसकी कल्पना की जा सकती है।
हम सभी की अपनी-अपनी मान्यताएं होती हैं, कभी-कभी व्यक्तिगत और अक्सर लोगों के समूह के साथ साझा की जाती हैं, लेकिन वे मान्यताएं ही होती हैं।
यदि ब्रह्मांड और मानवजाति की संपूर्ण परिपूर्ण रचना नियति की कृपा से हुई होती, तो हम यह मान लेते कि सब कुछ पहले से ही निर्धारित था, कि सब कुछ अपने आप ही घटित होता है; दूसरी ओर, यदि हम संयोगों में विश्वास करना चुनते हैं, तो कम से कम हम ब्रह्मांड को उसकी वास्तविक स्थिति में रहने का अवसर दे रहे होते, एक ऐसी अराजकता जहाँ सब कुछ यादृच्छिक रूप से, संयोगवश घटित होता प्रतीत होता है।

मैं इसमें कारणता शब्द को जोड़ना चाहूंगा, क्योंकि यह हमें दोनों चीजों को एक साथ लाने में मदद करता है।
93

यह सच है कि सब कुछ अनायास ही घटित होता प्रतीत होता है, हालांकि साथ ही साथ ऐसा भी लगता है कि एक नियति है और सब कुछ इसलिए होता है क्योंकि ऐसा होना ही है।
लेकिन हर चीज का एक कारण होता है, और परिणामस्वरूप उसका एक प्रभाव भी होता है: कारणता।
यह शब्दों का एक साधारण खेल है, जो पूर्ण सत्य से बहुत दूर है। शायद आज हम जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, उनसे इसका उत्तर देना भी संभव नहीं है।
अव्यवस्था में आश्चर्यजनक पूर्णता। मानव शरीर एक सच्ची मशीन है, जो सामान्यतः शरीर के संरक्षण के लिए पूर्णतः कैलिब्रेटेड होती है।
"होमियोस्टेसिस" या "संतुलन" कई प्रणालियों के संयुक्त कार्य से प्राप्त होता है: तंत्रिका तंत्र, जिसके मुख्य घटक मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी हैं, जो अन्य शारीरिक प्रणालियों को उनके कार्यों को नियंत्रित करने के लिए संकेत भेजते हैं; हृदय प्रणाली, जिसके मुख्य घटक हृदय और रक्त वाहिकाएं हैं, जो ऑक्सीजन और पोषक तत्वों से युक्त रक्त को शरीर की सभी कोशिकाओं तक पहुंचाने और इन कोशिकाओं से अपशिष्ट पदार्थों को फेफड़ों तक ले जाने के लिए जिम्मेदार हैं; अंतःस्रावी तंत्र, 94

जो शरीर में वांछित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए विशिष्ट लक्ष्य कोशिकाओं पर कार्य करने के लिए विभिन्न ग्रंथियों से हार्मोन स्रावित करता है।
ये और अन्य प्रणालियाँ (जैसे पाचन, श्वसन और प्रतिरक्षा प्रणाली) जिन जटिल तंत्रों द्वारा काम करती हैं और शरीर को स्वस्थ बनाए रखने में सक्षम बनाती हैं, वे हमारे शरीर की मूलभूत

कार्यात्मक इकाई: कोशिका के सामूहिक कार्य के कारण संभव हैं; यद्यपि इसका आकार छोटा है, इसकी संख्या असंख्य है, जिसमें 10 करोड़ पुर्जे एक साथ काम करते हैं ताकि शरीर रूपी इस मशीन को बनाने वाली विभिन्न प्रणालियाँ सामंजस्यपूर्ण ढंग से कार्य कर सकें।
स्वर्ण अनुपात, जिसे दिव्य संख्या के रूप में भी जाना जाता है, हमारे द्वारा ज्ञात प्रत्येक चीज की रचना में पाया जाता है, जो न केवल ज्यामितीय आकृतियों में बल्कि प्रकृति में भी हर जगह दिखाई देता है।
मैं इसे इस अध्याय में भी शामिल कर रहा हूँ ताकि आप और भी बेहतर ढंग से देख सकें कि हर चीज कितनी परिपूर्णता से बनाई गई प्रतीत होती है।
95

1- मानव शरीर में। यह पता चला है कि किसी व्यक्ति की लंबाई और उसकी नाभि से हथेली के सिरे तक की दूरी का अनुपात स्वर्ण अनुपात कहलाता है। शायद सबसे रोचक उदाहरण नाभि से संबंधित है: यदि आप किसी व्यक्ति की कुल लंबाई को उसकी नाभि से पैरों तक की दूरी से भाग दें, तो आपको स्वर्ण अनुपात प्राप्त होता है। दंत चिकित्सा में शोध से पता चला है कि दांत स्वर्ण अनुपात के अनुसार बढ़ते हैं। हमारे हाथों में, उंगलियों की हड्डियां स्वर्ण क्रम में व्यवस्थित होती हैं।
2- दृश्य कलाओं में। यह ईसा पूर्व 5 वीं शताब्दी में दिखाई देता है।
एथेंस में, यूनानियों को इसके बारे में जानकारी थी और वे इसका उपयोग स्थापत्य और मूर्तिकला में करते थे। इसका उपयोग जिन सबसे प्रसिद्ध इमारतों में किया गया है, उनमें से एक पार्थेनन है। हमें न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र भवन में भी स्वर्ण आयत और उसके खंडों के अनुपात मिलते हैं।
3- संगीत में। मोजार्ट के कई पियानो सोनाटा में, धुन के विकास और उसके परिचय के बीच का अनुपात स्वर्ण अनुपात के जितना संभव हो

उतना करीब है। हालाँकि यह ज्ञात नहीं है कि बीथोवेन को इसकी जानकारी थी, फिर भी 96 में उन्होंने इसका उल्लेख किया।

उनकी पांचवीं सिम्फनी में थीम को गोल्डन रेशियो के अनुसार वितरित किया गया है। पियानो जैसे वाद्ययंत्रों पर, जिसमें सबसे निचले से सबसे ऊंचे स्वरों तक व्यवस्थित सात सप्तक होते हैं, फिबोनाची अनुक्रम के पहले छह अंक, जो गोल्डन रेशियो के समान हैं, पियानो के एक सप्तक में दिखाई देते हैं, जिसमें 13 कुंजियाँ होती हैं: 8 सफेद कुंजियाँ और 5 काली कुंजियाँ, 2 और 3 के समूहों में।
4- गणित में, स्वर्ण अनुपात या स्वर्ण संख्या उन सभी नियमित या अर्ध-नियमित ज्यामितीय वस्तुओं में मौजूद होती है जो पंचकोणीय समरूपता प्रदर्शित करती हैं, पंचकोण होती हैं, या किसी न किसी रूप में उनमें वर्गमूल पाँच समाहित होता है। यह प्लेटोनिक ठोसों, विशेष रूप से आइकोसाहेड्रॉन और डोडेकाहेड्रॉन से संबंधित है, जिनके आयाम स्वर्ण अनुपात के संदर्भ में दिए जाते हैं।
5- प्रकृति में। ऐसे कई तत्व हैं जो स्वर्ण अनुपात या फिबोनाची अनुक्रम से संबंधित हैं और उनमें बहुत समानता पाई जाती है। जैसे फूलों की पंखुड़ियों की व्यवस्था, तने पर पत्तियों का वितरण।
97

वृक्ष की पत्तियों की शिराओं के बीच का संबंध। मुख्य शाखाओं और तने की मोटाई के बीच का संबंध, या मुख्य और द्वितीयक शाखाओं के बीच का संबंध। चीड़ के शंकु में पत्तियों के चक्रों की संख्या। ये संख्याएँ फिबोनाची अनुक्रम के तत्व हैं, और किन्हीं भी दो लगातार तत्वों का अनुपात स्वर्ण अनुपात की ओर प्रवृत्त होता है। उदाहरण के लिए, 3, 5 और 8 पंखुड़ियों वाले फूलों में पंखुड़ियाँ होती हैं, जबकि अन्य में 13, 21, 34, 55, 89 और 144

पंखुड़ियाँ होती हैं। यह पैटर्न हमारे डीएनए में मौजूद है, और हम इसे अनगिनत अन्य उदाहरणों में भी देख सकते हैं।
यह पूरी तरह से पागलपन जैसा लगता है क्योंकि यह पूरी तरह से सच और सिद्ध है, सब कुछ उसी ओर इशारा करता है जिसका मैंने पिछले पैराग्राफ में उल्लेख किया है, अराजकता में पूर्णता।
यह परिपूर्ण और अद्भुत दुनिया किसके लिए बनाई गई थी? क्या हम अब भी कह सकते हैं कि यह सब महज एक संयोग है?
क्या आपको यकीन है कि हमारे आसपास की हर चीज...

उत्तम?

98

एटीएनयूजीईआरपी 14
आयाम क्या हैं, इन्हें किसने बनाया और ये कितने प्रकार के हैं?

स्थानिक परिप्रेक्ष्य से, आयाम वे मापदंड हैं जिनका उपयोग भौतिक विज्ञानी वास्तविकता का वर्णन करने के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, मनुष्य तीसरे आयाम में विद्यमान हैं क्योंकि वे चौड़ाई, लंबाई और गहराई को महसूस कर सकते हैं।
लेकिन 1905 में, अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक नया सिद्धांत प्रस्तुत किया: विशेष सापेक्षता का सिद्धांत, जिसमें समय को चौथे आयाम के रूप में शामिल किया गया। यह आयाम अंतरिक्ष में और किसी विशिष्ट क्षण में किसी वस्तु की स्थिति का पता लगाने के लिए आवश्यक है, और यह हमारे द्वारा ज्ञात अन्य तीन आयामों का पूरक है।
इससे ब्रह्मांड की वह व्याख्या हो जाएगी जिसे हम (मनुष्य) जानते हैं, क्योंकि हम तीसरी विमा में सब कुछ देख सकते हैं और सैद्धांतिक रूप से चौथी विमा में भी मौजूद हैं।
जैसा कि हमने अध्याय 9 में चर्चा की थी, समय वास्तविकता का एक निरंतर क्रम है; हम हर चीज़ को "सीधी रेखा में" घटित होते हुए देखते हैं, जो कि 99 होगा।

प्रतिनिधित्व का वह स्वरूप जो चौथे आयाम में होगा।
आयामों का विषय बहुत व्यापक है, लेकिन चूंकि हम हर चीज पर सवाल उठाने वाले हैं, इसलिए सभी मौजूदा सिद्धांतों में गहराई से जाना आवश्यक नहीं है; फिर भी, हमें उन्हें ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि आजकल वे उत्तर के सबसे करीब हैं।
आयामों को और गहराई से समझने के लिए हमारे पास सबसे लोकप्रिय सिद्धांतों में से एक है: स्ट्रिंग सिद्धांत। इस सिद्धांत का उद्देश्य ब्रह्मांड की कार्यप्रणाली का वर्णन करने वाले दो मुख्य सिद्धांतों को एकीकृत करना है: सामान्य सापेक्षता (जो बहुत बड़ी वस्तुओं पर लागू होती है) और क्वांटम यांत्रिकी (जो बहुत छोटी वस्तुओं पर लागू होती है)।
स्ट्रिंग सिद्धांत के अनुसार, उल्लिखित चार आयामों के अलावा सात और आयाम हैं, जिससे कुल ग्यारह आयाम हो जाते हैं।

वैज्ञानिकों ने महसूस किया कि चार-आयामी ब्रह्मांड में यह सिद्धांत संभव नहीं होगा, लेकिन जब उन्होंने दस आयामों (समय सहित ग्यारह) को शामिल करने के लिए गणितीय समीकरणों को संशोधित किया, तो समीकरण सही साबित हुए।
स्ट्रिंग सिद्धांत के अनुसार, पांचवां आयाम हमें बताता है कि यह एक थोड़ी अलग दुनिया है। 100

हमारे अपने दृष्टिकोण से, जिससे हम समानताओं और भिन्नताओं का मूल्यांकन कर सकें। मूलतः, यह इसके बारे में है।
ऐसी "वैकल्पिक दुनियाएँ" जहाँ, उदाहरण के लिए, हमारे जीवन में केवल एक निर्णय बदलने से ही सब कुछ बदल जाएगा।
छठा आयाम समान प्रारंभिक स्थितियों वाले सभी संभावित संसारों का तल है और इसे इस प्रकार समझाया गया है: इस तल में अतीत में जाए बिना पाँचवें आयाम की विभिन्न वास्तविकताओं के बीच यात्रा करना संभव है, क्योंकि यहाँ न तो अतीत है, न वर्तमान और न ही भविष्य; हम सभी उन सभी में विद्यमान हैं और हम जब चाहें और विभिन्न वास्तविकताओं में से किसी में भी जा सकते हैं।
उदाहरण के लिए: हम लंबी दूरी तय किए बिना एक समयरेखा से दूसरी समयरेखा में कैसे जा सकते हैं? ठीक वैसे ही जैसे दो से तीन आयामों में परिवर्तन हुआ: ब्रह्मांड को मोड़कर, और इसके लिए हमें छठे आयाम की आवश्यकता होती है।
सातवां आयाम विभिन्न प्रारंभिक स्थितियों वाले सभी संभावित संसारों का एक तल है, जो छठे आयाम के समान है, लेकिन इस मामले में प्रत्येक तल में शुरुआत अलग-अलग होती है।
101

आठवें आयाम में, विभिन्न ब्रह्मांड एक में संकुचित हैं, जो सातवें आयाम में यात्रा के लिए आवश्यक है। ये ब्रह्मांड हमारे ब्रह्मांड से भिन्न प्रकार से उत्पन्न हुए हैं, और इनमें मौजूद पदार्थ हमारे ज्ञात पदार्थ से भिन्न हैं।

नौवें आयाम में सभी संसार संभव हैं, जिनकी शुरुआत सभी संभावित प्रारंभिक स्थितियों और भौतिक नियमों से होती है, जो आज हम उन्हें जिस तरह से जानते हैं उससे पूरी तरह से अलग हैं।
दसवें आयाम में संभावनाएं अनंत हैं, और चित्रात्मक रूप से, यह केवल एक बिंदु होगा, जैसे कि आरंभ। लेकिन एक अलग बिंदु प्राप्त करने और प्रक्रिया को जारी रखने के लिए एक रेखा खींचने के लिए, हमें अन्य संभावित अनंतताओं की कल्पना करनी होगी, और यह अब संभव नहीं है। हमने ब्रह्मांड के सभी संभावित आरंभों और उसके सभी संभावित विकासों पर विचार कर लिया है; हम इससे आगे नहीं जा सकते।
ठीक है, स्ट्रिंग थ्योरी के अनुसार ये आयाम होंगे, और ये स्थानिक आयाम हैं, लेकिन सिक्के का एक दूसरा पहलू भी है: हमारी चेतना के आयाम।
102

सात आध्यात्मिक आयाम: इन स्तरों पर स्थित आयाम ऊर्जावान कंपन के स्तरों और उनके संबंधित समझ के स्तरों द्वारा नियंत्रित होते हैं, जिन्हें प्रत्येक प्राणी अपने जीवन भर क्रमिक रूप से प्राप्त करता है, क्योंकि उसके अनुभव से प्राप्त ज्ञान उसकी चेतना का विस्तार करता है। ये समझ, ज्ञान और ऊर्जावान मुक्ति के स्तर हैं।

103

पहला आयाम
पहला आध्यात्मिक आयाम सृजनात्मक है, क्योंकि क्वांटम स्तर पर यहीं ऊर्जा पदार्थ में परिवर्तित होती है। इसी आयाम में आज हम

जो कुछ भी जानते हैं—जीवन और संपूर्ण ब्रह्मांड—की उत्पत्ति हुई है।
यह आयाम अस्तित्व का मैट्रिक्स है, और इस प्रकार यह चक्रीय तरीके से सातवें आयाम से जुड़ा हुआ है।
दूसरा आयाम
दूसरा स्तर मौलिक आयाम है, जहां इस अवस्था में बुनियादी और विशुद्ध रूप से सहज जीवन का निर्माण होता है।
यह वह आयाम है जहां अधिकांश पशु और पौधे पाए जाते हैं।
तीसरा आयाम
तीसरा आयाम भौतिक जगत है। यहीं मनुष्य निवास करते हैं। सात आयामों के इस चरण में, हम स्वयं को तर्कसंगत और स्वतंत्र प्राणी के रूप में समझते हैं, जो अपनी पहचान और धारणाएँ रखने में सक्षम हैं।
104

इस आयाम को सबसे मौलिक माना जाता है क्योंकि यहीं पर हम समग्रता की आत्म-जागरूकता सीखते हैं और अपने व्यक्तिगत अनुभवों को जीते हैं।
चौथा आयाम
यह वह अंतिम आयाम है जहाँ हम भौतिक प्राणी बने रहते हैं। इस आयाम में, ऐसा कहा जाता है कि हम अपने आस-पास मौजूद दुनिया से परे की दुनिया को देख सकते हैं। इसे सूक्ष्म जगत के नाम से जाना जाता है।
हम भावनाओं, संवेदनाओं और सपनों को समझते हैं। जिस तीव्रता से हम उन्हें अनुभव करते हैं, उसके आधार पर हमारा विकास तीसरे या पहले आयाम की ओर अधिक झुकेगा। इस आयाम में, हम यह भी समझते हैं कि हमारे कार्यों का हमारे आस-पास के वातावरण पर प्रभाव पड़ता है।
जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो उसकी चेतना चौथी विमा में चली जाती है, मानो वह "सुरंग के अंत में प्रकाश" से गुज़र रहा हो। जैसा कि हमने अध्याय पाँच में चर्चा की थी, मृत्यु के निकट के अनुभवों से गुज़रे लाखों लोगों ने इसका वर्णन किया है।

इस आयाम में तथाकथित निहित है
“स्वप्नों की दुनिया” या सपनों का संसार और यह 105 है

इसे चौथे आयाम से पाँचवें आयाम में संक्रमण कहा जाता है। यह वह आवृत्ति है जिस पर हमें यह अहसास होने लगता है कि हम केवल एक भौतिक शरीर नहीं हैं, और हम भौतिक इंद्रियों से परे अनुभव करने लगते हैं।
पांचवां आयाम
चेतना की यह अवस्था शाश्वत है। कहा जाता है कि यहीं पर सिद्ध पुरुष और आध्यात्मिक मार्गदर्शक एकांतवास करते हैं। यह ऊर्जा का वह आयाम है जहाँ हम अपनी आवृत्ति पर कंपन करने वाले प्राणियों के साथ मिलकर उच्च आयामों के प्राणी का निर्माण कर सकते हैं।
यह वह आयाम है जहां हमें याद आता है कि हम कौन हैं, और हमारी आंतरिक बुद्धि जागृत होती है।
हमने विकसित की गई सामूहिक बुद्धि के उच्च स्तर के कारण नश्वर शरीरों से अनंत आत्माओं में परिवर्तन कर लिया है। इस अवस्था में, हम पूर्वलोकों की अन्य आत्माओं के लिए मार्गदर्शक बनने का विकल्प चुन सकेंगे।
छठा आयाम
इस आयाम में, व्यक्ति संपूर्णता की जिम्मेदारी लेता है और स्वयं संपूर्णता बन जाता है। 106 में

छठा आयाम, चेतना की अवस्था, हमें पहले तीन आयामों की कोशिकाओं की कल्पना करने की अनुमति देगा।
इसे ज्ञानोदय का आयाम भी कहा जाता है, जिसे रहस्यवादी सच्ची वास्तविकता के रूप में जानते हैं; बौद्ध इसे कहते हैं “निर्वाण”।
सातवां आयाम

इस कंपन स्तर पर, ऊर्जा भौतिक शरीर से अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है; अर्थात्, आध्यात्मिक शरीर भौतिक शरीर से परे हो जाता है। यह अस्तित्व के पूर्ण एकीकरण की आवृत्ति है। हम इस अवस्था तक तभी पहुँच सकते हैं जब हम शुद्ध प्रेम हों और हमारी ऊर्जा उसी प्रकार कंपन करे।
इस आयाम में कोई रूप नहीं होते, केवल रंग और ध्वनियाँ होती हैं। हालाँकि, इस स्तर पर हम केवल उस स्व को जानते हैं जो दूसरों के साथ मिलकर बनता है, फिर भी हम अपने द्वारा अनुभव की जाने वाली अवस्थाओं के प्रति भी जागरूक होने में सक्षम हैं।
चेतना का प्रत्येक नया स्तर और प्रत्येक उच्च आयाम, प्राणी के विकास के साथ-साथ सामूहिक रूप से या व्यक्तिगत रूप से प्रकट होगा।
107

हालांकि मैंने इन सात आध्यात्मिक आयामों का उल्लेख किया है, लेकिन कहा जाता है कि इससे भी अधिक, यहां तक कि 13 आयाम हैं, लेकिन हमारी विशाल मानवीय समझ हमें केवल सातवें आयाम तक ही पहुंचने की अनुमति देती है।
ये आयाम वर्तमान क्षण में मौजूद हैं, हालांकि हर कोई उनमें से प्रत्येक को महसूस नहीं कर सकता है।
जैसा कि आप देखेंगे, भौतिकी के स्थानिक आयाम और आध्यात्मिक आयाम बहुत अलग नहीं हैं, क्योंकि क्वांटम स्तर पर उनकी शुरुआत समान है।
क्या होगा यदि स्थानिक आयाम आध्यात्मिक आयामों की पुष्टि हों? दोनों हमें एक चक्रीय अंत के साथ शुरुआत की कहानी बताते हैं, और दोनों यह वर्णन करते हैं कि ऊर्जा कैसे पदार्थ में परिवर्तित होती है, और यही तब से होता आ रहा है जब से... हम सचेत हुए हैं? क्योंकि यही तो मूल मुद्दा है। सभी सिद्धांत मनुष्यों द्वारा ही बनाए जाते हैं, वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करके, हाँ, लेकिन फिर भी मनुष्यों द्वारा ही।

और ये सब चीजें चेतना के एक निश्चित स्तर की बदौलत हासिल होती हैं, जो हमें अपने अवलोकन के अनुसार तर्क करने, सोचने और निष्कर्ष निकालने की अनुमति देती है।
108

लेकिन अगर इंसान होते ही नहीं तो क्या होता? हमें आयामों के बारे में कैसे पता चलता? कौन हमें यकीन दिला सकता है कि वे मौजूद हैं? हम उन्हें कैसे बनाते?
ऐसा नहीं है कि हम जीवन भर चीजों का आविष्कार करते रहते हैं, लेकिन शायद अगर हमारे पास चेतना न होती तो कुछ भी अस्तित्व में न होता।
इसलिए, आध्यात्मिक आयाम बिल्कुल भी बेतुके नहीं हैं, और स्थानिक आयाम हमारी चेतना के अनुसार पहले से मौजूद चीजों की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं, भले ही वे सिद्धांत हों।

109

ATNUGERP 15
हमारे मस्तिष्क के एक भाग को क्यों कहा जाता है?
“सरीसृप”? क्या हम सरीसृप हैं?

मस्तिष्क के एक भाग को इस नाम से जाना जाता है
"रेप्टिलियन" शब्द न्यूरोसाइंटिस्ट मैक्लीन के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने 1952 में मानव मस्तिष्क को तीन भागों में विभाजित किया था: रेप्टिलियन कॉम्प्लेक्स, लिम्बिक सिस्टम और नियोकोर्टेक्स।
मैकलीन के अनुसार, सरीसृप परिसर, जो सबसे पहले प्रकट होता है, वह संरचना होगी जो वर्तमान समय में जीवित रहने के लिए सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा करती है; यह उस हिस्से की तरह है जो सहज प्रवृत्ति से काम करता है और हमें जीवित रहने में मदद करता है; वे आवेगों की तरह हैं।
मस्तिष्क का सबसे आदिम भाग होने के नाते, सरीसृप मस्तिष्क सत्ता की लत से भी जुड़ा हुआ है, जहाँ केवल स्वयं को ही महत्व दिया जाता है। अहंकार को याद है?
110

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अन्य स्तनधारियों और सरीसृपों के साथ इस समान मस्तिष्क को साझा करते हैं।
हम बाकी दो भागों पर चर्चा नहीं करेंगे क्योंकि यह प्रासंगिक नहीं है; मैं चाहता हूं कि आप अभी इसी पर ध्यान दें।
लेकिन अगर आपने कभी सुना है कि हम "सरीसृप" हैं, तो यह उतना भी अजीब नहीं होगा जितना आपने सोचा था।
रेप्टिलियन कहाँ से आए और उनकी क्या भूमिका है?
सरीसृपों का अस्तित्व एक सिद्धांत के रूप में सामने आया, जिसमें माना जाता है कि उनकी भूमिका पृथ्वी पर शासन करना है क्योंकि वे उच्च कमान में शामिल हैं, जो कि बहुत अजीब नहीं होगा यदि हम जानते हैं कि हम सभी के भीतर मौजूद सरीसृप मस्तिष्क की सबसे बड़ी इच्छा शक्ति ही होती है।

इस विषय को लेकर कई सिद्धांत प्रचलित हैं, लेकिन सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध सिद्धांत यह कहता है कि सरीसृप अल्फा ड्रेकोनिस सौर मंडल से आए एलियंस हैं, और हमारे ग्रह पर रहने वाले सरीसृप भूमिगत सुरंगों में रहते हैं।
111

हम चाहे कितनी भी सैद्धांतिक बातें कर लें, हमें इतिहास को ध्यान में रखना ही होगा: प्राचीन सभ्यताएं एक सरीसृप प्राणी को दुष्ट देवता के रूप में देखती हैं, जैसे कि एज़्टेक सभ्यता में क्वेट्ज़लकोट्ल, एथेंस में सेक्रॉप्स, भारत में नाग, अफ्रीका में चिटौरी, मिस्र में सोबेक और अन्य लोग मानते हैं कि वे प्राचीन अंतरिक्ष यात्री थे; आकाश से उतरे हुए अलौकिक प्राणी, प्रसिद्ध अनुनाकी।
सुमेरिया को सरीसृपों का संभावित उद्गम स्थल माना जाता है; यह शहर सभी सभ्यताओं का उद्गम स्थल है। सुमेरियन (साथ ही मिस्रियों, माया और एज़्टेक) के अनुसार, उनके देवता मानव जाति के आगमन से बहुत पहले आकाश से पृथ्वी पर अवतरित हुए थे। वे उन्हें "अनुनाकी" कहते थे, और वे बाइबिल में नेफिलिम के रूप में भी दिखाई देते हैं, हालांकि इस शब्द के कुछ गलत अनुवादों में उन्हें "विशालकाय" कहा गया है, जबकि वास्तव में वे कुछ और ही हैं।
“वे लोग जो स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरे।”
मनुष्य इन प्राणियों को देवता मानते थे, क्योंकि वे बुद्धिमान थे, उनके पास कई प्रौद्योगिकियां और ज्ञान थे, और उनकी आयु बहुत लंबी थी, हालांकि वे नश्वर थे।
112

यह विचित्र है कि आजकल हम इतने सीमित दायरे में सिमट गए हैं कि पहली ही थ्योरी को साजिश की थ्योरी मान लिया जाता है, और जो व्यक्ति उसका बचाव करता है उसे पागल समझा जाता है।

मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि कोई सभ्यता देवताओं की कल्पना कर सकती है, लेकिन जब एक नहीं बल्कि हजारों मील दूर स्थित कई सभ्यताएँ एक जैसी कहानियाँ सुनाती हैं, तो इस पर सवाल उठना शुरू हो जाता है। और तो और, वे आकाश से अवतरित हुए इन प्राणियों के सम्मान में पत्थर और विशाल दीवारों पर मूर्तियाँ उकेरती हैं।
मिस्र के डेंडेरा में स्थित हैथोर मंदिर की दीवारों पर फराओओं के साथ सरीसृप जैसे प्राणियों की आकृतियाँ देखी जा सकती हैं। उत्तरी अमेरिका के होपी भारतीय बक'ती नामक एक अलौकिक जाति की कहानी सुनाते हैं, जिन्होंने जानवरों के आनुवंशिक परिवर्तन करके मानव जाति का निर्माण किया।
मौखिक परंपराओं के अनुसार, अलौकिक जाति बक'ती ने अंततः मानव जाति पर अपना नियंत्रण एक अन्य जाति, पतित सरीसृपों के हाथों खो दिया। होपी जनजाति इस सरीसृप जाति को शेती या "सर्प भाई" कहती है, जो भूमिगत रहते हैं।
113

चेरोकी जनजाति और अन्य मूल अमेरिकी जनजातियाँ भी सरीसृप लोगों या अन्य सरीसृप जातियों का उल्लेख करती हैं। प्राचीन मेक्सिको में क्वेट्ज़लकोट्ल नाम का एक राजा था, जिसका अर्थ है पक्षी- सर्प। वह तारों का देवता था जिसने मध्य अमेरिका के लोगों को सभ्यता और ब्रह्मांड का ज्ञान प्रदान किया।
युकाटन से प्राप्त "चिलाम बालाम" नामक ग्रंथों में कहा गया है कि इस क्षेत्र के पहले निवासियों को "चानेश के लोग" के रूप में जाना जाता था, जिसका अर्थ है सांप के लोग।
उन पर एक राजा का शासन था जिसका नाम था
“इत्ज़नामनाम” का अर्थ है छिपकली और इसे आधे मनुष्य और आधे सर्प के रूप में दर्शाया जाता है। 5,000 साल पहले, ओल्मेक लोगों ने अपने देवताओं की मूर्तियों को विशालकाय सर्पों के सुरक्षात्मक सर्पिलों के ऊपर स्थापित किया था।

प्राचीन काल में, वे देवताओं की भूमिका निभाते थे; आजकल, उनके बारे में अटकलों और "षड्यंत्र" सिद्धांतों के अलावा कुछ भी ज्ञात नहीं है।
जिन पर टिप्पणी करना प्रासंगिक नहीं है, इसलिए नहीं कि वे सही हैं या गलत, बल्कि इसलिए कि इस मामले में प्रश्न का उत्तर पहले ही दिया जा चुका है।
114

इस अध्याय को समाप्त करने से पहले, मैं आपको अब तक देखे गए सबसे आश्चर्यजनक "सरीसृप-मानव" संकर मामले के बारे में बताना चाहता हूँ। यह नाचो रोजो की एक और बेहतरीन खोज है।
रूस में “अल्लात्रा” नाम का एक संगठन है।
जिसमें वे यूट्यूब पर बहुत अच्छी गुणवत्ता वाले वीडियो अपलोड करते हैं और उनमें मानवता, दुनिया और ब्रह्मांड के बारे में अपने विचार व्यक्त और प्रसारित करते हैं।
उनके वीडियो में लगभग हमेशा ही एक ही विषय पर बात करने वाले तीन लोग होते हैं, दो महिलाएं और एक पुरुष, और इन्हीं में से एक वीडियो में कुछ अप्रत्याशित हुआ: इन महिलाओं में से एक ने कुछ मिलीसेकंड के लिए अपनी आंखें घुमाईं, जहां सरीसृप जैसी आंखें देखी गईं।
उस पहले वीडियो के बाद, ऐसे और भी वीडियो हैं जिनमें वह इसे दोहराता है और वे खुद सरीसृप विषय के बारे में बात करते हैं, बिना कुछ कहे, लेकिन सब कुछ इशारों में व्यक्त करते हैं।
यह देखना बहुत ही सुंदर है क्योंकि वे कुछ भी नहीं छिपाते और इस विसंगति को, एक तरह से, बहुत ही स्वाभाविक और देखने योग्य तरीके से दिखाते हैं।
सौभाग्य से, इस मामले की नाको द्वारा गहन जांच की जा रही है; हालांकि, ऐसे 115 अन्य मामले भी हैं।

वे प्रसिद्ध लोग जिनके साथ ऐसा हुआ है

आंखों में अचानक "परिवर्तन", जो एलात्रा के मामले से काफी मिलता-जुलता है, जैसा कि माइली साइरस के मामले में है (मैं पाठक से YouTube पर वीडियो खोजने और अपनी राय बनाने का आग्रह करता हूं)।

116

ATNUGERP 16
मानव जाति के भीतर अन्य प्रकार की नस्लें क्यों मौजूद हैं?

हम बाइबल के बारे में पहले ही बात कर चुके हैं, लेकिन चूंकि यह मानवता की उत्पत्ति के बारे में सबसे लोकप्रिय पुस्तक है, इसलिए मुझे यह प्रश्न पूछना ही होगा: यह कैसे संभव है कि आदम और हव्वा, "शुद्ध नस्ल" के दो प्राणी, इतने अलग-अलग लक्षणों वाले बच्चे पैदा कर सकते हैं?
हम जानते हैं कि सफेद, भूरी या पीली त्वचा वाले लोग होते हैं; जिनकी आंखें धारीदार या बड़ी होती हैं।
कबलाह की किताबों और तालमुद में भी कहा गया है कि जलवायु किसी व्यक्ति के कुछ खास गुणों को निर्धारित करती है; और सनहेड्रिन के ग्रंथ में हमें बताया गया है कि "शाश्वत" ने लोगों को भाषाओं और भूमि के आधार पर विभाजित किया और उन्होंने लोगों के गुणों को भी अचानक बदल दिया।
दूसरी ओर, वैज्ञानिक इस बात पर असहमत हैं कि कितनी और कौन-कौन सी नस्लीय उप-प्रजातियाँ हैं, और इसका कारण यह है कि जो मनुष्य शुद्ध होने में सक्षम हुए हैं उनकी संख्या 117 है।

वे हजारों साल पहले पुरापाषाण युग में विलुप्त हो गए थे, हालांकि दक्षिणी अफ्रीका में कुछ शुद्ध मूल निवासी अभी भी मौजूद हैं।
हम दुनिया में कहाँ हैं, इसके आधार पर हमें एक नस्ल से दूसरी नस्ल की तुलना में अधिक आनुवंशिक योगदान मिलेगा, यही कारण है कि मतभेद अभी भी बहुत गहराई से जुड़े हुए हैं।
हमारे शरीर में त्वचा के अलग-अलग रंग होने का सबसे सरल कारण मेलेनिन है, जो त्वचा के रंग को हल्का या गहरा करने वाला वर्णक है। गहरा रंग हजारों वर्षों में विकसित पर्यावरण के अनुकूल एक विकासवादी प्रक्रिया है: जहां अधिक सौर विकिरण होता है, वहां लोगों की त्वचा का रंग गहरा होता है क्योंकि वे अपने अंगों की रक्षा के लिए अधिक मेलेनिन का उत्पादन करते हैं।

इसीलिए कहा जाता है कि जिनकी त्वचा का रंग हल्का होता है, उनकी त्वचा "फीकी" होती है।
हमारे पास सबसे करीबी यही है: 118

इस तस्वीर को देखकर मन में यह सवाल उठता है: प्रत्येक नस्ल इतनी अलग क्यों है? और यह अंतर केवल शारीरिक विशेषताओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि शारीरिक क्षमता, मानसिक बुद्धिमत्ता और सांस्कृतिक व्यवहार (भाषा का तो जिक्र ही नहीं) में भी है। 119

यह कैसे संभव हो सकता है? क्या इसे समझाने का कोई ऐसा तरीका है जिसमें हम सभी के एक ही रचयिता से उत्पन्न होने की बात न दोहराई जाए? लेकिन अगर हम सब इतने अलग हैं, तो हम सब एक ही जगह से कैसे आ सकते हैं?
डीएनए
हम सभी अपने आनुवंशिक पदार्थ का 99% हिस्सा साझा करते हैं (भारतीय, अश्वेत, श्वेत और मिश्रित नस्ल के लोग); हमारे जीन एक जैसे हैं। अंतर उस 1% में निहित है।
साठ हजार वर्ष पूर्व, महज दो हजार पीढ़ियों पहले, अफ्रीकी मनुष्यों का एक छोटा समूह नई भूमि की खोज में निकला, जिससे आज पृथ्वी पर व्याप्त विशाल भौतिक और सांस्कृतिक विविधता का उदय हुआ। पुरापाषाणकालीन जलवायु अनुसंधान के अनुसार, यह अफ्रीका के हॉर्न क्षेत्र में हुए अचानक जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ, जिससे पता चलता है कि जलवायु "ग्रीन सहारा" के नाम से जाने जाने वाले आर्द्र चरण से वर्तमान की तुलना में अधिक शुष्क परिस्थितियों में परिवर्तित हो गई।
इस बात के सुराग डीएनए में मिलते हैं, और अमेरिकी शोधकर्ता स्पेंसर वेल्स ने इसी मार्ग का अनुसरण किया है।
120

हमारा प्रवास और विविधता का विकास कैसे हुआ? आनुवंशिकी के अनुसार, हम उन मनुष्यों के वंशज हैं जो 60,000 वर्ष पूर्व पूर्वी अफ्रीका में रहते थे और तटवर्ती मार्ग से एशिया की ओर प्रवास करते हुए 50,000 वर्ष पूर्व ऑस्ट्रेलिया पहुंचे।

प्रवास की एक और लहर, जिससे अधिकांश अफ्रीकी भी संबंधित हैं, 45,000 वर्ष पूर्व मध्य पूर्व और मध्य एशिया की ओर बढ़ी। वहां से, कुछ लोग यूरोप (लगभग 35,000 वर्ष पूर्व) और अन्य साइबेरिया (20,000 वर्ष पूर्व) गए, जहां से वे अमेरिका पहुंचे।
क्या हम सब एक ही जगह से आए हैं?
इस अध्याय की सबसे अच्छी बात यह है कि हम इसे पिछले अध्याय से काफी हद तक जोड़ सकते हैं, क्योंकि अगर मैं इस प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर दूं तो वह होगा हां, हम सभी एक ही जगह से आए हैं, और चार्ल्स डार्विन के विकासवादी सिद्धांत के अनुसार हम सरीसृपों से ही आए हैं।
होमो सेपियन्स तक पहुंचने वाली प्रजातियों की विकासवादी श्रृंखला में लाखों वर्ष बीत चुके हैं, और हमसे पहले कई प्रजातियां मौजूद थीं। अंतिम प्रजाति, और आज हम जो हैं उसकी उत्पत्ति, 286 मिलियन वर्ष (121 मिलियन वर्ष) पहले हुई थी।

डायनासोर) विशेष रूप से कोलिथोसॉरस (सरीसृप) से।
अगर मैं आपसे कहूँ कि मैंने अभी जो कहा वह गलत था तो? हम थोड़ा और पीछे जा सकते हैं...
ऐसा प्रतीत होता है कि यदि हम 530 पर वापस जाते हैं
लाखों साल पहले, वास्तव में हम एक मछली (हाइकोइचथिस, पहली कशेरुकी मछली) से आए थे।
हमारे शरीर उन पहली मछलियों के विकास से अधिक कुछ नहीं हैं जो पानी छोड़कर जमीन पर कदम रखने में सक्षम थीं।
क्या आपको लगता है कि हमारा मछलियों से कोई लेना-देना नहीं है? पानी में ज्यादा समय बिताने पर हमारी उंगलियों में झुर्रियां क्यों पड़ जाती हैं?
यह तंत्रिका तंत्र की एक स्वतःस्फूर्त प्रतिक्रिया है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि झुर्रीदार उंगलियों से गीली वस्तुओं को पकड़ना आसान होता है; यह मानव विकास की एक विशेषता है।
आधुनिक मनुष्यों का पूर्वज एक जलीय या अर्ध-जलीय प्राइमेट था जो पहले से ही दो पैरों पर चलने में सक्षम था और उसके शरीर पर लगभग कोई बाल नहीं थे।

122

हमारी शुरुआत एक जलतापीय छिद्र में रहने वाले जीव के रूप में हुई थी। हम एक बहुत ही सरल जीव थे, जिसे वैज्ञानिक "लूका" कहते हैं।
हमारे शरीर 4.6 अरब वर्षों के विकास का परिणाम हैं। और भले ही ऐसा लगता हो कि हम यहाँ बहुत लंबे समय से हैं, लेकिन केवल 30 लाख साल पहले ही पहले प्राइमेट्स को अपने अस्तित्व और दुनिया में अपनी जगह का एहसास हुआ था।
ऐसा प्रतीत होता है कि यह जानने के बाद सब कुछ सुलझ गया है, कि हम आज जो कुछ भी हैं, वह स्वयं के कारण हैं, बिना किसी दैवीय या अलौकिक हस्तक्षेप के।
यह विकासवादी काल संभवतः लाखों वर्षों तक ऐसा ही रहा होगा, लेकिन शायद हाल के वर्षों में इसमें व्यवधान आया है; मानवता ने जो विकासवादी छलांग लगाई है, वह पहले से हो रहे विकास के अभिलेखों से मेल नहीं खाती है।
तो हम कहाँ से आए हैं?
अफ्रीका से सूक्ष्मजीव, मछलियाँ, सरीसृप, बंदर, ऐसा लगता है कि समस्या का समाधान इसी क्रम में हुआ है।
123

भले ही चार्ल्स डार्विन सही हों और मनुष्य की जैविक विकासवादी प्रक्रिया प्रजातियों के माध्यम से घटित हुई हो, फिर भी ऐसा लगता है कि कुछ ऐसा है जो आज भी हमारे साथ जुड़ा हुआ है।
बहुत से लोग मानते हैं कि हम तारों से आए हैं, कि हम केवल ऊर्जा हैं, और अगर हम इस बारे में सोचें तो वे गलत भी नहीं हैं।
हम पहले ही इस बात पर चर्चा कर चुके हैं कि सब कुछ ऊर्जा है; हम सब इसी से बने हैं। क्वांटम स्तर पर, अस्तित्व में मौजूद हर चीज एक समान है। हम सब एक हैं।

तो "हम कहाँ से आए हैं?" इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें अधिक विशिष्ट होना होगा और पृथ्वी ग्रह के अस्तित्व में आने के बाद से बीते प्रत्येक वर्ष का विस्तार से विश्लेषण करना होगा, जो कि काफी जटिल है क्योंकि ऐसे अरबों वर्ष हैं।
हमारे पास सबसे तार्किक चीज सिद्धांत ही हैं; पूर्ण सत्य जानने के लिए हमें अतीत में जाकर उन वर्षों को जीना होगा।

124

ATNUGERP 17
इस दौड़ में किसका दबदबा है?
हुमाना?
चलिए इस बारे में सोचते हैं, आजकल सभी मनुष्यों को नियंत्रित करना दुनिया का सबसे कठिन काम नहीं है, और प्रश्न स्वयं ही यह बताता है कि हम नियंत्रित हैं क्योंकि यह स्पष्ट है, हमें बस यह जानने की जरूरत है कि इसके पीछे कौन है।
पिछले कई वर्षों में, बहुत सी बातें कही गई हैं और सैकड़ों सिद्धांत गढ़े गए हैं जो बराक ओबामा, महारानी एलिजाबेथ द्वितीय और कई अन्य प्रभावशाली हस्तियों जैसे कई राष्ट्रपतियों और विश्व नेताओं को "अभिजात वर्ग" द्वारा नियंत्रित किए जाने और हेरफेर करने के लिए इस्तेमाल किए जाने से जोड़ते हैं।
लेकिन ये "कुलीन" कौन हैं?
विशेष रूप से, हम नहीं जानते कि वे कौन हैं, लेकिन हमारे पास इतनी जानकारी है जो मिलकर हमें इसका जवाब दे देगी।
सरीसृप दुनिया को नियंत्रित करते हैं 125

हम सरीसृप विषय को नजरअंदाज नहीं कर सकते, क्योंकि जैसा कि हमने संबंधित अध्याय में चर्चा की है, कई लोगों के लिए "अभिजात वर्ग" सरीसृप है और ये अलौकिक प्राणी ही सब कुछ नियंत्रित करते हैं, विशेष रूप से उच्च कमान जो सीधे विश्व जनसंख्या को प्रभावित करती है।
जैसे-जैसे आप इस अध्याय को पढ़ते जाएंगे, आपको पता चलता जाएगा कि दुनिया को कौन नियंत्रित करता है और वे इसे कैसे करते हैं। फिलहाल हम सरीसृपों की संभावना को खारिज नहीं कर रहे हैं, लेकिन अंत में हमें इस विषय पर अधिक विस्तृत उत्तर मिलेगा।
पैसा, पूंजीवादी व्यवस्था और दुनिया के सबसे अमीर और सबसे शक्तिशाली लोग
हम सभी को पैसे की जरूरत होती है और यही वह कड़ी है जो हमें बांधती है, लेकिन पूंजीवाद और उपभोक्तावाद ने हमें वर्षों पहले चरम सीमा तक पहुंचा दिया था।

मैं इस व्यवस्था के खिलाफ नहीं हूं, बिलकुल भी नहीं, मुझे यह पसंद है, लेकिन इसका आनंद लेने के लिए आपको जागृत होना पड़ेगा।
असल बात तो यह है कि अधिकांश आबादी सो रही है: बेतुकी खरीदारी, 126 तक का कर्ज।

कोहनी का इस्तेमाल, जंक फूड, अत्यधिक मनोरंजन और कम ज्ञान। जागृति के अनेक तरीके हैं और हर व्यक्ति का अपना तरीका होता है।
शायद इस पुस्तक के साथ ही आपको भी ऐसा अनुभव हुआ हो, जब आपको उन सभी चीजों का एहसास हुआ हो जो मौजूद हैं, मौजूद थीं और मौजूद रहेंगी जिनके बारे में आपको कभी किसी ने नहीं बताया था। जागृति का यही एक तरीका है, सिक्के के दूसरे पहलू को देख पाना।
कुछ अन्य लोग, जागृत होने के बजाय, इतनी अधिक जानकारी और इतने कम निष्कर्षों से अभिभूत हो सकते हैं, और यहां पढ़ी गई हर चीज को अनदेखा करना और खारिज करना पसंद कर सकते हैं।
जागृत होने के लिए, हमें बस जागरूक होना होगा। यह विश्वास करने या न करने की बात नहीं है; हम हर समय चीजों पर विश्वास कर सकते हैं, यह काफी आसान है। असल बात यह है कि हम खुद को जानें, खुद से सवाल पूछें, सचमुच गहन सवाल। इस संदर्भ में, यह पुस्तक सामान्य प्रश्नों से भरी है जो आगे चलकर छोटे, पूरक प्रश्नों की ओर ले जाते हैं, इन सभी का उद्देश्य गहराई में उतरना और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास करना है, भले ही हमें किसी विशेष स्थान पर पहुंचने की आवश्यकता न हो।
पूंजीवाद (इसके बारे में कही गई बातों से परे) 127 लोगों को विनम्र, आज्ञाकारी और अच्छे व्यवहार वाला बनाए रखने में कामयाब रहा है।

पूरी दुनिया की आबादी को नियंत्रित किया जाता है। यह सब विज्ञापन के माध्यम से किया जाता है, जहां नए कपड़े, तकनीकी उपकरण, एक्सेसरीज़, कारें आदि का लगातार प्रचार किया जाता है, जिससे लोग खर्च करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं और अंततः उन

चीजों को खरीदने में कर्ज में डूब जाते हैं जिनकी उन्हें अक्सर ज़रूरत भी नहीं होती या जिनके बारे में उन्हें पता भी नहीं होता कि उन्हें उनकी ज़रूरत नहीं है, और इसका एकमात्र उद्देश्य— ईमानदारी से कहें तो—दिखावा करना है।
यह इतना ही सरल है, और अगर मैंने जो अभी कहा उससे आपको झटका लगा है, तो आप जानते हैं कि आपकी समस्या कहाँ है।
यह आसान तो है, लेकिन थोड़ा दुखद भी है। पूंजीवादी व्यवस्था ठीक है, अमीर होना ठीक है, धन और शक्ति का होना भी ठीक है (यदि आपका लक्ष्य सकारात्मक बदलाव लाना है)। असली दुख की बात तो यह है कि लोग इस पर इतना अधिक ध्यान देते हैं कि वे यह भूल जाते हैं कि उनके पास वास्तव में जो है वह केवल वर्तमान क्षण है, जो इतनी जल्दी बीत जाता है कि उन्हें इसे जीने का समय ही नहीं मिलता। पैसा असीमित है। चूंकि कुछ दशक पहले सोने से समर्थित होना बंद हो गया था, इसलिए अब इसकी कोई सीमा नहीं है, और इसे हर दिन प्रचुर मात्रा में छापा जाता है; यही कारण है कि 128

आर्थिक विस्तार तेजी से क्रूर होता जा रहा है, क्योंकि जितने अधिक करोड़पति होंगे, उतना ही अधिक वे कर सकेंगे।
बहुत से लोग सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं और ग्रह की मदद कर रहे हैं, लेकिन हालांकि सबसे अमीर लोग आबादी का एक छोटा प्रतिशत हैं, फिर भी काफी संख्या में ऐसे लोग हैं जिनके पास बहुत पैसा और संपर्क हैं, इसलिए उस प्रतिशत के भीतर दोनों पक्षों के लोग मौजूद हैं।

लोग आमतौर पर फोर्ब्स पत्रिका (जो व्यापार और वित्त की दुनिया में विशेषज्ञता रखती है) से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, जो प्रत्येक वर्ष फोर्ब्स सूची जारी करती है, जिसमें दुनिया के सबसे धनी लोगों को उनके पास मौजूद धन की मात्रा के आधार पर क्रम में रखा जाता है।
पुस्तक के इस भाग में अब तक हम सिक्के के दूसरे पहलू को देखने के आदी हो चुके हैं, इसलिए मुझे आपको यह बताना होगा कि इस पत्रिका के संबंध में हमें कुछ बातों का ध्यान रखना होगा।

हालांकि इसमें दुनिया के सबसे धनी लोगों की सूची है, लेकिन करोड़पतियों के पास यह विकल्प है कि यदि वे चाहें तो वे इस सूची में शामिल न हों; इसलिए, 129

हम केवल इस सूची को देखकर किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते। उदाहरण के लिए, महारानी एलिजाबेथ द्वितीय 32 देशों की रानी के रूप में जानी जाती हैं और उनकी संपत्ति का अनुमान 33 ट्रिलियन डॉलर है। वे विश्व के यूरेनियम भंडार को नियंत्रित करती हैं और पृथ्वी के भूभाग के एक-छठे हिस्से की मालिक हैं, लेकिन उनका नाम उस सूची में नहीं है।
दुनिया पर राज करने वाले तीन सबसे लोकप्रिय राजवंश: रॉथ्सचाइल्ड, रॉकफेलर और बुश परिवार।
सीधे मुद्दे पर आते हुए, हमें यह जानना होगा कि बुश परिवार की अनुमानित संपत्ति 300 अरब डॉलर है, जो मुख्य रूप से द्वितीय विश्व युद्ध से पहले से तेल व्यवसायों पर आधारित है।
जॉर्ज एच.डब्ल्यू. बुश (1989-1993 के बीच संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति) के शब्दों में:
"हमारे सामने अपने लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक नई विश्व व्यवस्था बनाने का सबसे बड़ा अवसर है, एक ऐसी दुनिया जो कानून द्वारा शासित हो, न कि जंगल के कानून द्वारा, जो राष्ट्रों के आचरण को नियंत्रित करता है।"
जब हम इसे हासिल कर लेंगे, और हम इसे जरूर हासिल करेंगे।
130

हमारे पास इस नई विश्व व्यवस्था के लिए एक अवसर है, एक ऐसी व्यवस्था जिसमें एक विश्वसनीय संयुक्त राष्ट्र संगठन शांति बनाए रखने और संयुक्त राष्ट्र के संस्थापकों के वादों और दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए विकसित हो सकता है।"
अगला परिवार रॉथ्सचाइल्ड्स है। अनुमान है कि वे 500 कंपनियों के मालिक हैं और उनकी घोषित संपत्ति 500 अरब डॉलर है, जिसका

अधिकांश हिस्सा उन्होंने संकट के समय में बड़े पैमाने पर सट्टेबाजी के माध्यम से अर्जित किया है। इस परिवार ने मुख्य रूप से आर्थिक और वित्तीय प्रणालियों के माध्यम से विश्व अर्थव्यवस्था को नियंत्रित किया है।
अंत में, रॉकफेलर परिवार के पास 750 अरब डॉलर की संपत्ति और लगभग 600 बच्चे हैं।
कंपनियां।
कुछ साल पहले एक ऐसी बात का पता चला, जो अब तक एक गहरा राज़ मानी जाती थी, कि 23 दिसंबर 1913 से फेडरल रिजर्व बैंक (FED) संयुक्त राज्य अमेरिका को नियंत्रित करता आ रहा है। FED के पूरे देश में 12 क्षेत्रीय बैंक हैं।

131

फेडरल रिजर्व में ऐसी क्या अजीब बात है?
• यह संघीय संस्था नहीं है (यह कोई सरकारी संस्था नहीं है), और न ही यह कोई रिजर्व संस्था है (कानून के अनुसार यह कोई रिजर्व नहीं रखती है)।
• यह केंद्रीय बैंक नहीं है, यह एक निजी बैंक है।
• इसके सभी मालिक अमेरिकी नहीं हैं (रोथ्सचाइल्ड परिवार लंदन और बर्लिन से हैं; लार्ड पेरिस से हैं; इज़राइल मोसेस सेफ़ इटली से हैं; कुह्न, लोएब और वारबर्ग परिवार जर्मनी से हैं) और लेहमैन, गोल्डमैन, सैक्स और रॉकफेलर परिवार न्यूयॉर्क से हैं।
• इच्छानुसार धनराशि जारी करता है।
• अमेरिकी जनता फेडरल रिजर्व की भारी ऋणी है।
जैसा कि आप देखेंगे, रॉथ्सचाइल्ड और रॉकफेलर परिवार, साथ ही अन्य बड़े अरबपति परिवार, फेडरल रिजर्व के मालिक हैं।
अब जब आप "फेडरल रिजर्व" के बारे में थोड़ा बहुत जान चुके हैं, तो अब समय आ गया है कि आप निम्नलिखित छवि को देखें।
132

¿QUIÉNES CONTROLAN EL MUNDO?
¿CUÁL ES EL PODER REAL DE LOS DIRIGENTES POLÍTICOS?
El 2% controla el 50% de los recursos a nivel mundial. Sólo 9 individuos dominan un mercado de US$700 mil millones
ÉLITES FINANCIERAS
Familias Rockefeller, Rothschild, Morgan, entre otras
ORGANISMOS MULTILATERALES
(FMI, BM, BIRD, etc.)
BANCOS
CORPORACIONES
GOBIERNOS Y DIRIGENTES POLÍTICOS
CIUDADANÍA
"Esta claro que la gente no entiende el sistema monetario y bancario, porque si lo entendiese, creo que habría una revolución mañana por la mañana".
Henry Ford

[illegible] [illegible] [illegible] [

विश्व की अधिकांश संपत्ति (मान लीजिए 99%) मध्यम और निम्न वर्ग के पास है।
इस स्तर पर छोटे और मध्यम आकार के व्यवसायों के मालिक, आम कर्मचारी और परिवार आते हैं। यहां अर्जित धन का एक बड़ा हिस्सा करों में चला जाता है।
दूसरे स्तर पर सरकारें हैं।
हालाँकि कोई सोच सकता है कि वे ही हैं जो
वे दुनिया पर "शासन" करते हैं, लेकिन हम अभी भी वास्तविक सिंहासन से बहुत दूर हैं। यही वह स्तर है जहाँ यह गलत धारणा बनी हुई है कि वे दुनिया को नियंत्रित करते हैं।
अन्य संस्थाओं की तरह सरकारों को भी अपने वित्तपोषण के लिए साधनों की आवश्यकता होती है।
राजनीतिक दलों को अपने चुनाव प्रचार के लिए धन जुटाने की आवश्यकता होती है; वे इसे स्तर 3 पर बड़ी कंपनियों से वित्तपोषण के माध्यम से प्राप्त करते हैं। एक बार जब कोई राजनीतिक दल चुनाव जीत जाता है, तो सरकार धन प्राप्त करने और अपनी राज्य परियोजनाओं को पूरा करने के लिए बड़े बैंकों या केंद्रीय बैंकों (स्तर 4 और 5 पर) के साथ बातचीत कर सकती है।
स्तर 3: यहीं पर बड़ी-बड़ी कंपनियां स्थित हैं।
134

हम सभी को भोजन, स्वास्थ्य सेवा, सामान, ऊर्जा, पानी, मनोरंजन, पेट्रोल आदि की आवश्यकता होती है, और इसके लिए हमारे पास ये बड़ी-बड़ी कंपनियाँ हैं, जो हमारी सभी ज़रूरतों का सामान बनाती हैं। लेकिन…
जब ये निगम बहुत शक्तिशाली हो जाते हैं तो क्या होता है? बड़े-बड़े एकाधिकार स्थापित करने वाली कंपनियों को 'कॉर्पोरेटोक्रेसी' कहा जाता है। इन कंपनियों द्वारा अर्जित विशाल धन-संपत्ति के कारण, इनकी क्रय शक्ति बहुत अधिक होती है

और ये अपनी पसंद की किसी भी राजनीतिक पार्टी को वित्त पोषित कर सकती हैं। यही कारण है कि ये सरकारों पर अपना दबदबा बनाए रखती हैं, और यही वजह है कि तेल, खनन और प्रौद्योगिकी उद्योगों की दिग्गज कंपनियां अपनी इच्छा से दुनिया को नियंत्रित करती हैं। यहीं पर हम सब भ्रमित हो जाते हैं और सोचते हैं कि इन उद्योगों को दोषी ठहराया जाना चाहिए, लेकिन असल में यह सब बहुत उच्च स्तर से आता है।
वास्तविकता यह है कि सब कुछ पूरी तरह से नियंत्रित है और हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया गया है, इसलिए भले ही हम सोचते हों कि हम स्वतंत्र हैं, हम उससे बहुत दूर हैं, क्योंकि कई निर्णय भी 135

आपने जो भी विकल्प चुने हैं, भले ही वे आपकी अपनी स्वतंत्र इच्छा से हों, वे काफी हद तक इस बात से प्रभावित होते हैं कि वे आपको क्या दिखाना चाहते हैं (ऐसे एल्गोरिदम जो आपकी पसंद को आपसे बेहतर जानते हैं)।
भोजन से लेकर (भोजन और पानी में मौजूद विषाक्त पदार्थ, कीटनाशक, जहरीले खनिज) शिक्षा तक (पारंपरिक प्रणाली जिसके कारण आप कभी किसी चीज पर सवाल नहीं उठाते और किसी और के लिए काम करते हैं क्योंकि आपके पास कोई अन्य विकल्प नहीं है)।
लेकिन इन्हें फंड कौन करता है? चलिए चौथे स्तर पर नज़र डालते हैं।
स्तर 4: राष्ट्रीय बैंक।
यह बात शायद आपसे छिपी नहीं है, लेकिन राष्ट्रीय बैंक इन निगमों को और जाहिर तौर पर (हालांकि छोटी मात्रा में) सरकार को कम ब्याज दरें देने के लिए जिम्मेदार हैं।
समस्या यह है कि बैंक मनगढ़ंत तरीके से पैसा बनाते हैं। जब वे ऋण देते हैं, तो वे केवल ऋण राशि को बैंक खातों में जमा करते हैं, और फिर उस राशि पर ब्याज वसूलना शुरू कर देते हैं जो कभी अस्तित्व में ही नहीं थी। यह लगभग 136 साल पहले विकसित हुई आंशिक आरक्षित बैंकिंग प्रणाली के कारण संभव है।

कितने साल पहले की बात है, और स्पष्ट रूप से, इसे बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है।
केंद्रीय बैंक स्तर 5 पर हैं।
इस लिंक में कौन सा परिवार है? रॉथ्सचाइल्ड परिवार, जिनके बैंक निजी हैं, सार्वजनिक नहीं।
एक खास बात यह है कि ऐसे बहुत कम देश हैं जिनमें ये केंद्रीय बैंक नहीं हैं (चीन, वेनेजुएला, सीरिया, उत्तर कोरिया, आदि) और यह भी संयोग की बात है कि इन देशों में वामपंथी सरकार या तानाशाही है।
हम इसके बारे में क्या कह सकते हैं?
मान लीजिए कि किसी कारणवश ये देश इस परिवार के बैंकों को अपने यहाँ नहीं रखना चाहते; यह भी एक बड़ा संयोग है कि ये देश हमेशा अमेरिका के साथ युद्ध में रहते हैं।
छठा स्तर: विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
ये संस्थाएं दुनिया भर के कर्जदार हैं।
इनका कार्य देशों को उनकी अर्थव्यवस्थाओं को बचाने या उनके विकास में सहायता करने के लिए धन उधार देना है। विश्व बैंक मुख्य रूप से 137 क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखता है।

विकासशील देशों को शून्य या बहुत कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराना।
और इन संस्थानों का मालिक कौन है?
जैसा कि आप जानते हैं, रोथ्सचाइल्ड परिवार आईएमएफ में बहुसंख्यक शेयरधारक और विश्व बैंक के पूर्ण स्वामी हैं। सातवां स्तर: केंद्रीय बैंकों का केंद्रीय बैंक
केंद्रीय बैंक राष्ट्रीय बैंकों की वित्तीय गतिविधियों में सहायता और विनियमन के लिए जिम्मेदार होते हैं। उनके पास काफी शक्ति होती है, लेकिन उतनी नहीं जितनी बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स के पास होती है।

यह बैंक अपने सदस्य देशों के सभी केंद्रीय बैंकों के लिए केंद्रीय बैंक के रूप में कार्य करता है। इसकी मुख्य निर्णय समिति में 18 सदस्य होते हैं, जिनमें से सभी केंद्रीय बैंक अधिकारी होते हैं। इन बैंक अधिकारियों के पास मौद्रिक नीति को नियंत्रित करने, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को मुद्रा आपूर्ति का प्रबंधन करने और ब्याज दरें निर्धारित करने की शक्ति होती है, जिससे हमारी बचत और निवेश का मूल्य निर्धारित होता है। संक्षेप में, किसी देश के विकास या पतन का निर्णय लेने की शक्ति इन्हीं के पास होती है।
आठवां स्तर: एलीट बैंकर्स 138

इस पोस्ट की शुरुआत में मैंने कहा था कि "जिसके पास पैसा है, उसी के पास सत्ता है।" इसलिए, देशों के केंद्रीय बैंकों और पूरे राष्ट्रों को ऋण देने में सक्षम बैंकों को धन उपलब्ध कराने में सक्षम सबसे शक्तिशाली संस्था के मालिक निस्संदेह दुनिया के मालिक होंगे।
हमारे यहाँ के सबसे शक्तिशाली बैंकरों में रोथ्सचाइल्ड परिवार, रॉकफेलर परिवार, मॉर्गन परिवार, डु पोंट परिवार, बुश परिवार आदि शामिल हैं।
मुझे उम्मीद है कि आपको वे तीन उपनाम याद होंगे जिन्हें मैंने मोटे अक्षरों में हाइलाइट किया है।
इस पिरामिड के इस स्तर पर, हम पहले से ही जानते हैं कि कुलीन बैंकर ही दुनिया पर शासन करते हैं, लेकिन अब हमें खुद से ये सवाल पूछने की ज़रूरत है: उनका लक्ष्य क्या है? वे यह नियंत्रण क्यों चाहते हैं? क्या मानवता को नियंत्रित करने की यह योजना हम जैसे ही आम इंसानों द्वारा निर्देशित की जा रही है? क्या ऐसा हो सकता है कि हर निर्णय लेने वाले अलौकिक प्राणी हों?
जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया था, सरीसृप विषय इस मामले में एक दिलचस्प भूमिका निभाता रहता है।
139

केवल हमारे जैसे मनुष्यों द्वारा, बल्कि उनसे भी श्रेष्ठ किसी चीज द्वारा।
पत्रों में इलुमिनाती की गुप्त योजना
आपने शायद इलुमिनाती शब्द सुना होगा (जो लैटिन भाषा के 'प्रकाशित' शब्द से लिया गया है), लेकिन आइए देखते हैं कि यह सारा रहस्य कहाँ से आता है।

इसे समझें और फिर आपको दिखाएं कि वास्तव में प्रभावशाली क्या है।
सबसे पहले, और बात को आगे बढ़ाने के लिए, इलुमिनाती की गहरी योजना एक नई विश्व व्यवस्था स्थापित करना है। क्या आपको जॉर्ज एच.डब्ल्यू. बुश (संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति) के शब्द याद हैं? "हमारे पास एक नई विश्व व्यवस्था का अवसर है।" इस नई व्यवस्था में, कुछ ही लोग पूरे ग्रह पर शासन करेंगे, क्योंकि केवल कुछ ही लोगों को पूर्ण ज्ञान प्राप्त है। इलुमिनाती में कौन-कौन शामिल हैं?
यह एक गुप्त लॉज है, इसके बारे में जानना बहुत मुश्किल है, फिर भी, कुछ सुराग मौजूद हैं।
इस समूह के अधिकांश सदस्य बेहद शक्तिशाली और प्रभावशाली लोग हैं, जिनमें धनी बैंकर, शीर्ष राजनीतिक नेता और व्यापारिक अभिजात वर्ग, तेल उद्योगपति और बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों और दवा उद्योग के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं।
कहा जाता है कि अंग्रेजी शाही परिवार, यानी महारानी एलिजाबेथ द्वितीय और विंडसर परिवार में 142 सदस्य हैं।

उच्च स्तरीय प्रतिनिधि जो नई विश्व व्यवस्था के ऊपरी तबके को नियंत्रित करते हैं।
इसकी संरचना और कार्यप्रणाली मूलतः पाँच स्तरों वाले पिरामिड की तरह है: सबसे नीचे मनोरंजन जगत के सितारे हैं। फिर धार्मिक नेता, बैंकर और वे राजनेता आते हैं जिन्हें हम स्वतंत्र रूप से

चुनते हैं; इसके बाद बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आती हैं; और अंत में वे लोग आते हैं जो पैसा बनाते और चलाते हैं तथा पर्दे के पीछे से शासन करते हैं।
इस अंतिम अनुच्छेद की सत्यता की पुष्टि करने के लिए, मैं पाठक से निम्नलिखित व्यक्तियों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने का आग्रह करता हूँ: माइकल जैक्सन, केटी पेरी, जिम कैरी, मैकाले कल्किन और रसेल ब्रांड। साथ ही, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए आतंकवादी हमले या जेएफके की हत्या जैसे मामलों पर भी विचार करें।
हम इलुमिनाती का प्रतीक कहाँ पा सकते हैं?
मानो या न मानो, यह आपकी कल्पना से कहीं ज्यादा करीब है। वर्तमान अमेरिकी एक डॉलर के नोट पर संयुक्त राज्य अमेरिका की महान मुहर अंकित है, जो 143

यह "सर्व-दृष्टि वाली आंख" से बना है, जिसे "ईश्वरीय कृपा की आंख" भी कहा जाता है।
कई लोग इस प्रतीक को ईसाई धर्म से जोड़ते हैं, हालांकि इसका उल्लेख बाइबिल में कहीं नहीं है। इस प्रतीक की उत्पत्ति प्राचीन मिस्र के सूर्य देवता "होरस की आंख" के प्रतीकवाद में निहित है।
मिस्रवासियों के बारे में हम पहले ही बात कर चुके थे।
यह इल्यूमिनाती और नई विश्व व्यवस्था के सबसे करीब की चीज है जिसके बारे में हम जानते हैं।
"ज्ञान" से मेरा तात्पर्य केवल वही देखना है जो वे हमें दिखाना चाहते हैं।
बिल्डरबर्ग क्लब
इस क्लब में बैंकर, राजनेता, शाही परिवार के सदस्य और अखबार मालिक भी शामिल हैं, जो मानवता के सामने आने वाली गंभीर समस्याओं और उनसे निपटने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए हर साल बंद दरवाजों के पीछे मिलते हैं।

बिल्डरबर्ग क्लब का उद्देश्य रूस और 144 के विरोध में संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप के बीच एक सामान्य राजनीतिक रेखा पर एक गाँठ बाँधना था।

"साम्यवाद की ओर" और, यदि संभव हो तो, "क्लब के सदस्यों के बीच विश्व अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करना"।
इस क्लब के बारे में एक अजीब बात यह कही गई है कि: “दुनिया का भविष्य बिल्डरबर्ग क्लब की गुप्त बैठकों में तय होता है। अगर आपको आमंत्रित होने का सौभाग्य नहीं मिलता, तो आपका कोई अस्तित्व ही नहीं; वैश्विक व्यवस्था में आपकी कोई अहमियत नहीं है। इस चुनिंदा संस्था का उद्देश्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समाप्त करना और भय तथा मीडिया के माध्यम से नागरिकों को नियंत्रित करना है, जिस पर इसके सदस्यों का ही नियंत्रण है। इनका लक्ष्य संयुक्त राष्ट्र में एक वैश्विक सरकार, एक ही मुद्रा और एक ही धर्म की स्थापना करना है।”
इलुमिनाती समूह के विपरीत, बिल्डरबर्ग क्लब अपनी बैठकों (जो हर साल आयोजित की जाती हैं) की घोषणा अपनी वेबसाइट पर करता है, यानी वे हमें बताते हैं कि किस विषय पर चर्चा होगी, यह कहाँ होगी और कौन-कौन इसमें शामिल होंगे (लगभग 130 लोग)।
जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, वे हमें वही दिखाते हैं जो वे हमें दिखाना चाहते हैं, या जो हम देख सकते हैं। यह ठीक-ठीक जानना असंभव है कि कौन-कौन उपस्थित होगा और किन विशिष्ट विषयों पर चर्चा होगी, और तो और वे क्या कहेंगे और क्या निर्णय लेंगे, यह जानना तो और भी मुश्किल है। 145

ये बैठकें बंद दरवाजों के पीछे होती हैं और किसी को भी इनके बारे में बात करने की अनुमति नहीं है।
अब जबकि हम दुनिया को नियंत्रित करने वाले गुप्त संप्रदायों के बारे में थोड़ा और जान चुके हैं, तो आइए इस अंतिम अध्याय के

शीर्षक और सबसे चौंकाने वाली बात के बारे में बात करते हैं: इलुमिनाती कार्ड।
इलुमिनाती कार्ड काफी सरल हैं, लेकिन उनमें वह छिपा हुआ है जो अब तक हमने जो कुछ भी देखा है, उसके जवाब के रूप में सामने आता है।
यह कार्ड गेम अमेरिकी स्टीव जैक्सन द्वारा बनाया गया था। प्रत्येक खिलाड़ी दुनिया के प्रमुख षड्यंत्रकारी समूहों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे कि सोसाइटी ऑफ डिसॉर्ड, इल्यूमिनाती, ज्यूरिख के नोम्स, आदि। खेल आगे बढ़ने के साथ, खिलाड़ी इन समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्ड अपने खेलने के क्षेत्र में जोड़ते हैं, जिससे उनकी शक्ति बढ़ती है और उन्हें अपने विजय लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलती है, जो षड्यंत्र के आधार पर भिन्न होता है।
यह गेम पहली बार 1982 में प्रकाशित हुआ था और इसके कई संस्करण आए, लेकिन 1995 का संस्करण अपनी सटीक भविष्यवाणियों के लिए याद किया जाता है। प्रत्येक कार्ड पर 146 लिखा होता है।

जिसका अर्थ हम नीचे देखेंगे, हालांकि इससे पहले हमें यह जानना होगा:
• पत्र के ऊपर दिखाई देने वाले अक्षर नाम हैं।
• प्रत्येक पत्र का एक विवरण होता है, लेकिन उनमें शायद ही कभी कोई महत्वपूर्ण बात लिखी होती है।
• तस्वीरों में अक्सर एक छिपा हुआ संदेश होता है।
• विवरण के नीचे दी गई संख्याएँ केवल कार्ड की शक्ति हैं और खेल से संबंधित हैं।
• प्रत्येक कार्ड का एक रंग होता है। बैंगनी रंग वाले कार्ड महत्वपूर्ण होते हैं।
147

Nuclear Accident

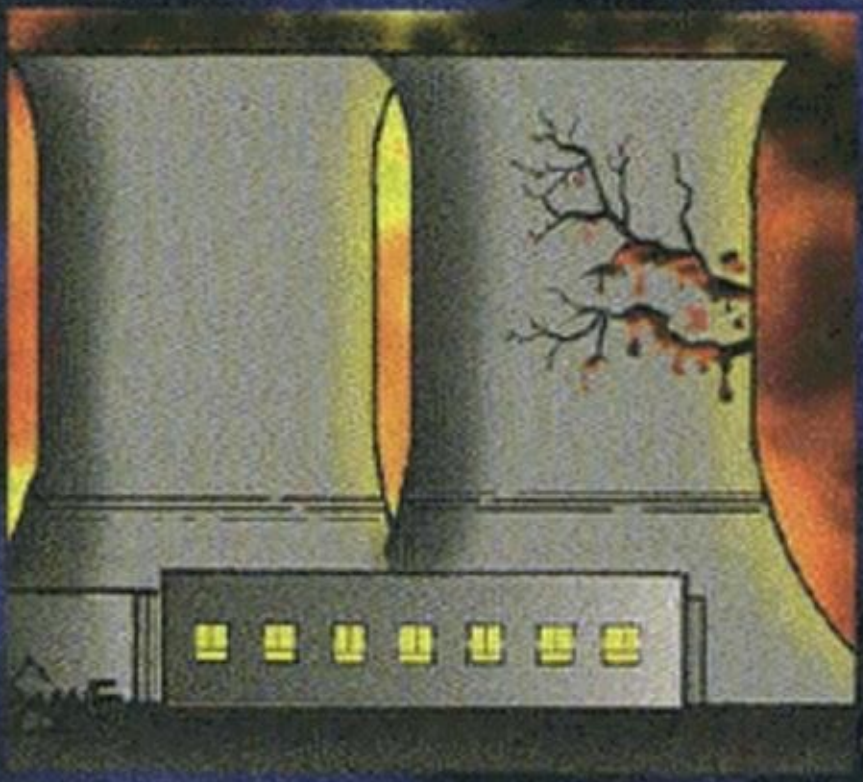

Disaster! This is an Instant Attack to Destroy any Place. It does not require an action. Its Power is 14 against a *Huge* Place, 18 against any other Place.

If the attack succeeds, the target is *Devastated*. If the die roll succeeds by more than 4, the target is completely destroyed!

The Nuclear Power Companies lose their action token when this card is played on any Place.

Disaster!

□□□□ 11 □□□□□ 2011 □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□?
148

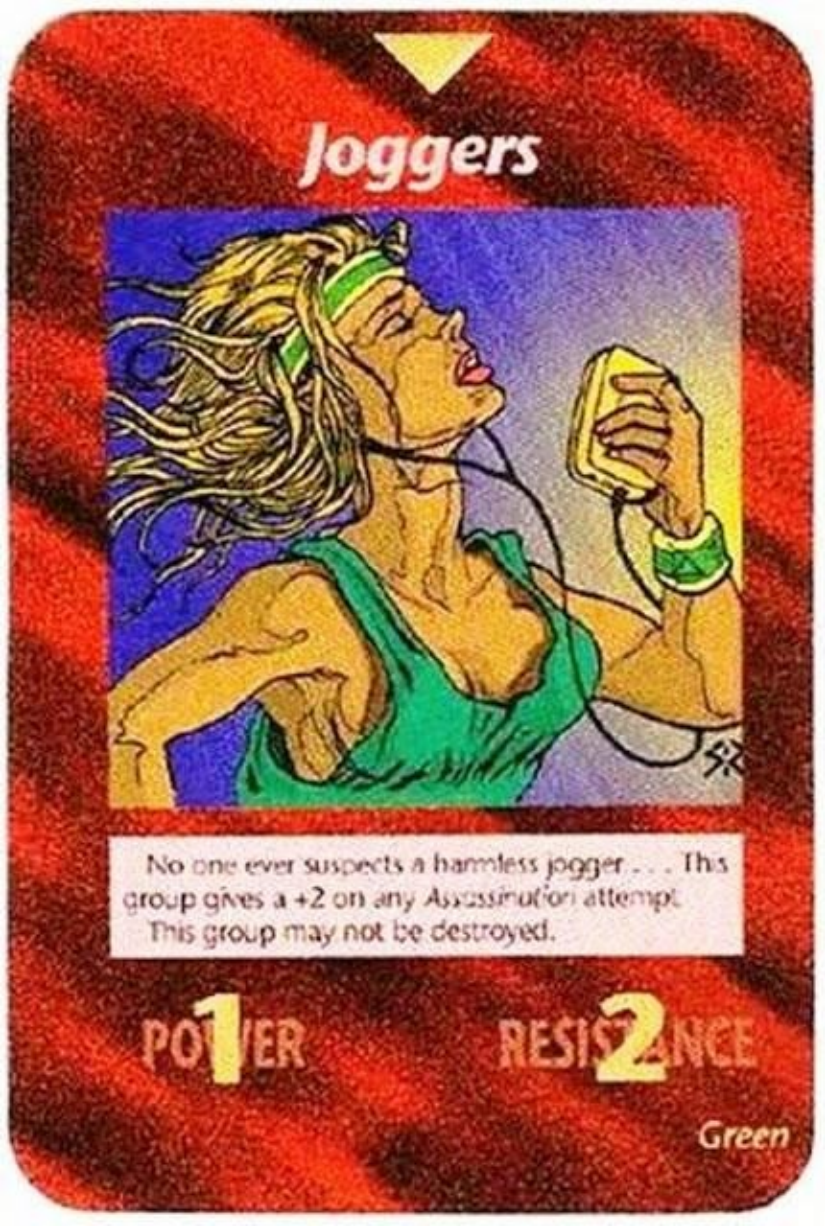
Joggers
No one ever suspects a harmless jogger . . . This group gives a +2 on any Assassination attempt. This group may not be destroyed.
POWER 1
RESISTANCE 2
Green

□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□: □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ 2013 □□□

□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□ (31 □□□ □□□□)□

149

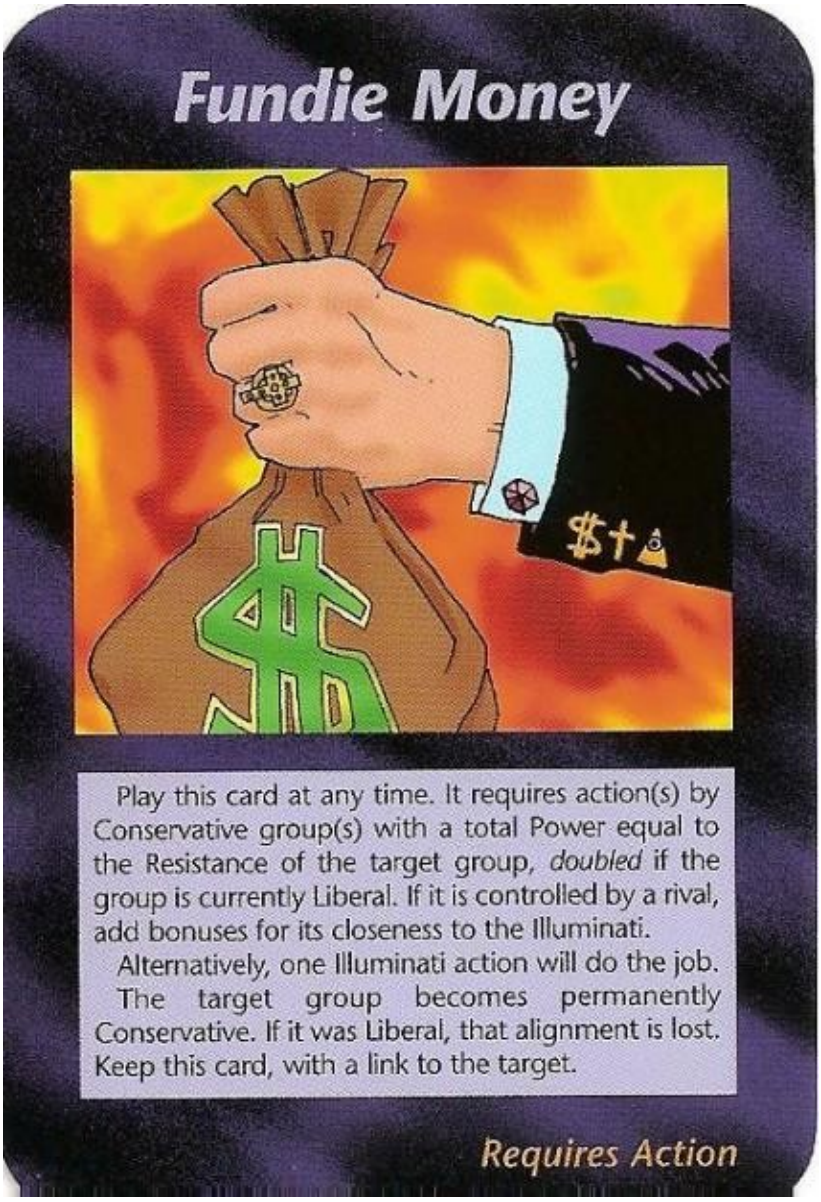
Fundie Money
Play this card at any time. It requires action(s) by Conservative group(s) with a total Power equal to the Resistance of the target group, *doubled* if the group is currently Liberal. If it is controlled by a rival, add bonuses for its closeness to the Illuminati.
Alternatively, one Illuminati action will do the job. The target group becomes permanently Conservative. If it was Liberal, that alignment is lost. Keep this card, with a link to the target.
Requires Action

अटकलों और अब तक के साक्ष्यों के आधार पर, हम इसे अभिजात वर्ग द्वारा भौतिक मुद्रा को समाप्त करने की इच्छा के रूप में देख सकते हैं। वे ऐसा क्यों करेंगे? ऐसा करने से हमें डिजिटल मुद्रा का उपयोग करना पड़ेगा, जिससे हमें नियंत्रित करना आसान हो जाएगा।
दिलचस्प बात यह है कि ऐसा हो रहा है (क्रिप्टोकरेंसी)। पत्र में इस बात की पुष्टि करने वाले अन्य विवरण यह हैं कि शेयर बाजार के पीछे आग लगी है, जिससे यह संकेत मिलता है कि पैसा...
"जल जाएगा" या "गायब हो जाएगा"
150

"चिप" शब्द का संबंध आरएफआईडी चिप्स के नए प्रचलन से है, जिनका उपयोग अब खरीदारी के लिए किया जा रहा है। यह चिप अंगूठे और तर्जनी के बीच की त्वचा के मांसल भाग में प्रत्यारोपित की जाती है। इससे उन्हें आबादी पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हो जाएगा। यदि आप यह चिप नहीं लगवाते हैं तो क्या होगा? वे आपको अपराधी मानेंगे और आप कुछ भी नहीं खरीद पाएंगे।
151

NEW WORLD ORDER
Apathy
The number one problem in the world today, but who cares?
No group may aid an attack made by another group, regardless of who owns it.
This card replaces any Red NWO card in play.

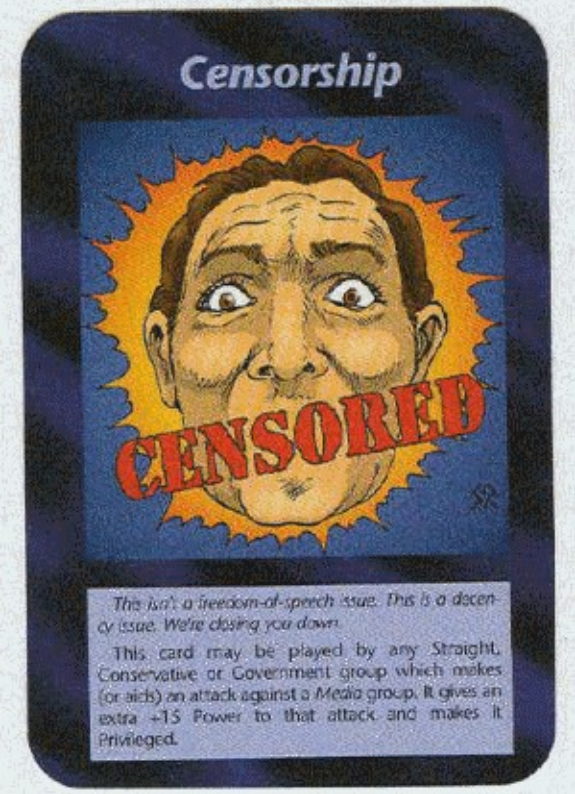
Censorship
CENSORED
This isn't a freedom-of-speech issue. This is a decency issue. We're closing you down.
This card may be played by any Straight, Conservative or Government group which makes (or aids) an attack against a Media group. It gives an extra +15 Power to that attack and makes it Privileged.

[illegible]

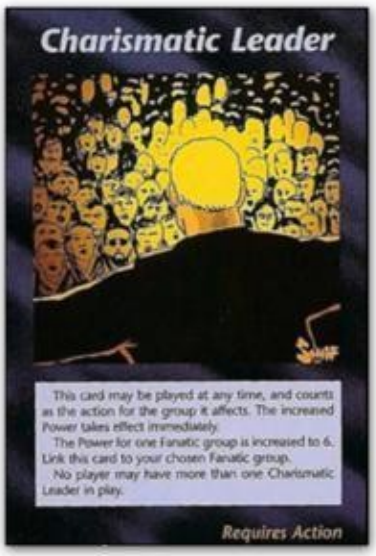

“करिश्माई नेता।” इसमें अजीब क्या है? आपको क्या लगता है कि यह व्यक्ति किससे मिलता-जुलता है? ऐसा लगता है कि इसी कार्ड ने राष्ट्रपति के भविष्य की भविष्यवाणी की थी।
“करिश्माई” डोनाल्ड ट्रम्प। यह निम्नलिखित से संबंधित है: 154

Enough is Enough
At any time, at any place, our snipers can drop you. Have a nice day.
Play this card on your own turn, before drawing any Plots. You may remove all Zap, Paralysis or Attribute Freeze cards that are affecting your Power Structure. However, preoccupied with your house-cleaning, you may draw no Plots this turn.
Draw No Plot Cards This Turn

[illegible]: "[illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]"
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

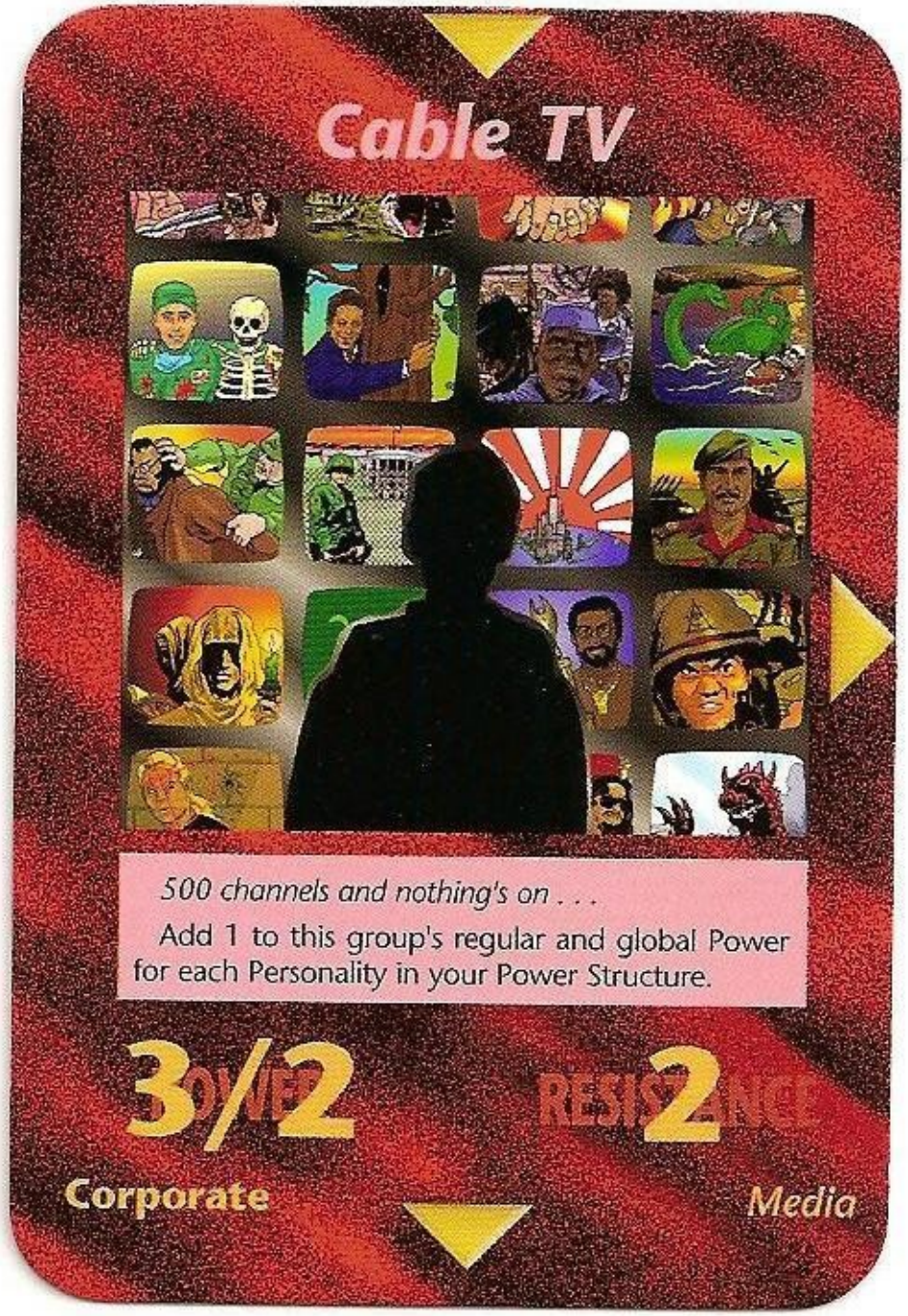
Cable TV
500 channels and nothing's on . . .
Add 1 to this group's regular and global Power for each Personality in your Power Structure.
3/2
2
Corporate
Media

[illegible]: [illegible] [illegible]: 500
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

कार्यक्रमों से मूर्ख बनाने का काम करते हैं जिनसे कुछ भी सीखने को नहीं मिलता। अभिजात वर्ग सभी मीडिया को इस तरह नियंत्रित करता है कि लोग वही देखें जो वे उन्हें दिखाना चाहते हैं।
156

An Offer You Can't Refuse

Play this card at the beginning of your turn. You may draw two *extra* Plot cards . . . not from your deck, but from the deck of a rival! Or you may take one card each from two rivals' Plot decks. To do this, you must give up your chance to draw any Group cards this turn.

Draw No Group Cards This Turn

एक ऐसा सौदा जो आप नहीं कर सकते
अस्वीकार। यह कार्ड बताता है कि अगर वे आपको किसी चीज़ के बदले में कुछ भी दें, चाहे वह पैसा हो, प्रसिद्धि हो या शक्ति, तो आप पहले से ही जानते हैं कि आपका अंजाम क्या होगा।
157

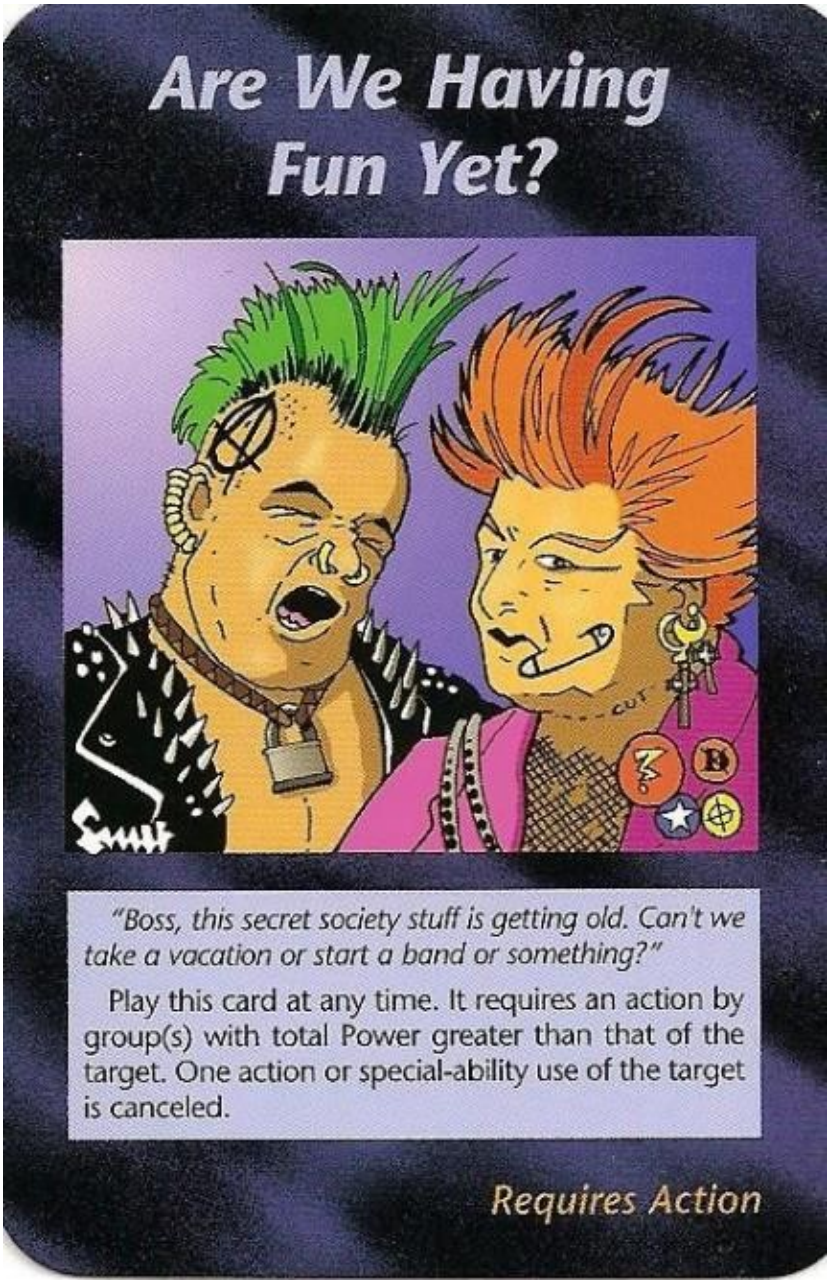

क्या हम अभी भी मज़े कर रहे हैं? विवरण: बॉस, ये गुप्त समाज वाली बात पुरानी हो रही है। क्या हम छुट्टी पर जा सकते हैं, कोई बैंड बना सकते हैं, या कुछ और? यह कार्ड दर्शाता है कि कैसे इल्यूमिनाती मनोरंजन उद्योग पर कब्ज़ा करके जनता को अपने वश में कर लेते हैं। इसका एक स्पष्ट उदाहरण ट्रैप और रेगेटन संगीत में देखा जा सकता है, जहाँ कलाकार लगातार इल्यूमिनाती का ज़िक्र करते हैं।
158

"सूख कर किनारे कर दिए गए।" यह पत्र वर्तमान व्यवस्था को संदर्भित करता है, जिसमें हम अपने जीवन का अधिकांश भाग अध्ययन में व्यतीत करते हैं और फिर लगभग शेष जीवन काम में ही व्यतीत करते हैं; "सूख कर दिए गए" का यही अर्थ है। जब लोग व्यवस्था के लिए उपयोगी नहीं रह जाते, तो वे सेवानिवृत्त हो जाते हैं, अर्थात् उन्हें किनारे कर दिया जाता है।
159

Necronomicón
"Viejo libro horripilante. Pensaba que solo era un cuento, pero es real... ¡NO! ¡Me ha tocado!"
Vincula esta carta a un Grupo Violento o Mágico. La Fuerza de ese grupo se dobla, pero siempre que saque un 11 o 12 en cualquier acción, éste se destruye. El Necromomicón no se destruye, sólo se desvincula... ¡El grupo destruido cuenta para tus condiciones de victoria sólo si eres el Sirviente de Cthulhu!
Artefacto Mágico Único

[illegible]: [illegible]... [illegible]! [illegible]
[illegible]
[illegible]

तो, इसके शीर्षक का अर्थ है "मृतकों के नियम का चित्र"। इसे अस्तित्व में मौजूद सबसे रहस्यमय किताबों में से एक माना जाता है।
160

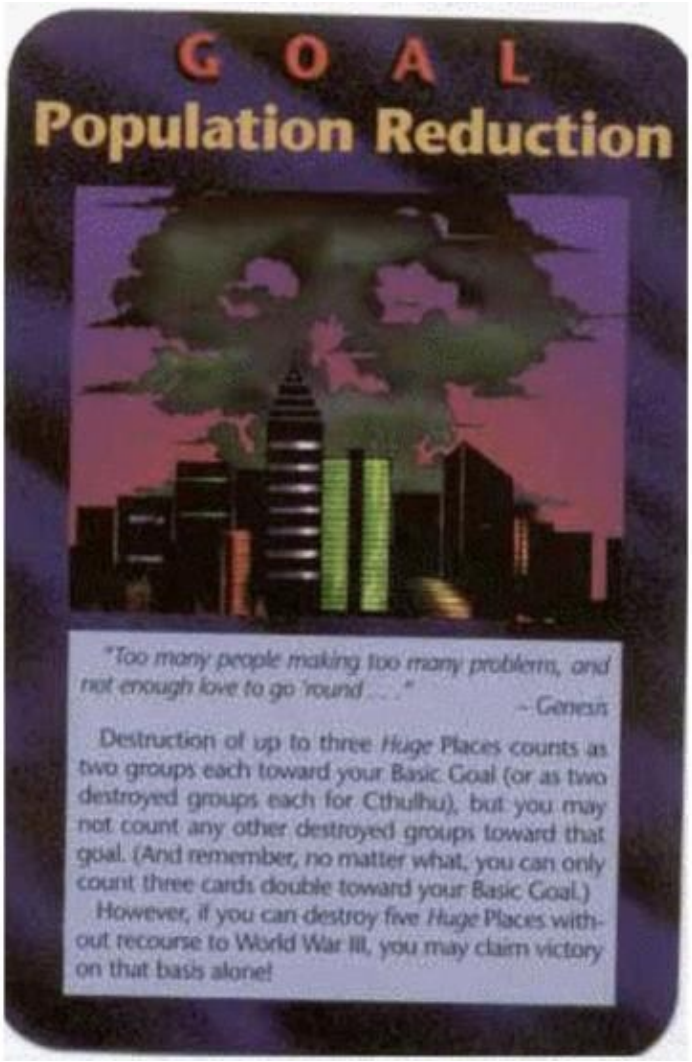

“जनसंख्या में कमी।” विवरण: बहुत अधिक लोग बहुत सारी समस्याएं पैदा कर रहे हैं और उन्हें देने के लिए पर्याप्त प्यार नहीं है… यह कार्ड अभिजात वर्ग के मुख्य उद्देश्यों में से एक को दर्शाता है: विश्व की जनसंख्या को कम करना। वे प्रयोगशालाओं में बनाई गई बीमारियों, गर्भपात समर्थक रैलियों को वित्तपोषण

[illegible]

161

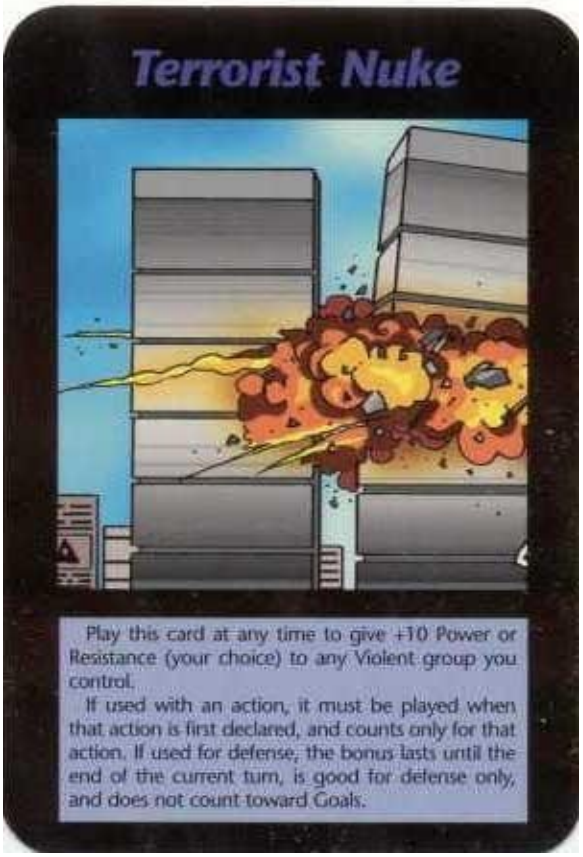
Terrorist Nuke
Play this card at any time to give +10 Power or Resistance (your choice) to any Violent group you control.
If used with an action, it must be played when that action is first declared, and counts only for that action. If used for defense, the bonus lasts until the end of the current turn, is good for defense only, and does not count toward Goals.

“आतंकवादी परमाणु हथियार”।
क्या यह 11 सितंबर, 2001 को ट्विन टावर्स पर हुए हमलों की भविष्यवाणी थी? या यह सब पहले से सुनियोजित था? याद रखें कि ये कार्ड 1994 में बनाए गए थे। ध्यान दें कि नाम में "न्यूक" शब्द शामिल है, जिसका अर्थ परमाणु बम है, जो उन लोगों के दावे को बल देता है जो मानते हैं कि ट्विन टावर्स किसी आतंकवादी विमान के टकराने से नहीं बल्कि नियंत्रित विध्वंस के कारण ढह गए थे। 162

Place
Pentagon
Each Corporate group directly controlled by the Pentagon lets you draw one extra Plot card each turn.
Straight, Violent, Government

11 □□□□□□ 2001 □□ □□□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□?
163

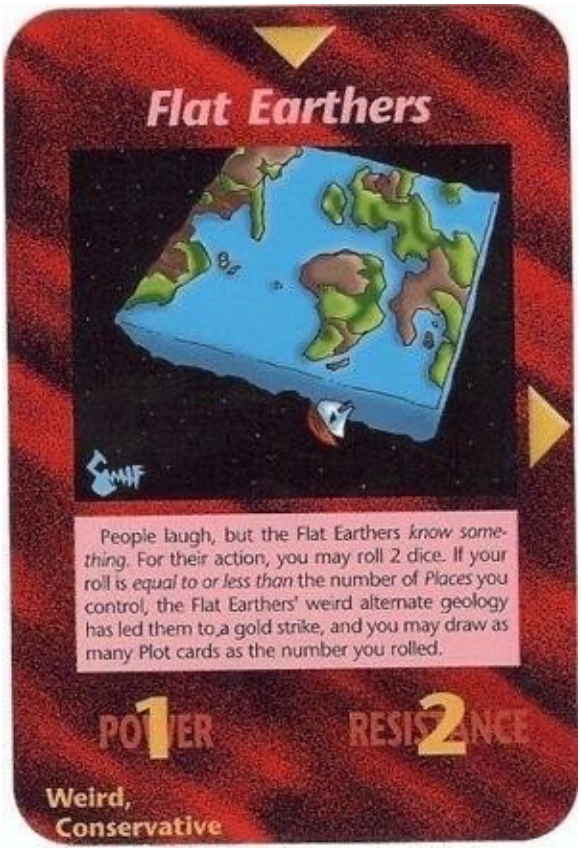
Flat Earthers
People laugh, but the Flat Earthers know something. For their action, you may roll 2 dice. If your roll is equal to or less than the number of Places you control, the Flat Earthers' weird alternate geology has led them to a gold strike, and you may draw as many Plot cards as the number you rolled.
POWER 1
RESISTANCE 2
Weird, Conservative

[illegible]

[illegible]

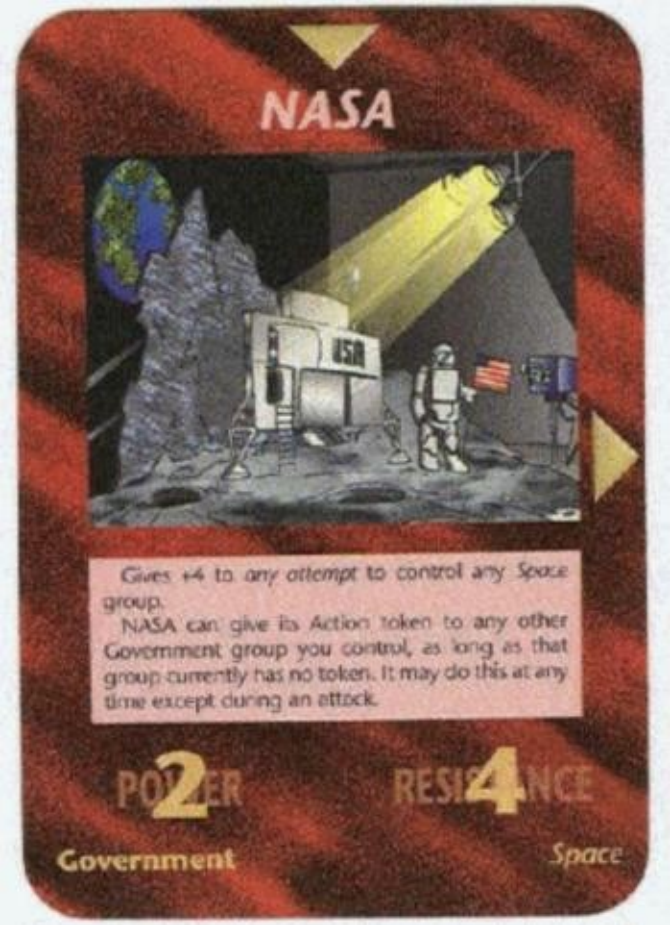
NASA
Gives +4 to *any attempt* to control any *Space* group.
NASA can give its Action token to any other Government group you control, as long as that group currently has no token. It may do this at any time except during an attack.
2
4
Government
Space

Rewriting History
Any one alignment of any destroyed group may be retroactively added, removed, or reversed. This can affect any Goal which involves destroying a certain number of groups of some alignment!
Play this card at any time. It requires an action by your Illuminati, or actions by Media groups with a total Power of at least 8.
Requires Media or Illuminati Action

[illegible]?

[illegible]

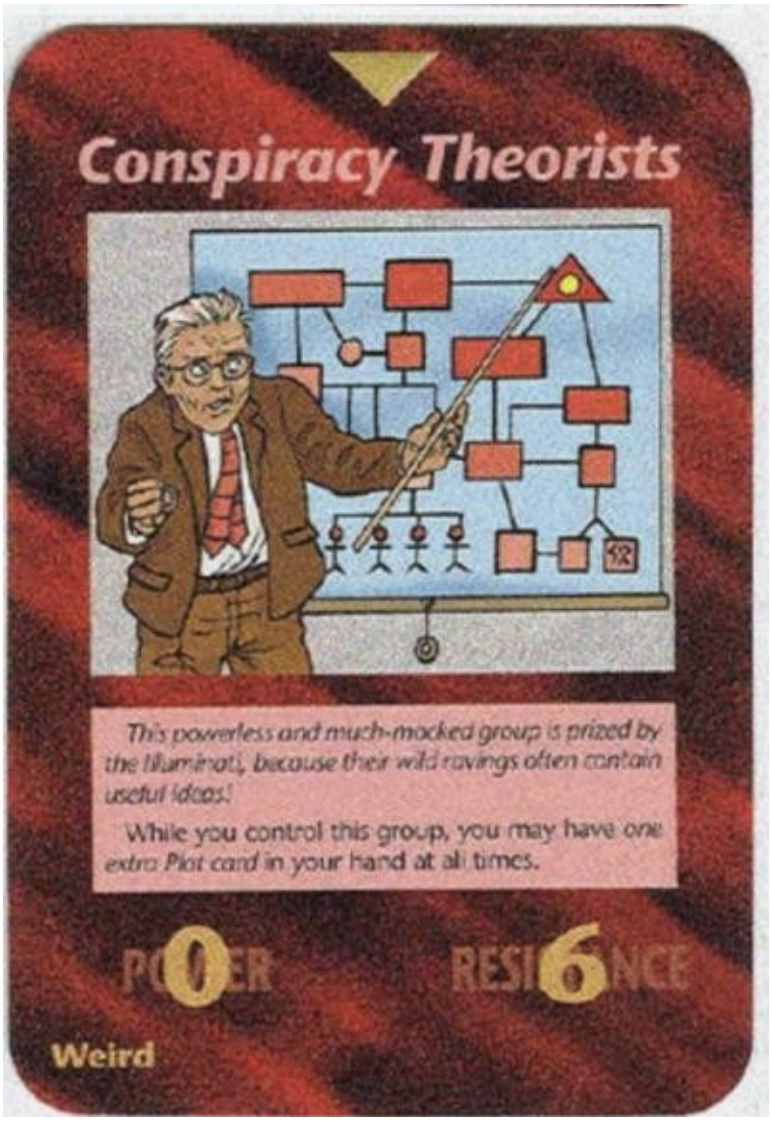
Conspiracy Theorists
This powerless and much-mocked group is prized by the Illuminati, because their wild ravings often contain useful ideas!
While you control this group, you may have one extra Plot card in your hand at all times.
POWER 0
RESILIENCE 6
Weird

[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible]

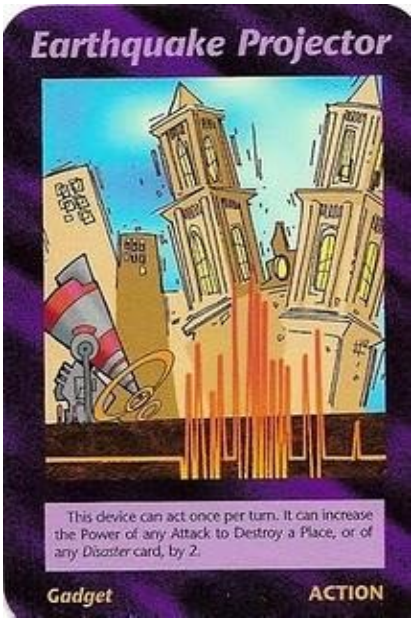
Earthquake Projector
This device can act once per turn. It can increase the Power of any Attack to Destroy a Place, or of any Disaster card, by 2.
Gadget
ACTION

[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

Supreme Court

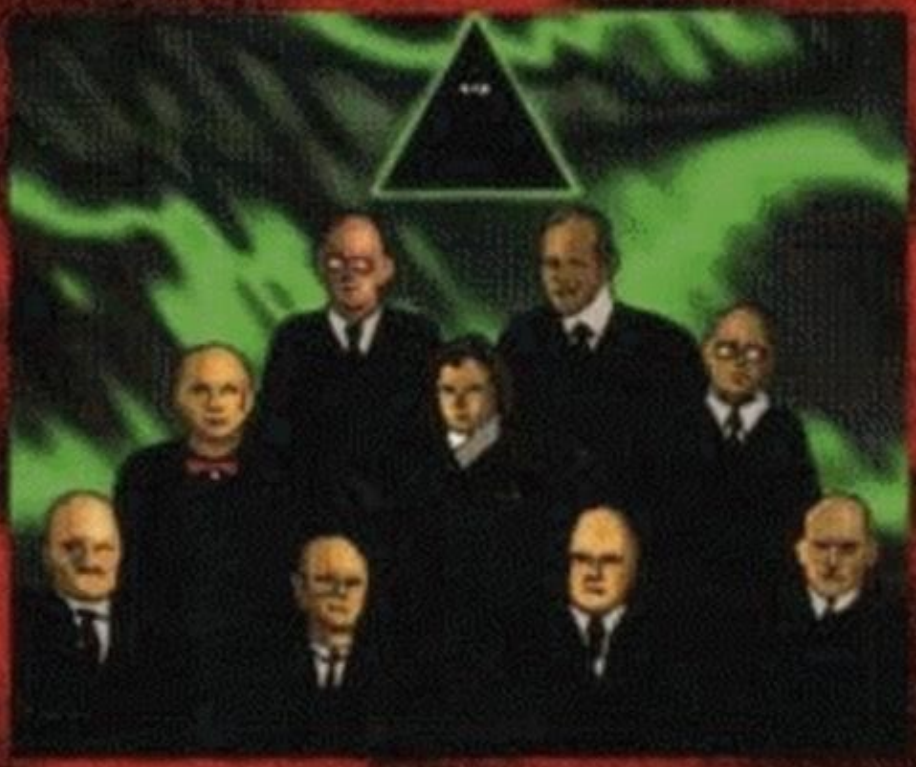

By using its action, the Supreme Court can cancel one action of any other Government group. (Yes, this includes Government groups outside the U.S. Don't ask. You don't want to know.)

3/3 **6**

Peaceful, Government

सर्वोच्च न्यायालय। विवरण: "सर्वोच्च न्यायालय अपने अधिकार का प्रयोग करके किसी भी अन्य सरकारी समूह द्वारा की गई कार्रवाई को रद्द कर सकता है। (हाँ, इसमें अमेरिका के बाहर के सरकारी समूह भी शामिल हैं... इसके बारे में मत पूछिए।)"
आप जानना नहीं चाहेंगे।
168

अच्छा विचार है, अब यह मेरा है। फेसबुक व्यक्तिगत जानकारी संग्रहीत करने के लिए एक आदर्श "विचार" हो सकता है: फोन नंबर, फोटो, नक्शे, पता, काम, दोस्त और यहां तक कि व्यक्तिगत पसंद भी। जब मार्क ज़करबर्ग को अमेरिकी कांग्रेस द्वारा तलब किया गया (डेटा गोपनीयता घोटाले के कारण, जो तब सामने आया जब यह खुलासा

हुआ कि कैम्ब्रिज एनालिटिका (जिसने डोनाल्ड ट्रम्प के अभियान के लिए काम किया था) ने 87 मिलियन फेसबुक उपयोगकर्ताओं का डेटा गलत तरीके से प्राप्त किया था), तो मार्क के अजीब व्यवहार के बारे में कई सिद्धांत सामने आए। कई लोगों ने कहा कि वह एक “रोबोट” और अगर आप वीडियो देखें, तो यह वास्तव में 169 जैसा दिखता है।

Place

Moonbase

Moonbase is not affected by any *Disaster* cards except Earthquake and Meteor. Moonbase gives a +4 on *any attempt* to control or destroy any *Space* group. If a Personality is linked to Moonbase, any *Assassination* attempt against that Personality is at -6. However, if Moonbase is destroyed, all Personalities there are killed.

POWER 3 RESILIENCE 6

Space, Science, Computer

[illegible]

[illegible]

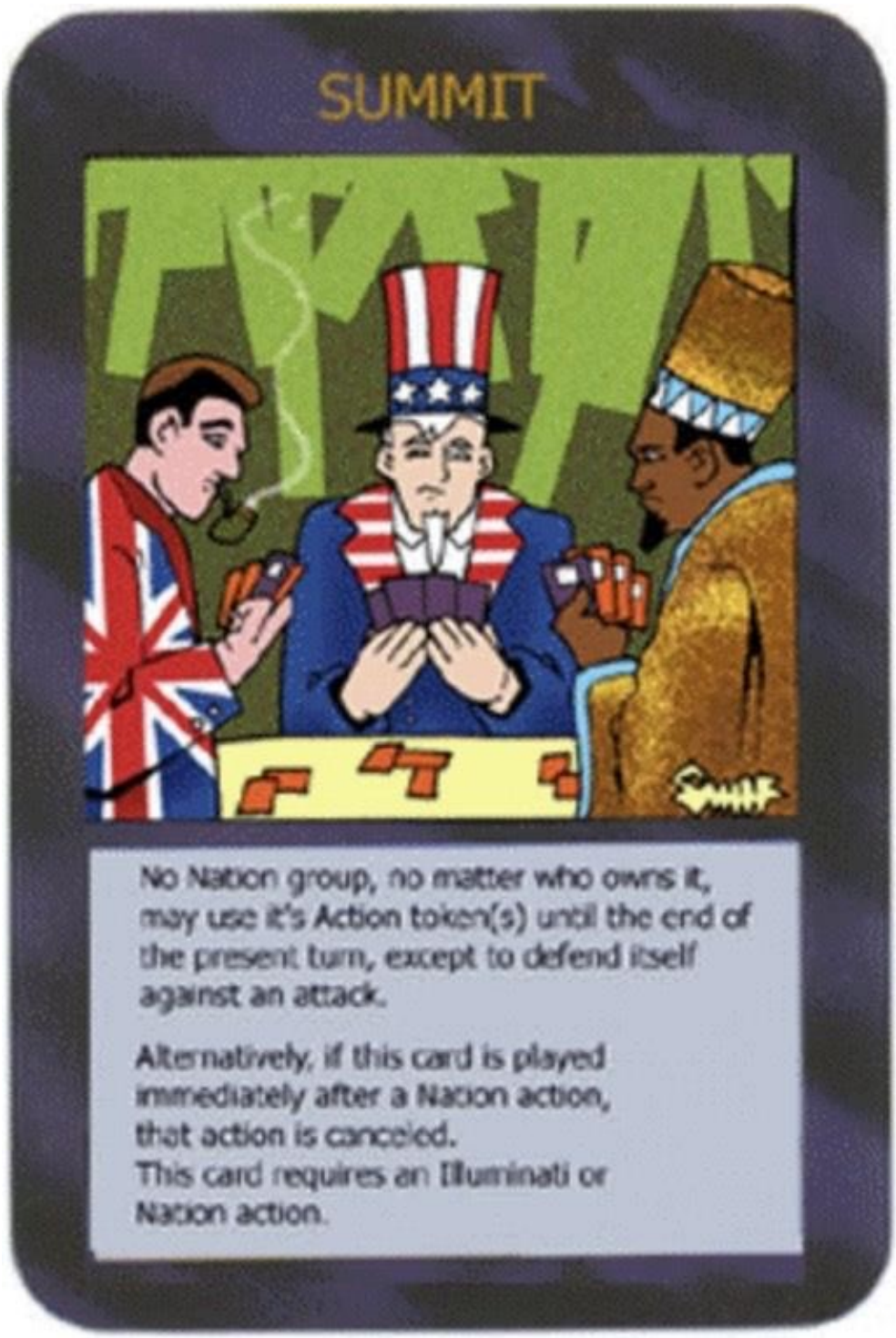
SUMMIT
No Nation group, no matter who owns it, may use it's Action token(s) until the end of the present turn, except to defend itself against an attack.
Alternatively, if this card is played immediately after a Nation action, that action is canceled.
This card requires an Illuminati or Nation action.

SUMMIT/CUSIP/PICE. □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□?

इन सब बातों का निष्कर्ष निकालने के लिए, और यूँ कहें कि
"आग में घी डालना" - मैं आपको एक पूर्व डच बैंकर और अंतरराष्ट्रीय ब्रोकर के सटीक शब्दों के साथ छोड़ता हूँ, जिन्होंने 5 वर्षों तक काम किया।
वैश्विक वित्तीय अभिजात वर्ग के शीर्ष स्तर पर वर्षों का अनुभव:
"हर कोई मानता है कि दुनिया में अच्छे लोग और बुरे लोग होते हैं, लेकिन यह सिर्फ एक खेल है; उच्चतम स्तर पर हर कोई मिलकर काम करता है।"
171

“अधिकांश लोग मानते हैं कि वे जनता की सेवा और सुरक्षा के लिए हैं, लेकिन असल में वे आपराधिक संगठन हैं; वास्तव में, पूरी व्यवस्था ही आपराधिक है। हम युद्धों को भड़काने और उन्हें वित्तपोषित करने की बात कर रहे हैं, मूल रूप से इस दुनिया में दुख और कई संघर्षों को जन्म देने की बात कर रहे हैं।”
"दुनिया में हम जो कुछ भी जानते हैं, वह महज एक भ्रम है जिस पर हम विश्वास करते हैं।"
"जब आप इन मंडलों में इतनी गहराई से उतरते हैं, तो आप जीवन भर के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर कर देते हैं कि आप कभी भी कंपनियों, संगठनों और लोगों के नाम प्रकट नहीं करेंगे... मुझे लगता है कि यही कारण है कि मैं अभी भी जीवित हूं।"
“संक्षेप में कहें तो, इनमें से अधिकांश लोग एक ऐसे धर्म का पालन करते थे जो बहुत लोकप्रिय नहीं था; कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और कई अन्य धर्मों के अनुयायी थे। इनमें से अधिकांश लोग लूसिफेरियन थे (...) वे लूसिफर नामक किसी निराकार चीज़ की पूजा करते थे।”

172

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted],

Fuentes

• http://www.stargate-chronicles.com/site/
•
http://www.bibliotecapleyades.net/luna/luna_apollomissions02.ht
m

• http://www.hq.nasa.gov
• http://www.ufocasebook.com/moonstructures.html
• http://www.inquisitr.com/1805249/large-classic-ufo-orbiting-earth-spotted-in-nasa-1969-apollo-10-mission-photo/
• http://www.npr.org/templates/story/story.ph? storyId=106637066
• http://projectcamelotportal.com
• लांज़ा, आर. और बर्मन, बी. (2012), बायोसेन्ट्रिज़्म: जीवन और चेतना ब्रह्मांड की प्रकृति को समझने की कुंजी के रूप में। सिरियो पब्लिशिंग हाउस।
• परनिया, एस. वाई कोल्स. (2014). पुनर्जीवन के दौरान जागरूकता. एक संभावित अध्ययन.
पुनर्जीवन, 85 (12); 1799-1805. एल्सेवियर.
• पेनरोस, आर और हैमेरोफ, एस. (2011).
ब्रह्मांड में चेतना: 174

न्यूरोसाइंस, क्वांटम स्पेस-टाइम ज्योमेट्री और ऑर्च ओआर थ्योरी। जर्नल ऑफ कॉस्मोलॉजी, 14.
• पुनर्जन्म का संकेत देने वाले बीस मामले - इयान स्टीवेन्सन
• पिरामिडों का रहस्योद्घाटन - पी. पूयार्ड
/ जे. ग्रिमॉल्ट (मूल स्पेनिश संस्करण) – यूट्यूब पर वृत्तचित्र
• https://astroaficion.com/
• https://es.gizmodo.com/
• चेंग एस, वर्निंग एम, सडेनडॉर्फ टी. मानसिक समय यात्रा में स्मृति चिह्नों और परिदृश्य निर्माण को अलग करना। न्यूरोसाइंस और व्यवहार समीक्षा (2016)। डीओआई: 10.1016/j.neubiorev.2015.11.011.

• https://www.portalastronomico.com/
• एंड्रयू ज़िम्मरमैन जोन्स: क्या समय का अस्तित्व है? | TED टॉक
• पुस्तक “गाइटन फिजियोलॉजी”
• https://www.unav.edu/web/ciencia-razon-y-fe/el-origen-del-universo

• https://soymatematicas.com/el-numero-de-oro/
175

• https://www.neoteo.com/la-sucesion-de-fibonacci-en-la-naturaleza/
• http://www.librosmaravillosos.com/elsecreto deluniverso/index.html
• कार्ल सेगन -- ब्रह्मांड।
• https://cuentos-cuanticos.com/
• https://naukas.com/
• यूट्यूब चैनल: इंस्टीट्यूट ऑफ थ्योरेटिकल फिजिक्स (IFT)
• स्टीवन एस. गुबसर द्वारा लिखित "द लिटिल बुक ऑफ स्ट्रिंग थ्योरी"
• https://www.formarse.com.ar/sitio/2018/08/1
3/पहले आयाम से लेकर दसवें आयाम तक को समझना/
• यूट्यूब पर चेतना के 7 आयाम, चैनल: रिकार्ड बारुफेट
• पेरेज़ जे.आई. (2017) कोई पुरानी प्रजातियाँ नहीं हैं, न ही भाषाएँ हैं। अनुमान।
देइया.कॉम
http://blogs.deia.com/conjeturas/2017/08/02
यहां न तो कोई पुरानी प्रजाति है और न ही कोई पुरानी भाषा।
• स्मिथ, सीयू (2010) प्राचीन काल में त्रिगुण मस्तिष्क: प्लेटो, अरस्तू, एरासिस्ट्रेटस। जे हिस्ट न्यूरोसाइंस 19 (1): 1–14।
176

• http://www.kheper.net/topics/intelligence/M
acLean.htm
• विकास में त्रिगुणीय मस्तिष्क (1990)
• डेविड वॉन इके – “मैट्रिक्स के बच्चे”
• https://www.misterioyconspirecion.com/rept iliano-donde-vienen/
• मानव जातियों की उत्पत्ति - सृष्टि 3(3):5–10, अगस्त 1980
• https://www.patreon.com/Astronomiaweb
• पुस्तक: स्पेंसर वेल्स द्वारा लिखित अवर एंसेस्टर्स (आरबीए)।
• https://www.nationalgeographic.com.es/
• प्रजातियों की उत्पत्ति - चार्ल्स डार्विन
• वृत्तचित्र: ट्रैकर्स स्पेशल: खोई हुई सभ्यताएँ
• वृत्तचित्र: दुनिया को कौन नियंत्रित करता है?
नई वैश्विक व्यवस्था
• https://www.finanzas4dummies.com/la-piramide-del-poder-seguimos-el-dinero-para-saber-quien-controla-el-mundo/
• डैनियल एस्टुलिन - “क्लब बिल्डरबर्ग”
• जिम टकर – “द बिल्डरबर्ग क्लब डायरी”
177

9/11 और ट्विन टावर्स के बारे में हम जो जानते हैं, वह गलत हो सकता है: वृत्तचित्र
• इलुमिनाती (अध्ययन और
रॉबर्ट हॉवेल्स द्वारा लिखित दस्तावेज़
• https://www.bilderbergmeetings.org/
• द क्लब ऑफ द इमॉर्टल्स – डैनियल एस्टुलिन द्वारा लिखित पुस्तक
• पूर्व बैंकर रोनाल्ड बर्नार्ड ने लुसिफेरियन इलुमिनाती अभिजात वर्ग का पर्दाफाश किया (यूट्यूब पर उपशीर्षक सहित साक्षात्कार)

178

***** □□□□□□ *****

sjeet